◆ अक्टूबर, 2019 ◆ मूल्य: 35/-

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से अनुप्राणित

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

दीपावली पर विशेष

अभ्युदय वात्सल्यम्

कर्मयोगी

शैलेश हरिभक्ति
चेयरमैन, देसाई हरिभक्ति ग्रुप

दिनेश कुमार खारा
एमडी, एसबीआई

आइए, जानें ! अपने कर्म प्रकाश से भारतीय उद्योग जगत का पथ आलोकित करने वाले रत्नों के बारे में...

अशनी बियानी
एमडी, फ्यूचर कंज्यूमर लिमिटेड

डॉ. हुजैफा खोराकीवाला
सीईओ,वॉक्हार्ट फाउंडेशन

विवेक गंभीर
एमडी एवं सीईओ
गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड

प्रशांत कारुलकर
चेयरमैन, कारुलकर प्रतिष्ठान

प्रशांत शर्मा
चेयरमैन, जीएचपी ग्रुप

डॉ. तुषार देवरस
सीएमडी, एस्ट्रूट एकेडमी

अरुण शर्मा
एमडी, एल. आर. एक्टिव प्रा. लि.

www.avmagazine.co.in

LR® active
अटूट बंधन स्नेह का

COMPLETE FAMILY SHOP

OPENING SOON

FRANCHISE OPPORTUNITIES

IN **FMCG** INDUSTRY

ALL OVER
INDIA

Awards

POWERBRANDS™ RISING STARS 2012-13

ASIA'S MOST PROMISING BRAND

- ★ AREA MINIMUM **2000 SQ. FT.**
- ★ LOW INVESTMENT **HIGH RETURNS**
- ★ INVESTMENT STARTING AT Rs. **5 LAC ONLY**

9324956748
☎ 022-248898244 / 45
✉ info@lractiveworld.com

A Venture By
LR Active Private Limited

अनुक्रमणिका

04 — सम्पादकीय: परोपकार ही श्रेष्ठ धर्म है.....
05 — उद्योग जगत: भारतीय औद्योगिक जगत के सूर्य.....
14 — उद्योग जगत: राष्ट्रभक्त, उदारमना एवं कलाप्रेमी सर रतन टाटा
20 — उद्योग जगत: दूरदर्शी, दृढ़ निश्चयी ,विनम्र .....पद्म विभूषण रतन टाटा
26 — उद्योग जगत: महान दूरद्रष्टा एवं कर्मयोगी स्व० श्री धीरूभाई अम्बानी
34 — उद्योग जगत : अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक जगत के महारथी श्री मुकेश अम्बानी
44 — उद्योग जगत: भारतीय उद्योग जगत के गौरव कुमार मंगलम बिड़ला
50 — उद्योग जगत: आदित्य बिड़ला समूह के आधार स्तम्भ
55 — उद्योग जगत: महान राष्ट्रभक्त और कर्मयोगी स्व.आर्देशिर गोदरेज
66 — अर्थ जगत: देश के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं सीए. शैलेश हरिभक्ति
68 — बैंकिंग जगत/ साक्षात्कार : बैंकिंग जगत के उत्कृष्ट ..... दिनेश कुमार खारा
71 — उद्योग जगत/ साक्षात्कार: फ्यूचर कन्ज्यूमर ने सदैव..... - अशनी बियानी
74 — उद्योग जगत : अद्भुत व्यक्तित्व के स्वामी डॉ. हुजैफा खोराकीवाला
75 — उद्योग जगत : एफएमसीजी क्षेत्र की दिग्गज कंपनी गोदरेज कंज्यूमर .....
77 — समाज सेवा: समाजसेवी एवं युवा उद्योगपति प्रशांत कारुलकर
80 — निर्माण उद्योग: बहुआयामी सेवाभावी व्यक्तित्व प्रशांत शर्मा
83 — करियर काउंसलिंग: एस्ट्यूट एकेडमी और डॉ. तुषार देवरस
88 — उद्योग जगत/ साक्षात्कार : व्यावसायिक उत्कृष्टता के प्रबल पक्षधर डॉ. अरुण शर्मा
91 — निर्माण उद्योग : कठिन परिश्रम और परोपकार के प्रतीक उमेश गाँधी
92 — इंश्योरेंस : अध्यक्ष का सन्देश
94 — बैंकिंग जगत/ साक्षात्कार : ग्राहकों के लिए वेल्थ क्रिएट..... - अश्वनी भाटिया

दूरदर्शी, दृढ़ निश्चयी, विनम्र एवं परोपकारी व्यक्तित्व के स्वामी, पद्म विभूषण रतन टाटा

अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक जगत के महारथी श्री मुकेश अम्बानी

भारतीय उद्योग जगत के गौरव कुमार मंगलम बिड़ला

भारत के गौरव पद्मभूषण आदि गोदरेज

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से अनुप्राणित

अभ्युदय वात्सल्यम्

वर्ष-12 अंक-03 अक्टूबर, 2019 मूल्य- 35/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

संरक्षक
श्री कृपाशंकर सिंह
पूर्व गृह राज्यमंत्री, महाराष्ट्र

संस्थापक सम्पादक
श्री कृपाशंकर तिवारी

प्रधान सम्पादक : आलोक रंजन तिवारी प्रबन्ध सम्पादक : शिवा तिवारी

विज्ञापन प्रबंधक - संजय सिंह
ग्राफिक डिजाइनर - अनमोल शुक्ल
छायाचित्र - अनमोल बैसने

कृपा प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृपाशंकर तिवारी द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नम्बर 13, रवि इंडस्ट्रियल प्रेमायसेस, महाकाली केव्स रोड, अन्धेरी (पूर्व), मुंबई - 400093 से मुद्रित एवं आर - 2/608, आर.एन.ए. प्लाजा, एमएमआरडीए कॉलोनी, राम मंदिर रोड, गोरेगांव (प.), मुंबई - 400104 से प्रकाशित

सम्पादक : आलोक रंजन तिवारी
पंजीकृत कार्यालय: आर - 2/608, आर.एन.ए. प्लाजा, एमएमआरडीए कॉलोनी, राम मंदिर रोड, गोरेगांव (प.), मुंबई - 400104
दूरभाष: 022 -26771428 / 9967718221 / 7800611428
ई-मेल: abhyudayvatsalyam@rediffmail.com
वेबसाइट : www.avmagazine.in

पत्राचार कार्यालय: आर - 2/608, आर. एन.ए. प्लाजा, एमएमआरडीए कॉलोनी, राम मंदिर रोड, गोरेगांव (प.), मुंबई - 400104.

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रदर्शित समस्त पद अवैतनिक हैं। पत्रिका से संबंधित किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र मुंबई होगा।

परोपकार ही श्रेष्ठ धर्म है.....

प्रकाश के महापर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ!

आलोक रंजन तिवारी

मनसा-वाचा-कर्मणा मानवता को समर्पित मानव जीवन स्वयं की परम शांति का माध्यम हो सकता है, विशाल मानव समाज के लिए प्रेरक और अनुकरणीय हो सकता है। चेतना सम्पन्न मानव मात्र से ही अपेक्षित है कि वह मानव के आभूषण सद्गुणों से स्वयं को सुसज्जित कर संसार में मानवता को गौरवान्वित करे, महिमा मण्डित करे। प्रेम, दया, क्षमा, त्याग, न्याय, धर्म, उदारता, परोपकार, सेवा, विनम्रता, सहजता, सरलता आदि मानवीय सद्गुण ही मानव के सच्चे आभूषण हैं, गहने हैं। यदि मानवीय गुणों से सुसम्पन्न मानव समाज का स्वरूप सुस्थापित हो जाय तो जिसे हम राम राज्य कहते हैं वह राम-राज्य स्थापित हो सकता है।

यह ध्रुव सत्य है कि मानवीय गुणों से सुसम्पन्न व्यक्ति को ही सच्चे अर्थों में मानव कहा जा सकता है। यदि उपरोक्त मानवीय गुण हम में नहीं हैं तो हम मानव होते हुए भी सच्चे अर्थों में मानव नहीं हैं। मानव मात्र में मानवता की उपस्थिति ही उसे मानव बनाती है, महामानव बनाती है।

हमारे पास संसार की कोई भी वस्तु (स्थिति, अवस्था, ज्ञान, विवेक, धर्म, द्रव्य आदि) यदि हमारी आवश्यकता से अधिक है तो उसमें संसार के जरूरतमंद प्रत्येक व्यक्ति का, प्राणी का हिस्सा है और हमारा कर्तव्य भावना के साथ उसका यथोचित वितरण ही न्यायकारी है, कल्याणकारी है। उदाहरण स्वरूप हम सुस्वादिष्ट व्यंजनों का आश्वादन लें किन्तु

यदि कोई भूखा, बीमार, घायल है तो उसकी भी मदद हमें करनी चाहिए। यही मानवता है, यही हमारा धर्म है। दुनिया में गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, स्वास्थगत समस्याएं एवं अशांति को दूर करने में हमें अपना मानवोचित गरिमानुरूप कर्तव्य निभाना चाहिए।

जो गरीबों की सहायता करे, वही अमीर है, जो दीन दु:खियों की सेवा करे वही श्रेष्ठ मानव है, जो निर्बलों की सहायता करे वही बलवान है और जो अज्ञानियों में ज्ञान का प्रकाश करे वही ज्ञानी है। विश्व परिवार के सभी सदस्यों का परम दायित्व है कि वे विश्व हित में अपने वे सभी कर्त्तव्य निभायें जो हम अपने निजी परिवार के प्रति निभाते हैं- उनकी सेवा के लिए, खुशहाली के लिए, शांति के लिए।

आनन्द, हर्षोल्लास एवं दीपोत्सव के पावन-पर्व दीपावली के शुभ अवसर पर चराचर जगत के मंगल भविष्य की शुभ कामनाओं सहित- एक महान कवि की- जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना- अंधेरा.....। मेरी भी यही कामना है। सभी को दीपोत्सवी की हार्दिक शुभकामनाएं!

@alokrt

◆◆◆

भारतीय औद्योगिक जगत के सूर्य

नौशेरवाँ जी टाटा

टाटा घराने की ऐतिहासिक पारिवारिक पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर समझा जाता है कि पारसी जाति सैकड़ों वर्ष पूर्व पर्शिया में निवास करती थी। पर्शिया वर्तमान में ईरान में है। वहीं से पारसी जाति दुनिया के अनेक देशों में फैली। सदियों पूर्व भारत में भी पारसियों का पदार्पण हुआ। विश्व के अनेक देशों में इनके फैलाव के बाद भी इनकी संख्या बहुत काम है। पारसी अग्नि की पूजा करते हैं, परन्तु सूर्य, चन्द्रमा तथा वायु की भी पूजा करते हैं। प्राचीन काल में पारसी सम्प्रदाय तीरंदाजी, घुड़सवारी तथा चरित्र निर्माण को अधिक अहमियत देते थे। बदलते दौर में अनेक क्षेत्रों में नवीनता आई। तथापि, जातीय शुद्धता तथा चरित्र की पवित्रता के प्रति ये आज भी सजग रहते हैं। ये लोग प्राय: अपने सम्प्रदाय में ही विवाह सम्बन्ध स्थापित करते हैं। मानसिक सुदृढ़ता एवं आचारण की गरिमा इनमें कूट – कूट कर भरी होती है। भारतीय समाज में पारसियों का बहुत आदर – सम्मान है। यहाँ उल्लेखनीय है कि पारसियों ने न केवल उद्योग जगत बल्कि राष्ट्रीय – सामाजिक गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

देश के आर्थिक विकास में पारसी समुदाय का योगदान भी अति महत्वपूर्ण है। परिश्रम एवं लगन के साथ कार्य को अंजाम देना इनकी चारित्रिक विशेषता है, राष्ट्रीय – अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पारसी समुदाय ने जो महत्वपूर्ण एवं सम्मान जनक मुकाम बनाया है वह हमारे लिए प्रेरक है, अनुकरणीय है।

गुजरात में एक कस्बाई क्षेत्र नवसारी है। जहाँ सदियों पूर्व पारसियों का एक जत्था आकर बस गया था। कहा जाता है कि कुछ समय तक यह इलाका पारसियों के प्रभाव में रहा। लेकिन, बाद में मुस्लिम आक्रान्ताओं ने इस इलाके को अपने प्रभाव क्षेत्र में ले लिया। ब्रिटिश शासन काल में ब्रिटिश संसद के सदस्य चुने जाने वाले दादाभाई नौरोजी नवसारी में ही पैदा हुए थे।

नौशेरवाँ जी टाटा का निवास स्थान भी नवसारी में ही था। यहाँ उल्लेखनीय है कि नौशेरवाँ जी टाटा, टाटा घराने के संस्थापक जमशेद जी टाटा के पिता थे। जमशेद जी टाटा की जन्मभूमि नवसारी ही थी। आपका निवास स्थान एक स्मारक के रूप में नवसारी में आज भी संरक्षित है। नौशेरवाँ जी टाटा पारसी सम्प्रदाय की उस साख से ताल्लुक रखते थे जो पौरोहित्य के कार्यों से जुड़ी हुई थी। बताया जाता है कि कई पीढ़ियों से इनके पूर्वज पौरोहित्य कार्य ही करते चले आ रहे थे। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है और इसी क्रम में पारसी सम्प्रदाय का टाटा परिवार भी कार्य – व्यवहार के स्तर पर परिवर्तन को प्राप्त हुआ। फलत:, नौशेवाँ जी टाटा परिवार के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सबसे पहले सदियों से चली आ रही परम्परा एवं मूल्यों के विरुद्ध जाकर कुछ नया करने का विचार बनाया और व्यापार को उन्होंने जीविकोपार्जन का साधन बनाने का फैसला किया।

उस समय नवसारी इलाका काफी पिछड़ेपन का शिकार था, इसलिए उन्होंने अपनी व्यावसायिक कर्मभूमि बम्बई को बनाया और वे नवसारी छोड़कर बम्बई आ गये।

बम्बई में उन्होंने व्यापार और बैंकिंग के जरिए अपने कार्य का श्री गणेश किया। उन्होंने नवसारी में रह रहे अपने इकलौते बेटे जमशेद जी को भी बम्बई बुला लिया ताकि वे भी व्यावसायिक परिवेश के अनुभव व कुशलता के साथ भविष्य को संवारने में सक्षम बन सकें। अनुभव के साथ ही उनकी सोच को एक नई दिशा मिली और उन्होंने तय किया कि अब उन्हें भावी पीड़ियों को इसी व्यावसायिक दिशा में अग्रसर करना है।

भारतीय उद्योग जगत के पितामह, कर्मयोगी जमशेदजी टाटा

भारतीय औद्योगिक जगत के युगपुरुष जमशेद नौशेरवाँ जी टाटा का जन्म 3 मार्च 1839 ई. को नवसारी में पारसी पुरोहितों के परिवार में हुआ था। टाटा परिवार पौरोहित्य कर्म से जुड़ा हुआ था। आपको भारतीय उद्योग जगत का जनक कहा जाता है। आपका बचपन नवसारी में ही व्यतीत हुआ। जब आपकी उम्र मात्र 13 वर्ष की थी, उसी समय आपके पिता ने बम्बई में निर्यात व्यवसाय शुरू किया। जमशेद जी 14 वर्ष की उम्र में बम्बई आए। पारसी सम्प्रदाय की स्थापित एवं मान्य परम्परा के अनुसार 16 वर्ष की अवस्था में आपका विवाह हीराबाई (10 वर्ष) के साथ हो गया। आपके पिता नौशेरवाँ जी ने उच्च शिक्षा प्रदान कराने हेतु 17 वर्ष की उम्र में आपका प्रवेश 'एलफिन्सटन कॉलेज' में कराया। कुछ ही वर्षों के पश्चात 'ग्रीन स्कॉलर' के रुप में आपकी कॉलेज की शिक्षा पूर्ण हो गयी। आप साहित्य एवं पुस्तकों के अतिशय प्रेमी थे।

आपकी शिक्षा सुसम्पन्न होने के पश्चात् पिता नौशेरवाँ जी

टाटा ने आपको व्यावसायिक कार्यों में शामिल कर लिया और व्यावसायिक बारीकियों से अवगत कराना आरंभ कर दिया।

पिता के भेजने पर आप 1859 ई. में एक व्यापारिक यात्रा पर हाँगकाँग गये। वहाँ पर आपने एक पारिवारिक फर्म की शाखा खोली। वहाँ आप 1863 तक रहे।

औद्योगिक क्षेत्र में बढ़ाए कदम

मात्र 21,000/- रुपये की पूँजी से आपने 1968 ई. में एक निजी व्यापारिक फर्म की शुरुवात की। उस समय जमशेद जी की उम्र मात्र 29 वर्ष थी। उस फर्म के माध्यम से आपने तथा आपके साथियों ने विदेशों से कुछ सैनिक साजो-सामान की आपूर्ति का ठेका हासिल किया। इस ठेके में लाभांश पर्याप्त था, जिससे उन्हें टेक्सटाईल्स के क्षेत्र में अपना व्यवसाय शुरू करने हेतु दिशा और स्थिति प्राप्त हुई। 1869 में आपने कुछ साथियों के साथ हिस्सेदारी में एक पुरानी तेल मिल खरीदी और उसे वस्त्र निर्माण हेतु कारखाने में तब्दील कर दिया। आपने इसके प्रबंधन की कमान खुद संभाली और कुछ ही वर्षों में उसे एक चालू कारखाने के स्वरूप में बदल दिया। उस कारखाने का नाम **एलेक्जेन्ड्रा कॉटन,** था जिसे बाद में उन्होंने लाभ पर एक वस्त्र व्यवसायी के हाथों बेंच दिया। 1872 में आप एक बार फिर इंग्लैण्ड गये।

इस यात्रा का उद्देश्य वहाँ के उद्योगों का अध्ययन और खासकर लंकाशायर स्थित वस्त्र व्यवसाय का अध्ययन था। 15 लाख रूपये की पूँजी से आपने **द सेंट्रल इण्डिया स्पिनिंग वीविंग एण्ड मैन्युफैक्चरिंग** कम्पनी शुरू की। इसमें आपके अलावा आपके मित्रों की भी पूँजी लगी हुई थी। 1877 में पहली जनवरी को क्वीन विक्टोरिया को भारत की रानी घोषित किये जाने पर नागपुर में एंपैरस मिल का श्री गणेश हुआ। नागपुर की सूत कपड़ा मिल ने आपके लिए एक प्रयोग शाला की भूमिका निभाई। यहाँ आपको इसकी हरेक बारीकियों पर ध्यान देने का अवसर मिला। उस समय की सबसे उन्नत अमेरिकी संयंत्र प्रस्थापित करके वस्त्र की गुणवत्ता में काफी सुधार सुनिश्चित किया गया। 1886 में उन्होंने पेंशन फण्ड तथा आगे चलकर 1895 में दुर्घटना क्षतिपूर्ति जैसी नवीन शुरूआतें की। इस प्रकार इन कदमों से वे अपने प्रतिद्वन्द्वियों से बहुत आगे निकल गये। आपने, जीवन में व्यावसायिक चुनौतियों एवं संघर्षों को सदैव सहर्ष स्वीकार किया। 1886 आपने एक बीमार मिल को खरीदकर उसे स्वस्थ स्वरूप देने की चुनौती को सफलतापूर्वक पूरा किया। उक्त मिल को स्वदेशी आन्दोलन की भावना के अनुसार **स्वदेशी कॉटन** मिल नाम दिया गया। यह कम्पनी मुख्यतया भारतीय शेयर होल्डर्स द्वारा समर्थन प्राप्त थी। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक इसमें अपने रूपये लगाए। परन्तु दो वर्ष बाद प्रतिकूल परिस्थितियाँ बनी और मिल का लाभांश भी नहीं घोषित हो पाया। कुछ कारणों तथा अफवाहों के कारण शेयर्स के मूल्य गिर गये। टाटा का यशस्वी नाम, उसकी प्रतिष्ठा दाँव पर लगी थी। ऐसे में जब बैंकों ने भी ऋण देने से इन्कार कर दिया तो कर्मयोगी जमशेद जी ने पारिवारिक ट्रस्ट एवं एंपैरस मिल के कुछ शेयरों की बिक्री कर पूँजी की व्यवस्था की तथा स्वदेशी कॉटन मिल में इकट्ठा की गयी सारी पूँजी लगा दी। इस कवायद का अपेक्षित प्रभाव पड़ा और शेयर्स के मूल्य बढ़ गये। अपने कर्मठ प्रयासों से कुछ ही वर्षों में आपने स्वदेशी कॉटन मिल को एक उत्तम श्रेणी की कॉटन मिल के रूप में स्थापित कर दिया।

जल्द ही स्वदेशी कॉटन मिल में बनने वाले कपड़ों का निर्यात जापान, कोरिया, चीन तथा महत्वपूर्ण देशों में होने लगा।

लौह एवं इस्पात उद्योग में बढ़ाए कदम

1901 में जमशेद जी ने अपने कदम भारतीय इस्पात उद्योग की तरफ बढ़ाए। यह उद्योग उस समय आरम्भिक अवस्था में था। उस समय इस उद्योग में बहुत ही कम उत्पादन होता था। इस कार्य हेतु जमशेद जी ने अंग्रेजी और अमेरिकी सर्वेक्षकों का सहयोग लिया। तकनीकी परामर्श तथा इस्पात निर्माण प्रक्रिया की सुव्यवस्थित जानकारी के लिए आपने यूरोपीय देशों तथा अमेरिका की यात्रा किया। आप व्यापक स्तर पर लौहशोधन का कार्य करना चाह रहे थे, इसलिए उक्त परियोजना पर आपने विपुल राशि का निवेश किया। आपकी यह महत्वाकांक्षी परियोजना मूर्तरूप लेने के पूर्व ही सन् 1904 में जर्मनी में इस कर्मयोगी की संसार से विदाई हो गयी, जमशेद जी ने अपनी देह त्याग दी, उनकी मृत्यु हो गयी। जमशेद जी की विरासत को संभालने हेतु उनके दो पुत्र क्रमशः दोराब जी तथा रतन और उनके चचेरे भाई आर. डी. टाटा मौजूद थे। अन्तिम दिनों में जमशेद जी ने चचेरे भाई आर. डी. टाटा, अपने पुत्रों तथा अपने निकट के सम्बधियों से अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहा था कि वे उनके द्वारा शुरू किये गये कामों को आगे बढ़ाएँ। यदि ऐसा न कर सकें तो कम से कम अब तक किये गये कार्यों को सुरक्षित रखें।

1907 में जमशेद जी के सपनों को मूर्तरूप दिया जा सका। कलकत्ता से 150 मील पश्चिम में साकची में टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी की स्थापना हुई। कम्पनी का तीव्र गति से विकास हुआ। 16 फरवरी, 1912 को खुशी के वातावरण में साकची प्लांट से पहले इस्पात पिंड का उत्पादन हुआ। सम्प्रति, यह देश की एक प्रमुख इस्पात कम्पनी के रूप में प्रतिष्ठित है।

देश की शान ताज महल होटल का निर्माण

दूरद्रष्टा, कर्मयोगी जमशेद जी टाटा ने भारत के सर्वोत्तम होटल ताजमहल का निर्माण किया। ताजमहल मुम्बई में स्थित है। ताजमहल के निर्माण में एक बड़ी घनराशि खर्च हुई। ताजमहल के निर्माण में उनका उद्देश्य था भारत में यात्रियों को आकर्षित करना तथा पर्यटन को बढ़ावा देना। अपनी विभिन्न यात्राओं के दौरान आपने स्वयं ताजमहल की साजसज्जा का सामान खरीदा था।

ताजमहल का उद्घाटन 1903 ई. में हुआ था। ताज अपने जमाने का पहला भवन था जो विद्युत से प्रकाशमान था। आज तो ताज की शान ही निराली है। उस समय भी ताजमहल में वे

सारी सुविधाएँ उपलब्ध थीं जो विश्व के जाने-माने होटलों में उपलब्ध थीं।

जमशेद जी के परोपकारी सद्कार्य

आप में जनसेवा और परोपकार की भावना तथा संस्कार कूट-कूट कर भरे हुए थे। जनकल्याण की भावना से ही आपने 1892 में जे. एन. ट्रस्ट की स्थापना की। आपने उच्च शिक्षा के लिए फंड का इंतजाम किया। आपने ट्रस्ट के माध्यम से 3 योग्य विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से विदेश भेजना शुरू किया। इस योजना के अन्तर्गत भारत के अनेक आरम्भिक इंजीनियर, सर्जन, फिजीशियन, बैरिष्टर तथा आई. सी. एस. अधिकारी लाभ प्राप्त किये।

सन् 1898 में अपने अपने चौदह भवन, एक बड़ी धनराशि और चार भौमिक सम्पत्तियाँ पोष्ट ग्रेजुएट इन्स्टीट्यूट फॉर साइंटफिक रिसर्च की स्थापना के लिए पेश की। हालांकि, ब्रिटिश गवर्नमेंट की हीला-हवाली की वजह से उनका यह सपना उनके जीवन काल में पूरा नहीं हो सका, लेकिन उनके निधन के पश्चात् उनके पुत्रों ने इसे पूर्ण किया।

इस प्रकार 1911 में बंगलौर में इस संस्थान की स्थापना हुई, जो टाटा, भारत सरकार तथा मैसूर सरकार का सम्मिलित सहकार था। आरम्भ में मात्र इसमें तीन बड़े विभाग जनरल एण्ड एम्प्लाइड कैमिस्ट्री, इलेक्ट्रो टेक्नोलोजी कैमेस्ट्री एण्ड आर्गेनिक कैमिस्ट्री थी। कालान्तर में इसमें अन्य नये विभाग जुड़ते गये।

इण्डियन इन्स्टीट्यूट, बंगलोर ने टाटा स्टील, जमशेदपुर की भांति ऐसे केन्द्र के रूप में कार्य किया कि जिससे बाद में अनेक अन्य शाखाओं-सेंट्रल फूड एण्ड टेक्नोलॉजिकल रिसर्च इन्स्टिटयूट, मैसूर, लाख रिसर्च इन्स्टीट्यूट, रांची, नेशनल एटोनॉटिकल लैबोरेटरी, बंगलोर का प्रादुर्भाव हुआ। इसके द्वारा अनेक अन्य संस्थानों की स्थापना एवं विकास का कार्य सम्पन्न हुआ।

दूरदर्शी एवं नवोन्मेषी व्यक्तित्व जमशेद जी

जमशेद जी को एक कर्मयोगी, दूरदर्शी एवं नवोन्मेषी व्यक्तित्व के रूप में सदैव स्मरण किया जाएगा। उन्होंने अपने व्यक्तित्व के उपरोक्त सद्गुणों का सदुपयोग न केवल अपने घराने के औद्योगिक विकास के लिए किया बल्कि राष्ट्र के विकास एवं उत्थान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नवीनता उनके जीवन की एक शैली बन गयी थी। बग्घी में रबर टायर का प्रयोग करने वाले वे पहले व्यक्ति थे। बंबई में वे पहले आटोमोबाइल चालक थे। आपने अपने जीवन में जरूरी कार्यों के लिए दिल खोलकर दान दिए। वे अत्यंत उदार और परोपकारी व्यक्तित्व के स्वामी थे। जमशेद जी का व्यक्तित्व उच्चतम मानवीय आदर्शों का परिचायक था। श्रमिकों की सुविधाओं एवं उनके कल्याण के लिए आपने नवीन व्यवस्थाएँ की और नये कायदे लागू किये जो उस समय किसी की कल्पना से भी परे था। दुनिया के तमाम देशों में इस तरह के सुधार दशकों बाद आए। भारत में उनके प्रति आज भी अत्यंत आदर व सम्मान का भाव है। देश उनके प्रति कृतज्ञता के भाव से भावित है। 1965 में भारत सरकार के डाक एवं तार विभाग द्वारा उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया। उन्हें प्रदत्त यह सम्मान देश में औद्योगिकीकरण के लिए उनके पुरुषार्थ के प्रति देश की कृतज्ञता का द्योतक है।

दूरदर्शी एवं कर्मवीर जमशेदजी टाटा को सादर नमन्।

GHP GROUP
vision to reality

Empowering a child. Sharpening the mind.

Watch your child climb the ladder of success from the very first step he takes towards building a strong future for himself through GHP Group. Dedicated to imparting education to every child, the group covers the entire journey of your child's education from nursery to graduation through its well established schools & colleges. Offering world class education; these institutions are well equipped to ensure your child's all round development.

ADMISSIONS OPEN FOR NEXT SESSION

SSC and ICSE Curriculum across PLAYSCHOOLS, SCHOOLS & COLLEGE at POWAI.

GOPAL SHARMA GROUP OF SCHOOLS

Call: 25700315 / 25700789 | E-mail : gsmspowai@gmail.com / gsispowai@gmail.com | www.gsischool.com | www.gsmsschool.com

GSMS
Gopal Sharma
Memorial School

PEHS
Powai English
High School

GSBB
Gopal Sharma
Blooming Buds Pre-School

BVBS
Bal Vishwa Bharati School
& Junior College

CSC
Chandrabhan Sharma College
Arts, Science & Commerce

GSIS
Gopal Sharma
International School

Gopal Sharma Group of Schools, Powai Vihar, Powai, Mumbai– 400 076

दूरदर्शी एवं कर्मवीर सर दोराबजी टाटा

जमशेद जी टाटा के दो पुत्र थे, क्रमश: दोराब जी टाटा और सर रतन टाटा। जमशेद जी के निधन के पश्चात् उनके बड़े पुत्र सर दोराब जी टाटा और छोटे पुत्र सर रतन जी टाटा ने उनकी विरासत को बखूबी संभाला तथा उसे नई बुलंदियों पर पहुँचाया। इस कार्य में जमशेद जी के चचेरे भाई रतन दादा भाई टाटा ने पूरा सहयोग दिया।

दोराब जी सन् 1859 में पैदा हुए। आपकी आरम्भिक शिक्षा बंबई के प्रोप्राइटरी:- हाईस्कूल में हुई। प्राथमिक शिक्षा के बाद कालेज की पढ़ाई के लिए आपको इंग्लैण्ड भेजा गया जहाँ 18 वर्ष की उम्र में आपने कैम्ब्रिज में गोनविले एण्ड कैअस कालेज में प्रवेश लिया। दोराब जी क्रिकेट और फुटबॉल के बहुत अच्छे खिलाड़ी थे। उन्होंने कैम्ब्रिज में पढ़ाई के दिनों में उक्त खेलों में अनेक पुरस्कार भी जीते। सन् 1879 में आप भारत वापस आ गये तथा जेवियर्स कालेज में दाखिला लिया।

दोराब जी ने शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् बाम्बे गजट में एक पत्रकार के रूप में अपने कार्य का शुभारम्भ किया। तीन-चार वर्ष बाद उन्होंने अपने पैतृत व्यवसाय में दिलचस्पी लेना शुरू किया। इस प्रकार आप 1884 में व्यवसाय में आ गये। को कॉटन डिवीजन में एडजस्ट किया गया। अपने पिता जमशेद जी की इच्छानुसार वे उच्चकोटि के विद्वान डॉ. एच. जे. भाभा से मिले, जहाँ वे अपनी पुत्री मेहर के साथ रुके हुए थे। दोराब जी की मुलाकात मेहर से भी हुई। कालान्तर में दोनों की यह मुलाकात विवाह में परिवर्तित हो गयी, दोनों जीवन साथी हो गये। यह विवाह 1897 में सम्पन्न हुआ, उस समय दोराब जी की उम्र 38 वर्ष तथा मेहर की उम्र वर्ष थी। टाटा परिवार के अपने सभी पूर्ववर्ती महानुभावों की तरह उनमें भी नेतृत्व करने तथा लक्ष्य प्राप्ति के प्रति अतीव गम्भीरता जैसे महान गुण मौजूद थे। दूरदर्शी तथा कर्मवीर दोराब जी ने अपने पिता जमशेद जी के सभी सपनों को पूरा कर एक श्रेष्ठ पुत्र और सुयोग्य उत्तराधिकारी होने का सुपरिचय दिया। अपने नजदीक के रिश्तेदार आर. डी. टाटा की सहायता से सबसे पहले आपने उन परियोजनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जो आपके पिता जमशेद जी ने शुरू की थी। इन परियोजनाओं में सबसे पहले था एक आधुनिक लौह एवं इस्पात उद्योग की स्थापना- जिसका सुपरिणाम है टाटा स्टील। अपने उद्योगों के लिए विद्युत आपूर्ति हेतु आपने ही टाटा पावर की स्थापना की। आज ये दोनों टाटा उद्योग समूह के महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली एवं प्रेरक था। वे किसी भी परियोजना को अत्यंत गम्भीरता में लेते थे तथा उनकी बारीकियों पर बहुत ध्यान देते थे। आपने कच्चे लौह की तलाश में लगे वैज्ञानिकों तथा खोजकर्ताओं के साथ खनिज क्षेत्रों की भी यात्राएँ की थी।

दोराब जी के कुशल नेतृत्व में टाटा उद्योग समूह को व्यापकता प्राप्त हुई। विविध क्षेत्रों में व्यावसायिक विस्तार हुआ। 1910 में इंग्लैण्ड के राजा द्वारा आपको ट हुड (सर) की उपाधि से अलंकृत किया गया। जैसा कि लिखा जा चुका है कि दोराब जी को खेलों से बेहद प्रेम था, कालेज के दिनों से ही वे खेल से जुड़े हुए थे। आपने भारत में खेलों के गुणवत्तापूर्ण सुधार हेतु प्रयास किये और ओलंपिक मूवमेंट शुरू किये। आप भारतीय ओलंपिक संघ के सम्मानित अध्यक्ष भी रहे। 1924 में आपने पेरिस ओलंपिक में प्रतिभागी भारतीय दल का सम्पूर्ण व्ययभार वहन किया था। आप अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक संघ के भी सदस्य रहे।

सर दोराब जी भारत के अनमोल रत्न थे, उनका व्यक्तित्व अत्यंत दूरदर्शी एवं शानदार था।

मानवता की प्रतिमूर्ति, दानशील मेहरबाई

सर दोराब जी की पत्नी मेहरबाई एक सहृदय, उदार एवं दूरदर्शी महिला थीं। देश के महिला आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, वे अग्रगणी रहीं। भारत की महिलाओं की शिक्षा एवं कल्याण हेतु आप हमेशा तत्पर रहीं। आप बॉम्बे प्रेसीडेन्सी वीमेंस कौंसिल एवं बाद में नेशनल कौंसिल ऑफ वीमेंस की संस्थापक सदस्यों में से एक थीं।

मेहरबाई ने परदा प्रथा, छूआछूत मिटाने तथा भारतीय महिलाओं को उच्च शिक्षा देने हेतु आंदोलन किए। इन सामाजिक और कल्याणकारी कार्यों के लिए आपके पति सर दोराब जी का सदैव समर्थन रहा। देश में लड़कियों की शिक्षा हेतु वे कितना संजीदा थीं, एक उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है। मेहरबाई ने लड़कियों की शिक्षा के सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में सर्वेक्षण के लिए इंग्लैण्ड से एक सर्वेक्षक बुलाया था। वह सर्वेक्षण एक वर्ष तक हुआ, बाद में वह पुस्तक के आकार में प्रकाशित हुआ।

वह सर्वेक्षण बहुत ही महत्वपूर्ण था और वह महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए काफी मददगार साबित हुआ और आगामी अनेक वर्षों तक महिलाओं की शिक्षा के लिए मार्गदर्शन का कार्य किया। अमेरिका के बॉटल क्रीक कालेज में उन्होंने एक बहुत ही प्रभावशाली एवं सारगार्थित भाषण दिया था। उनका वह भाषण भारत और भारतीयों के सम्बन्ध में था, जिसमें भारतीय जीवन एवं समाज के प्रति सम्पूर्णता के साथ सूक्ष्म विश्लेषण था।

अपने पति सर दोराब जी की तरह उन्हें भी खेलों से प्रेम था। आप टेनिस की कुशल खिलाड़ी थीं और अनेक पारितोषिक भी प्राप्त किये थे। पति- पत्नी ने मिलकर अनेक आल इण्डिया चैम्पियन शिपों में प्रतिभाग किया था और सफलता प्राप्त की थी।

आप भारतीय टेड क्रॉस की एक्टिव मेंबर भी थीं। युध्द काल में मेहरबाई ने चंदा और अन्य संसाधन इकट्ठा कराने में भी काफी परिश्रम किया था।

मेहरबाई के अप्रतिम योगदान के सम्मान में किंग जार्ज पंचम नें उन्हें खुद सम्मानित किया था।

18 जून, 1931 को ल्यूकेमिया से मानवता की मिशाल, नारी उत्थान की अलख जगाने वाली लेडी मेहरबाई की मृत्यु हो गयी। दोराब जी द्वारा मेहरबाई की स्मृति में **लेडी टाटा मेमोरियल ट्रस्ट** की स्थापना की गयी। रक्त से सम्बाधित विभिन्न प्रकार की बीमारियों के अध्ययन हेतु उक्त ट्रस्ट का गठन किया गया था। 1932 में ट्रस्ट फंड स्थापित किया गया जो अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने, आपदा राहत तथा अन्य मानवीय उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाना था। इस ट्रस्ट का नाम **सर दोराब जी टाटा ट्रस्ट** रखा गया। कहते हैं कि उक्त ट्रस्ट में आपने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्तियों को लगा दिया था।

शिक्षा के क्षेत्र में दिया गया आप द्वारा योगदान अति महत्वपूर्ण है। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी को एक लेबोरेटरी इक्विपमेंट हेतु आपने काफी आर्थिक मदद दी।

पुणे स्थित भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट को भी संस्कृति भाषा के अध्ययन हेतु आपने आर्थिक सहायता प्रदान की।

3 जून, 1932 को महान व्यक्तित्व जो सदैव मानवता की सेवा में लगा रहा, की मृत्यु हो गयी।

इंग्लैण्ड के बुकवुड सेमेट्री में उनकी धर्म पत्नी मेहरबाई की समाधि के पास ही उनकी भी समाधि बनी हुई है। पति- पत्नी मानवता के साधक, उपासक और पुजारी थे। दोनों को शत- शत नमन्।

कर्मठ, दूरदर्शी एवं परोपकारी व्यक्तित्व

रतन दादाभाई टाटा

रतन दादा भाई टाटा का जन्म सन् 1856 ई. में नवसारी में हुआ था। आप आर. डी. नाम से सुप्रसिध्द थे। नवसारी में ही आपकी प्राथमिक शिक्षा– दीक्षा हुई। उच्च शिक्षा के लिए आप एलफिन्स्टन कालेज में प्रवेश लिए तथा बाद में आप कृषि विज्ञान के अध्ययन हेतु मद्रास गये। शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात आपने अपने पिता की कम्पनी टाटा एण्ड कम्पनी से अपने व्यावसायिक कार्य की शुरूआत की। उस समय कम्पनी की स्थिति अच्छी नहीं थी। व्यापार मंदी की दिशा में जा रहा था। इसलिए कम्पनी के काम–काज के लिए आपको हाँगकाँग भेजा गया। सन् 1876 में आपके पिता की मृत्यु हो गयी। पिता जी की मृत्यु के बाद भी आप पहले की ही तरह कार्यरत थे। 1883 में आपने कम्पनी का कार्यभार संभाला। उस वक्त कम्पनी की आर्थिक स्थिति बिल्कुल अच्छी नहीं थी, यह वह दौर था जब आपको अपनी वित्तीय प्रबंधन की योग्यता को प्रदर्शित करने का सुअवसर मिला और आपने अपनी कम्पनी को कई दुश्वारियों से बचा लिया। जमशेद जी आपकी कर्मठता एवं योग्यता से अत्यंत प्रभावित हुए। जमशेद जी ने 1884 में आर. डी. को अपनी कम्पनी **इंपैरस मिल्स** में शामिल कर लिया। 1887 में जमशेद जी ने आर. डी. को नवगठित कम्पनी **टाटा एण्ड संस** में भागीदार बना लिया।

जमशेद जी इंपैरस मिल्स के प्रबंधक बेजनजी दादाभाई मेहता के साथ ने जोड़ दिया। उस समय मेहता जी तकनीकी और प्रबंध का कार्य संभाल रहे थे। रतन दादाभाई को वित्तीय मामलों का उत्तरदायित्व दिया गया। उसी समय आपको दोराब जी टाटा के साथ यवतमाल में एक फैक्ट्री स्थापित करने का जिम्मा सौंपा गया। स्वदेशी मिल की माली हैशियत उस समय ठीक नहीं थी, अतएव आर. डी. को उसके वित्तीय कार्यभार दिये गये। जमशेद जी के सानिध्य में दोराब जी के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर आपने सफलतापूर्वक अपने दायित्व को पूरा किया और कम्पनी को दुश्वारियों से निजात दिलाई।

नौशेरवाँ जी द्वारा स्थापित कम्पनी के व्यवसाय से जमशेद जी द्वारा स्थापित कम्पनी का व्यवसाय अलग था, इसलिए उन्होंने पूर्वी शाखा का उत्तरदायित्व अपने चचेरे भाई आर. डी. को सौंप दिया। आर. डी. कुछ सालों तक हाँगकाँग में रहे और वहाँ आपने संघाई तथा और कुछ स्थलों पर शाखाएँ खोली जो चावल तथा रेशम का व्यापार करती थीं। उनके अधीन यह व्यवसाय इतना अच्छा चला कि शीघ्र ही न्यूयॉर्क और पेरिस में नवीन शाखाएँ खोली जो मुख्य रूप से मोती और रेशम के व्यवसाय से जुड़ी हुई थीं। पेरिस उनके लिए काफी महत्वपूर्ण साबित हुआ। वहीं आपको सुजाने ब्रियरे से प्यार हो गया और सन् 1902 में दोनों ने विवाह कर लिया।

1904 में जमशेद जी की मृत्यु हो गयी और उसके पश्चात् **टाटा एंड संस** का नाम बदलकर टाटा संस एण्ड कम्पनी हो गया। इस कम्पनी के तीन पार्टनर थे। सर दोराब जी, सर रतन टाटा एवं आर. डी. टाटा। हाँगकाँग से परिचालित **टाटा एण्ड कम्पनी** का इस नवीन कम्पनी में विलय हो गया।

मुख्यालय मुम्बई में रहते हुए व्यापारिक एवं वित्तीय कार्यों का देखभाल करना आर. डी. का प्रमुख कार्य था। यहाँ रहकर आपने जमशेद जी द्वारा कल्पना की गई परियोजनाओं– लौह एवं इस्पात कम्पनी, हाइड्रोइलेक्ट्रिक कम्पनी एवं इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस को पूरा करने में महती भूमिका निभाई। सन् 1918 में सर रतन टाटा के निधनोपरान्त आर. डी. द्वारा कम्पनी के अहम विभागों का उत्तरदायित्व संभाला गया। प्रथम विश्व युध्द की वजह से कम्पनी मुश्किलों से गुजर रही थी, लेकिन मुश्किलों के दौर से कम्पनी को बाहर निकाल लेना आर. डी. की कर्मठता, कुशलता एवं दूरदर्शिता का स्पष्ट प्रमाण था। आपके सुविशाल अनुभव एवं कुशल मार्गदर्शन से ही ऐसा सम्भव हो सका।

जब वाकई गम्भीर आर्थिक कठिनाइयों से कम्पनी गुजर रही थी, उस समय भी आर. डी. ने मानवतापूर्ण कार्यों एवं जन कल्याणकारी कार्यों को जारी रखा।

आप कुछ समय के लिए इंपीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल के सम्मानित सदस्य भी रहे। सन् 1890 में हुई आपकी जापान यात्रा भारत–जापान व्यापारिक सम्बन्धों को विकसित करने में काफी मददगार साबित हुई। जापान के सम्राट ने आपके कार्य के सम्मान में, आपके कार्यों को मान्यता प्रदान करते हुए **थर्ड आर्डर ऑफ राइजिंग सन** उपाधि से उन्हें अलंकृत किया। 26 अगस्त, 1926 को आप ने इस असार संसार से विदा ली।

SBI General INSURANCE

has been consistently chosen as the

Best General Insurance Company

by multiple industry bodies!

'General Insurance Company of the Year' at India Insurance Summit and Awards 2019 organised by Synnex Group

'Gold Award' in the category **'Non Life Insurance Provider of the Year 2018'** at the 17th Edition of Outlook Money Awards organised by Outlook Money

'Best General Insurance Company' at the Emerging Asia Insurance Awards 2018 organised by Indian Chamber of Commerce

This exemplifies our unparalleled customer service and acknowledges our efforts towards becoming the most trusted general insurer for a transforming India.

Toll Free No: **1800 22 1111** Website: **www.sbigeneral.in** Know More:

Disclaimer: SBI General Insurance Company Limited, Corporate & Registered Office: "Natraj" 201, Junction of Western Express Highway & Andheri Kurla – Road, Andheri (East), Mumbai – 400 069. | IRDAI Reg. No. 144 dated 15/12/2009 | CIN: U66000MH2009PLC190546 | SBI Logo displayed belongs to State Bank of India and used by SBI General Insurance Company Limited under license. ADVT/CORPCOM/19-20/MAG/009

राष्ट्रभक्त, उदारमना एवं कलाप्रेमी

सर रतन टाटा

सर रतन टाटा जमशेद जी के छोटे पुत्र थे। आपका जन्म 20 जनवरी, 1871 को हुआ। सर रतन टाटा अपने बड़े भ्राता सर दोराब जी से उम्र में 12 वर्ष छोटे थे। आपकी शिक्षा–दिक्षा सेंट जेवियर कालेज, बंबई में सम्पन्न हुई। नवाज बाई से सन् 1892 में आपकी शादी हुई। शादी के पश्चात् रतन जी अपने माता–पिता के साथ पत्नी सहित एस्प्लेनेड हाउस में रहने लगे। पिता जमशेद जी के निधन के पश्चात् आप मेरीन लाइन में ब्राइट लैण्ड में निवास करने लगे। बाद में उन्होंने बाडवी रोड पर एक भव्य भवन का निर्माण कराया जो 1915 में बनकर तैयार हो गया। आप इस भवन में कुछ ही माह निवास कर पाए, उसके बाद वे अपने इलाज के लिए इंग्लैण्ड चले गये और फिर वहाँ से वापस नहीं आ पाए। पिता जमशेद जी के निधन के बाद आपने फ्रांस की एक बीमा कम्पनी जिसकी टाटा एण्ड संस भारत में एजेण्ट थी, का कार्य करना शुरू कर दिया। उन्होंने टाटा एण्ड कम्पनी का व्यवसाय भी संभाला जो कपड़ा, धागा, रेशम, मोती और चावल आदि का व्यवसाय करती थी। लेकिन इसकी अधिकांश जिम्मेदारी आपके बड़े भाई दोराब जी ही संभालते थे। रतन जी ने माहिम एवं ब्रांदा में भू–अर्जन में विशेष दिलचस्पी ली, जिसे बाद में सरकार ने अपने हाथों में ले लिया।

रतन जी का सामाजिक जीवन अत्यंत व्यस्त था। आपकी यात्राओं में काफी दिलचस्पी थी। अपने जीवन के आखिरी वर्षों में उन्होंने हर साल अधिकाधिक समय इंग्लैण्ड में व्यतीत किये। आप कार्ल्टन क्लब के मेम्बर थे और इंग्लैण्ड की उच्चवर्गीय सोसायटी में एक सुसम्मानित सदस्य के रूप में प्रतिष्ठित थे। 1906 ई. में आपने इंग्लैण्ड में लंदन के निकट ट्विकेनहम स्थित **यार्क हाउस** को क्रय कर लिया तथा उससे लगे हुए 12 एकड़ के भू– क्षेत्र पर एक भव्य बगीचा विकसित किया।

आप सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना से ओत– प्रोत थे। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अफ्रीका में अंग्रेजों के अन्याय के विरुद्ध आपने गाँधी जी को नैतिक एवं आर्थिक मदद भी उपलब्ध कराई थी। आपने गाँधी जी को किस्तों में सवा लाख रूपये भेजे थे। देश में गोपाल कृष्ण गोखले तथा उनकी **सर्वेंट्स ऑफ इण्डिया** सोसायटी द्वारा किये जा रहे उत्कृष्ट कार्यों को आपने व्यापक समर्थन दिया था। इस आंदोलन को भी आपने एक लाख 10 हजार की आर्थिक मदद की थी।

देश की गरीबी तथा आम लोगों की चिंताजनक स्थिति देखकर सर रतन टाटा काफी दु:खी थे। वे इसमें सुधार के प्रबल पक्षधर थे। आप चाहते थे कि इसके निदान हेतु वैज्ञानिक पद्धति अपनाई जाय, वे चाहते थे कि इसके कारणों की जाँच– पड़ताल होनी चाहिए। आपने 1912 में लंदन विश्व विद्यालय को इस दिशा में कार्य करने हेतु एक निकाय के गठन के लिए आर्थिक सहायता का प्रस्ताव दिया, ताकि देश की गरीबी एवं दयनीय स्थिति के कारणों को पहचान कर उसका निदान करने हेतु परामर्श प्राप्त हो सके। 1913 में निकाय का गठन हुआ और सर रतन जी ने इसे प्रतिवर्ष 1400 पौण्ड की दर से तीन वर्षों तक मदद देना स्वीकार किया। 1916 में इसे पाँच वर्षों की अवधि के लिए बढ़ा दिया गया। आपकी मृत्यु के बाद भी यह भुगतान उनके ट्रस्टियों द्वारा 1931 ई. तक किया जाता रहा। अनेक अभ्यर्थियों द्वारा इस क्षेत्र में अनुसंधान किया गया तथा पेपर पेश किये गये।

सर रतन टाटा द्वारा **लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स** में सोशल साइंसेज के अध्ययन हेतु इसका विभाग स्थापित करने के लिए भी आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई गयी। उक्त नया विभाग सन् 1919 में रतन टाटा डिपार्टमेंट ऑफ सोशल साइंसेज के नाम से जाना गया। बाद में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स ने इसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी संभाल लिया तथा उसके अनुसार ही इसका नाम भी बदल दिया गया। भारत के भूतकाल में भी रतन जी की काफी दिलचस्पी थी। आप ने सन् 1912 में बिहार एवं उड़ीसा में

पुरातात्विक सर्वेक्षण तथा उत्खनन के लिए आर्थिक मदद उपलब्ध कराने का प्रस्ताव दिया था। उसके अनुरूप ही पाटलिपुत्र में गहन उत्खनन डॉ. ए. बी. स्पूनर की देखरेख में सम्पन्न हुआ। 1913-1917 तक इस कार्य हेतु सर रतन टाटा द्वारा 75000 रूपये की आर्थिक सहायता की गयी। इस उत्खनन में अनेक शिक्कों, टेराकोटा की वस्तुओं के अतिरिक्त अन्य बेसकीमती वस्तुएँ प्राप्त हुई। वे वस्तुएँ आज भी पटना म्यूजियम में सुरक्षित हैं।

सर रतन टाटा अत्यंत उदार हृदय के स्वामी थे। आप जिस कार्य से प्रभावित होते, उसके लिए मुक्तहस्त से दान–सहयोग देने वाले उदारमना व्यक्तित्व थे। देश में आए बाढ़, अकाल और भूकम्प की आपदा में आपने पर्याप्त सहायता दी। सार्वजनिक स्मारकों, स्कूलों एवं अस्पतालों को भी आपने काफी आर्थिक मदद की। जार्ज पंचम एंटी ट्यूबरकुलोसिस लीग को आपने दस वर्षों तक 10,000 रूपये प्रतिवर्ष की आर्थिक मदद उपलब्ध कराई। उक्त संस्था द्वारा संचालित संस्थान में क्षयरोगियों का इलाज किया जाता था। आपके विभिन्न सेवा कार्यों के दृष्टिगत सन् 1916 में आपको नाइट हुड (सर) की उपाधि प्रदान की गयी।

सर रतन टाटा अत्यंत कलाप्रेमी थे। आप अपने देशी और विदेशी यात्राओं के दौरान चित्रों, तैलचित्रों, बंदूकों, तलवारों, चांदी के पात्रों, हस्तलिपियों, पात्रों एवं कालीनों का संग्रह करते रहते थे। बाद में आपने यह संग्रह प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम, मुम्बई को सुपुर्द कर दिया।

सन् 1916 में आप चीन एवं जापान की यात्रा पर गये थे। वहाँ से वापस होने पर आप बीमार पड़ गये। डॉक्टरों की सलाह पर इलाज कराने हेतु आप पत्नी नवाजबाई तथा सचिव पी. पी. मिस्त्री के साथ इंग्लैण्ड गये। रास्ते में आप जिस जहाज पर सवार थे वह जर्मनों के तारपीडो का शिकार हो गया। हालांकि, दूसरे सभी यात्रियों के साथ ही आपको भी बचा लिया गया परन्तु रास्ते में हुए इस विलम्ब का उनके स्वास्थ्य पर बेहद प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। सितम्बर 1918 में सेंट एब्स, कार्नवाल में आपका निधन हो गया। ब्रुकवुड सेमेट्री, लंदन में उनके पिता की समाधि के पास ही उनकी भी समाधि बनाई गयी।

आप नि:सन्तान थे। उन्होंने अपनी वसीयत में सम्पत्ति का एक काफी बड़ा भाग जनकल्याण के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया था। सर रतन टाटा भारत के महान सपूत थे। आपकी पुण्य स्मृति को नमन!

सब का हित चाहने वालीं, उदारमना लेडी नवाजबाई

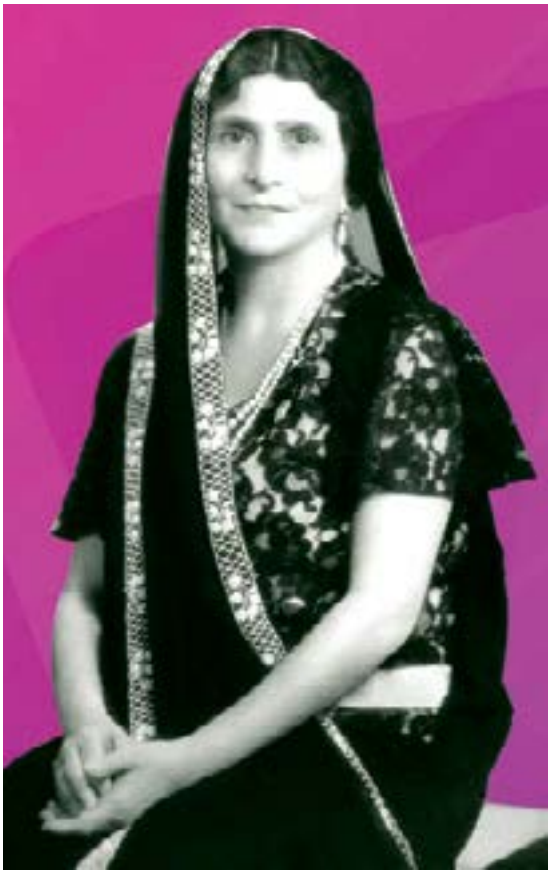

नवाजबाई सर रतन टाटा की पत्नी थीं। सितम्बर 1877 में आपका जन्म हुआ था। सन 1890 में सर रतन टाटा से आपका विवाह हुआ। आप घुड़ सवारी और पोलो खेल में दक्ष थी। लंदन में आप लोगों ने काफी समय व्यतीत किया था। अत: वहाँ पर संभ्रान्त लोगों के बीच आपका काफी आदर सम्मान था।

सर रतन टाटा की भांति लेडी नवाजबाई भी फाईन आर्ट की बड़ी कद्रदान थीं। कलाकृतियों के संग्रह में आपका भी काफी योगदान था। 41 वर्ष की आयु में ही आप विधवा हो गयी थीं। आपके कंधों पर रतन जी के एस्टेट की देखरेख की एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी। आपने अपनी शेष जीवन अवधि को टाटा हाऊस में ही गरिमापूर्ण तरीके से व्यतीत किया।

सर रतन टाटा की मृत्यु के पश्चात 1918 में नवाजबाई को टाटा संस के संचालक मंण्डल में शामिल कर लिया गया। आप जीवन पर्यंत **टाटा संस** के संचालक मंडल में रहीं। सन् 1965 में सर रतन टाटा ट्रस्ट के अध्यक्ष की हैशियत से आपने पारसी समुदाय की समस्याओं के अध्ययन तथा उस पर एक रिपोर्ट पेश करने के लिए कार्नेज ट्रस्ट के एस. जे भाई मारखम को आमंत्रित किया था। आपकी इस पहल से पारसी चैरिटीज ने आपने आप को संगठित किया ताकि वे अपनी चैरिटी को समर्थ बना सकें।

आपकी हार्दिक इच्छा थी कि आपके पति सर रतन टाटा की विरासत जिंदा रहे, अत: आपने होरमुसजी टाटा के सुपुत्र नवल होरमुसजी टाटा को दत्तक पुत्र के रूप में गोद ले लिया।

इस प्रकार लेडी नवाजबाई के दत्तक पुत्र ने आगे चलकर टाटा घराने का नेतृत्व किया, काम काज संभाला।

लेडी नवाजबाई की सेवा भावना को नमन करते हुए उनकी पुण्य स्मृति को प्रणाम!

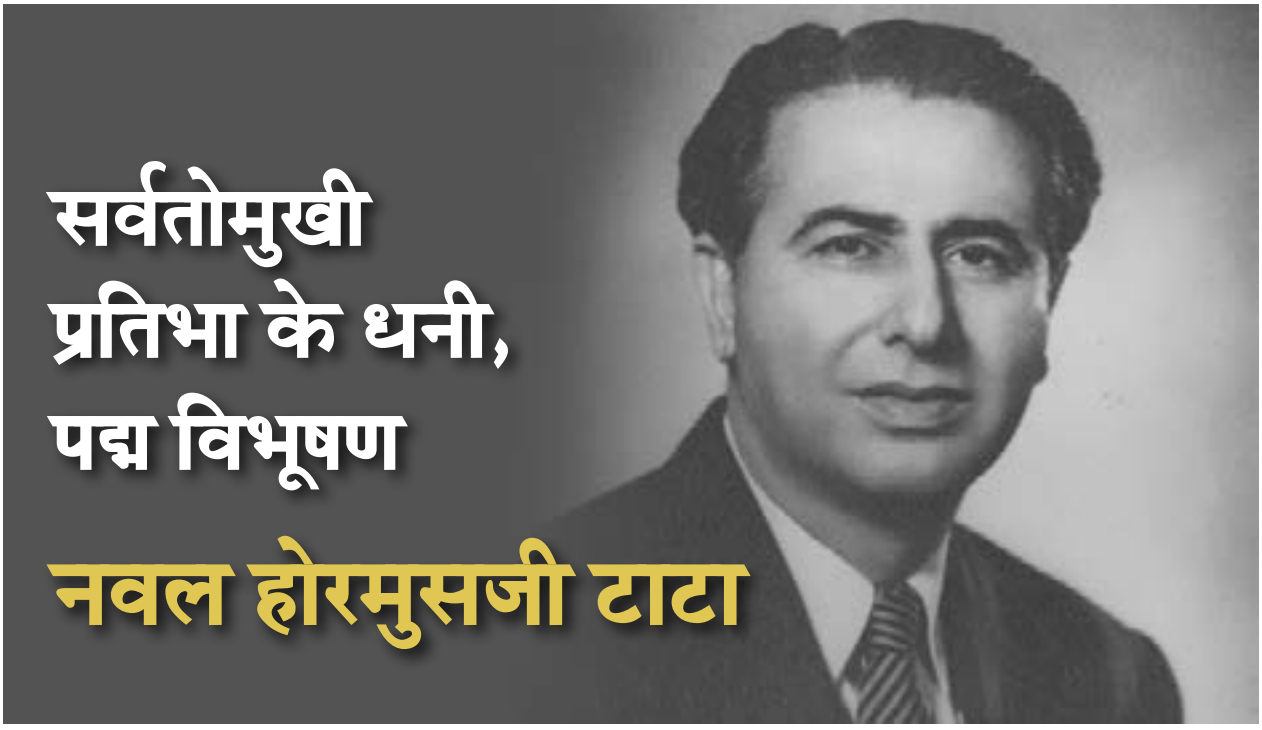

सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी, पद्म विभूषण

नवल होरमुसजी टाटा

नवल होरमुसजी टाटा का जन्म बंबई में 30 अगस्त, 1904 ई. को हुआ था, आपके पिता होरमुसजी टाटा अहमदाबाद की एक मिल में स्पिनिंग मास्टर थे। नवल की ४ वर्ष की उम्र में ही पिता होरमुसजी की मृत्य हो गयी। यह नवल के परिवार के लिए एक बड़ा आघात था। बंबई में आपके रिश्तेदारों द्वारा कुछ समय तक के लिए राहत दी गयी। तत्पश्चात् आपके परिवार का आश्रय स्थल नवसारी का पारिवारिक घर बना। बाद में यह परिवार सूरत का निवासी हो गया। आपके आवश्यक खर्चे उनकी माँ द्वारा किये जा रहे जरदोजी कार्य की आय से पूरे होने लगे। इसी समय दोराबजी का दृश्य पटल पर आगमन हुआ। दोराब जी की सहायता से नवल के दो भाईयों को जे. एन. पेटिट पारसी अनाथालय में आश्रय मिला। 1 वर्ष एक बाद आपको भी यहाँ शरण मिली। उस समय इस अनाथालय में 300 बच्चों का पालन–पोषण हो रहा था। अनाथालय में बच्चों के लिए भोजन, वस्त्र तथा स्वास्थ्य हेतु सीमित धन बजट के रूप में उपलब्ध था। कमोबेश वह एक तंगहाल जिंदगी थी। उस तंगहाल स्थिति में रहकर बालक नवल आगे चलकर देश के सुप्रतिष्ठित टाटा संस्थान में एक महत्वपूर्ण पद पर विराजमान हुआ। यह बालक नवल के पक्के इरादे और उनके व्यक्तित्व में मौजूद विशिष्ट गुणों की ही विशेषता थी जिसने उन्हें सफलता की बुलंदियो तक पहुँचाया।

सर्व विदित है कि जमशेदजी टाटा की शादी हीराबाई से हुई थी। आपके दो पुत्र थे। दोराबजी और रतनजी। इनका कोई उत्तराधिकातरी नहीं था। सर रतन टाटा की पत्नी नवाजबाई ने नवल होरमुसजी को उसी समय गोद ले लिया था, जब वे अनाथालय में पल रहे थे। 47 वर्ष की आयु में सर रतन टाटा ने 1918 में इस संसार से विदा ले लिया। सर दोराबजी की अध्यक्षता में पारिवारिक सदस्यों की एक बैठक में निश्चित किया गया कि **उत्थमा** संस्कार हेतु एक पुत्र का होना अति आवश्यक है, अत: पुत्र के रूप में किसी को गोद लिया जाय। नवल की माँ सर रतन टाटा की सर्वाधिक प्रिय चचेरी माँ थीं। इसलिए नवल को गोद लेने का फैसला लिया गया। नवाजबाई ने इस पारिवारिक फैसले को स्वीकार कर लिया और इस प्रकार नवल होरमुसजी टाटा को गोद ले लिया गया। नवाजबाई अनाथालय से तत्काल नवल को निकालना चाहती थीं लेकिन अनाथालय के नियमों के अनुसार ऐसा नहीं हो सका। नवल अनाथालय में रहते हुए 10 वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वहाँ से निकल पाये।

देश के एक प्रभावशाली टाटा परिवार का सदस्य बन जाने के बाद भी उन्हें अपना अतीत हमेशा याद रहा। आप कहा करते थे कि, मैं भगवान का शुक्रगुजार हूँ, जिन्होंने मुझे गरीबी के कष्टों का अनुभव करने का अवसर दिया, जिसने आने वाले वर्षो में मेरे व्यक्तित्व को तदनुरूप ढाला।

आपने बंबई विश्व विद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक करने के बाद अकांउटेन्सी में एक लघु पाठ्यक्रम पूर्ण करने

हेतु इंग्लैड प्रस्थान किया। सन 1930 में इग्लैड से वापस होने के बाद आपने डिस्पैच क्लर्क असिस्टेंट सेक्रेटरी के तौर पर टाटा आर्गजाइजेशन में प्रवेश किया।

जल्द ही वह टाटा संस में असिस्टेंट सेक्रेटरी पद पर नियुक्त हो गये। कुछ समय बाद आपको कपड़ा विभाग में एक्जीक्युटीव के तौर पर स्थानांतरित कर दिया गया। आपकी योग्यता को देखते हुए 1939 में आपको टाटा द्वारा संचालित कपड़ा मिलों का संयुक्त प्रबंध निदेशक का उत्तरदायित्व दिया गया।

1941 में आप टाटा संस में एक निर्देशक के रूप में पदोन्नति हुए। 1948 में आप टाटा ऑयल मिल्स कम्पनी लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर बने। इससे पूर्व आप टाटा मिल्स के चेयरमैन पहले ही बन चुके थे। इसके पहले कुछ वर्षों में तीव्रगति से आपको पदोन्नती प्राप्त हुई। आप दूसरे कपड़ा मिलो एवं तीन इलेक्ट्रिक कम्पनियों के टाटा संस के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त हुए।

इस प्रकार आपके पास चार कपड़ा मिलों, तीन ऊर्जा कम्पनियों तथा सर रतन टाटा ट्रस्ट के प्रबंधन की प्रत्यक्ष जिम्मेदारी थी। इसके अलावा भी आप पर समूह की अनेक अन्य कम्पनियों तथा ट्रस्टों का मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी थी। **आप शांत स्वभाव, सद्व्यवहार और विनम्रता जैसे गुणों के स्वामी थे। वे अपना अतीत सदैव स्मरण रखते थे। व्यस्तता की स्थिति में भी आप बाम्बे हाऊस में समाज के तमाम लोगों से मिलते रहते थे। टाटा नाम से संचालित ट्रस्टों से आपका अतिव आत्मिक जुड़ाव था। उसका कारण यह था कि ट्रस्टों का कार्य परोपकार की भावना पर आधारित था। वे ट्रस्ट के कार्यो के प्रति स्वंय को अधिक जबाबदेह मानते थे।**

आप भारतीय कैंसर सोसायटी के तकरीबन 30 वर्षो तक अध्यक्ष रहे। क्रीड़ा के क्षेत्र में भी आपका योगदान सरहानीय है। 1946 से 1961 तक आप इंडियन हॉकी फेडरेशन के सम्मानित अध्यक्ष भी रहे। आप **ऑल इंडिया कौंसिल फॉर स्पोर्ट्स** के पहले चेयरमैन थे। नवल होरमुसजी टाटा ने 'इंटर नेशनल हॉ की फेडरेशन ' को भी अपनी सेवाएं प्रदान की।

आप एक मिलनसार और सरल प्रकृति के जिंदादिल इन्सान थे। कर्मचारी उनसे बेहद खुश रहते थे। आप एक ईमानदार तथा बिलकुल ओपेन पर्सनाल्टी थे। स्थितियों के अनुसार वे अपने विचार व्यक्त करते थे तथा किसी भी समस्या के समाधान के लिए सम्पूर्णता में विचार करते थे। आपने 1946 में अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ में भारतीय टेक्सटाईल उद्योग का प्रतिनिधित्व किया था। वहाँ आपके विचारों को काफी प्रशंसा मिली। आप 1957 में अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ की नियामक समिति के सदस्य चुने गये। जीवन पर्यंत आप उस समिति के सदस्य रहे। 1989 में आप का निधन हुआ। सन 1966 में आप देश में योजना आयोग के श्रम पैनेल के सदस्य चुने गये। आपके द्वारा ही नेशनल इन्स्टीट्युट ऑफ लेबर मॅनेजमेंट की स्थापना की गई थी। जिसे वर्तमान में नैशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ पर्सनल मैनेजमेंट के रूप में जाना जाता है। नवल

होरमुसजी टाटा 1951 से 1980 तक इसके अध्यक्ष थे। उन्हें कर्मचारियों का हित रक्षक माना जाता था। आप भारतीय हॉ की फेडरेशन के भी लम्बे समय तक अध्यक्ष रहे। आपके अध्यक्षीय कार्यकाल में देश ने ओलम्पिक हॉकी में अनवरत् तीन ओलम्पिक में स्वर्णपदक प्राप्त कर देश का मस्तक ऊँचा किया था।

आप बहुआयामी प्रतिमा के धनी थे। आप इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ सांइस, स्वदेशी लीग, बम्बई राज्य समाज कल्याण परिषद और नेशनल सेफ्टी कौसिल जैसे संस्थानों को एक साथ अपनी सेवाएं प्रदान करने वाले अद्भुत व्यक्तित्व के स्वामी थे। आप कल्याणकारी ट्रस्टों के भी अध्यक्ष रहे। भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सन 1969में आपको पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। औद्योगिक शांति बनाए रखते में आपके योगदान को मान्यता देते हुए उसी वर्ष आपको एक बार फिर सम्मानित किया गया।

आपका विवाह सूनू के साथ हुआ था। आपका गृहस्थ जीवन सुखदायी नहीं रहा। पति – पत्नी का तलाक होने के पश्चात उनके पुत्रों रतन और जिम्मी के पालन – पोषण की जिम्मेदारी लेडी नवाजबाई ने उठाई।

5 मई, 1989 को उदारमना, राष्ट्रसेवी कर्मवीर व्यक्तित्व का देहावसान हो गया। आपको सबकी उन्नति हेतु समान अवसर देने के प्रबल पक्षधर के रूप में सदैव याद किया जाऐगा। आप की पुण्य स्मृति को नमन्।

भारत रत्न
जे. आर. डी. टाटा

जहांगीर रतन दादाभाई (जे. आर. डी) की माता फ्रांसीसी थीं। आपके पिता का नाम रतन दादाभाई टाटा था। जे. आर. डी. का जन्म 29 जुलाई 1904, ई. को पेरिस में हुआ था। आप जमशेदजी टाटा के चचेरे भाई थे। जे. आर. डी. की शिक्षा फ्रांन्स, जापान आदि देशों में हुई थी। आपने एक वर्ष तक फ्रांन्स की सेना में प्राथमिक सेवा भी की थी। वे सेना में ही बने रहना चाहते थे किन्तु विधि के विधान में कुछ और ही लिखा था। उन्होंने सेना को छोड़ दिया। आप कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय से अभियांत्रिकी की शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक थे लेकिन उसी दौरान पिता की आज्ञानुसार भारत आ गये। भारत वापस आकर उन्होंने स्वंय को एक ऐसे वातावरण और व्यावसायिक साम्राज्य के अन्तर्गत पाया जिसके वे अभ्यस्त नहीं थे।

टाटा संस में आपका प्रवेश एक सहायक के रूप में हुआ। पिता आर. डी. टाटा के निधनोपरान्त (कुछ समय पश्चात्) सन 1926 में आपको कम्पनी में एक डाइरेक्टर के तौर पर शामिल कर लिया गया। 1938 ई. में आप चेयरमैन नियुक्त किये गये। आप एक चमत्कारिक व्यक्तित्व के स्वामी थे। सुदीर्घ ५३ वर्षों तक आपने भारत के औद्योगिक विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया। 25 मार्च, 1991 को आपने अपने कनिष्ठ साथी रतन नवल टाटा को टाटा संस का कार्यभार सौंप दिया। टाटा संस के बोर्ड द्वारा जे. आर. डी. टाटा को आजीवन अध्यक्ष (अवकाश प्राप्त) के तौर पर एकमत से चुना गया। जे. आर. डी. टाटा को देश में नागरिक विमानन का संस्थापक

माना जाता है। आप देश के ऐसे पहले पायलट रहे जिन्होंने यह योग्यता हासिल की थी। सन 1932 में आपने भारत के प्रथम राष्ट्रीय वाहक 'टाटा एयर लाइन्स' की स्थापना किया। सन 1946 में 'टाटा एयर लाइन्स' का नाम परिवर्तित कर 'एयर इंडिया लिमिटेड' कर दिया गया।

टाटा एयर लाइन्स की उद्घाटन उड़ान कराची से मुम्बई के मध्य हुई। जिसका कन्ट्रोल जे. आर. डी. टाटा के हाथों में था। कुछ वर्षों बाद आपने अधिक दूरी की अंन्तर्राष्ट्रीय उड़ान के लिए भारत सरकार के साथ संयुक्त उपक्रम के रूप में एयर इंडिया इन्टर नेशनल लि. की स्थापना की। 1953 में इसका राष्ट्रीयकरण हो गया और आप तब तक इसके कार्यकारी अध्यक्ष रहे। आपके सुझाव पर अमल करते हुए भारत सरकार ने दो उड़ान कॉरपोरेशन – एयर इंडिया और इण्डियन एयर लाइन्स स्थापित किये जो अंतरराष्ट्रीय और घरेलू उड़ान के लिए गठित किये गये थे। आपको एयर इंडिया का चेयरमैन नियुक्त किया गया।

भारतीय नागरिक उड्डयन की 50 वीं वर्ष गाँठ के ऐतिहासिक अवसर पर 78 वर्ष की आयु में आपने एक 50 वर्ष पुराने विमान में अपनी 1932 की उद्घाटन उड़ान को 15 अक्टूबर, 1982 को उड़ान भरकर दोहराया।

वैमानिकी क्षेत्र में आपके अतुलनीय योगदान के फलस्वरूप अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारतीय वायुसेना द्वारा सन 1948 में आपको आनरेरी ग्रुप कैप्टन तथा सन 1966 में एयर कमोडोर (आनरेरी) के पद से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त आपको अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। आपने टाटा एयर लांइस की देखभाल एक बच्चे की भांति किया। टाटा एयर लाइंस की कल्पना, रूपरेखा तथा व्यावहारिक जमीन पर उतारने एवं बाद में इसके विकास और देखभाल में आपने काफी मेहनत की। यही कारण था कि सन 1953 में प्रधानमंत्री पं. जवारहलाल नेहरु जी द्वारा जे. आर. डी. को स्वतंत्रता दी गयी कि वे मालवाहक विमानों का नियंत्रण एवं प्रबंधन आपने हाथ में ही रखें, 1977 में भारत सरकार द्वारा एक कानून बनाकर जे. आर. डी. को वहाँ से अलग कर दिया गया। एयर इण्डिया का कुशल परिचालन आपकी कर्मठता एवं दूरदर्शिता का परिचायक था। उद्योगों पर कई तरह के नियम एवं प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की स्थितियाँ थी। उस समय जे.आर.डी. टाटा ने अपने स्तर पर भगीरथ प्रयास करते हुए देश को औद्योगिक विकास के पथ पर अग्रसर कराया।

यह इस तथ्य से भी सुस्पष्ट है कि जब उन्होंने टाटा संस की कमान संभाली तब टाटा समूह के नियंत्रण में 14 कम्पनियां थीं। आपके 53 वर्षीय सुदीर्घ कार्यकाल में अर्थात् 1988 तक ऐसी 95 कम्पनियाँ थीं, जिन्हें टाटा समूह ने शुरु किया था अथवा जिनका नियंत्रण आपके पूर्ववर्ती टाटाओं के हाथ में था। आपके कुशल एवं प्रभावशाली नेतृत्व में टाटा समूह का चतुर्दिक विकास हुआ। चतुर्दिक विकास के क्रम में विद्युत इंजीनियरिंग, होटल, कन्सल्टेंसी सर्विसेस, सूचना प्रौद्योगिकी, उपभोक्ता वस्तुएं तथा अन्य औद्योगिक उत्पादन प्रमुख हैं।

विज्ञान एवं कला के क्षेत्र में आपका अमूल्य योगदान अतुलनीय है, अपूर्व है। आपके स्मरणीय व उल्लेखनीय कार्यकाल में टाटा इस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, नेशनल इन्स्टीट्युटर ऑ फ एडवांस साइंसेज, टाटा मेमोरिअल ने अपने-अपने क्षेत्रों में नई बुलंदियों को स्पर्श किया। आप ने उस समय शुरू हुए कारोबारों को नई जमीन दी, नई दिशा दी। आपने घरानों के सदस्यों की देखरेख में उद्योग चलाने की परम्परा के विरुद्ध शुद्ध व्यावसायिक दृष्ट्रिकोण अपनाया। आपने प्रतिभाओं के सर्वोत्तम उपयोग का मार्ग प्रशस्त कर उन्हें अवसर उपलब्ध कराने हेतु उचित वातावरण निर्मित करने में योगदान दिया। जे. आर. डी. देश की प्रगति में ही देश का हित देखने वाले कर्मयोगी पुरुष थे। राष्ट्रहित एवं मानव कल्याण की भावना से 1944 में टाटा ट्रस्ट की स्थापना की गयी। आपने आपने शेयर्स की बिक्री से प्राप्त धनराशि से बम्बई में थेलमा टाटा ट्रस्ट की स्थापना की। इस ट्रस्ट की स्थापना का उद्देश्य वंचित वर्ग की महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार करना तथा उन्हें उन्नति की दिशा में आगे बढ़ाना था।

आप परिवार नियोजन के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण के भी पक्षधर थे। आपके सुप्रयासों को मान्यता प्रदान करते हुए सितम्बर, 1992 में आपको यू. एन. पापुलेशन अवॉ र्ड से पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। आप परिवार नियोजन संस्थान के फाउण्डर मेम्बर थे। इसके अलावा आप टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च की गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन, एटॉमिक एनर्जी कमीशन के सदस्य, इंडियन इन्स्टीट्यूर ऑफ साइंस, बंगलोर की कोर्ट के प्रेसीडेन्ट भी थे।

आप जे. एन. टाटा इंडोमेंट फॉर द हायर एजूकेशन ऑ फ इंडियंस एवं होमीभाभा फेलोशिप कौंसिल के चेयरमैन भी रहे। इसी के साथ आप दोराब जी टाटा ट्रस्ट, जे. आर. डी. टाटा ट्रस्ट तथा जमशेद जी टाटा ट्रस्ट के भी चेयरमैन रह। आपको अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों एवं सम्मानों से अलंकृत किया गया था। भारत का पद्म भूषण, फ्रांस का लेजन ऑफ ऑनर,ऑर्डर ऑफ मेरिट ऑफ द फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी तथा डाक्टरेट की उपाधियाँ इलाहाबाद, बनारस , बंम्बई व रुड़की विश्व विद्यालयों द्वारा प्राप्त की। 1992 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारतरत्न से आप सम्मानित हुए। भारत के अमर सपूत, भारतरत्न जे. आर. डी. टाटा का नवम्बर 1993 में जेनेवा में निधन हो गया। थेलमा से जे. आर. डी. की मुलाकात फ्रांस में हुई थी, 1930 में दोनों की शादी हो गयी। आप नि:संतान थे। आपने नि:संतान होने की स्थिति को भगवान की इच्छा के रूप में स्वीकार कर लिया था। जे. आर. डी. टाटा यद्यपि स्थूल रूप से हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु टाटा समूह और देश के लिए किये गये उनके योगदान सदैव उन्हें अमर बनाए रखेंगे। भारत अपने महान सपूत को सदैव याद रखेगा।

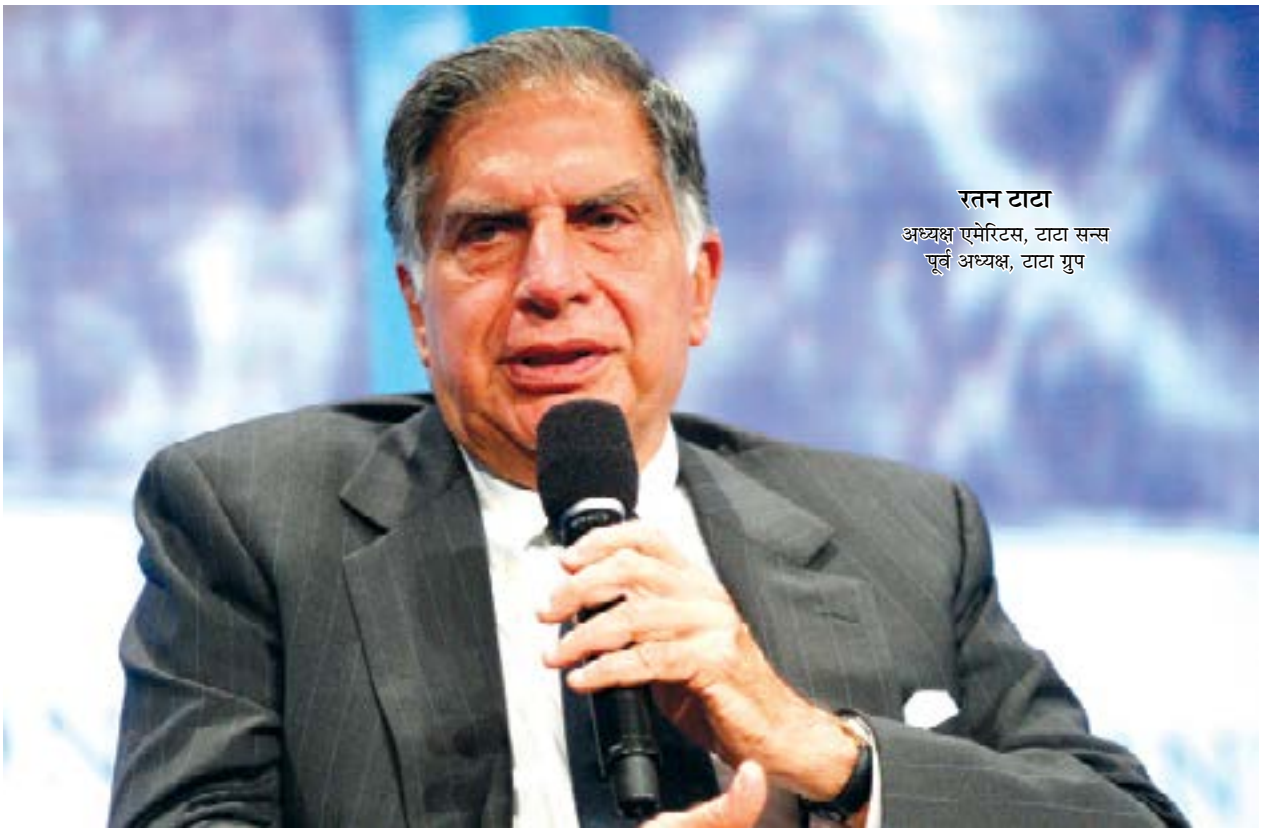

रतन टाटा
अध्यक्ष एमेरिटस, टाटा सन्स
पूर्व अध्यक्ष, टाटा ग्रुप

दूरदर्शी, दृढ़ निश्चयी, विनम्र एवं परोपकारी व्यक्तित्व के स्वामी, पद्म विभूषण

रतन टाटा

रतन नवल टाटा का जन्म 1937 में देश के सुसम्पन्न एवं सुप्रसिध्द टाटा परिवार में हुआ। आपकी माता जी का नाम सूनू और पिता जी का नाम नवल होरमुसजी टाटा था। रतन के बचपन को थोड़ा भाग्यशाली नहीं कहा जा सकता क्योंकि जब उनकी उम्र मात्र सात वर्ष की थी तभी उनके माता–पिता के बीच सम्बन्ध विच्छेद हो गया, तलाक हो गया। उनकी दादी लेडी नवाजबाई द्वारा रतन तथा उनके भाई जिम्मी का पालन–पोषण हुआ। नवाजबाई का रतन पर बहुत प्रेम था। रतन टाटा की आरम्भिक शिक्षा मुम्बई के कैम्पियन स्कूल में सम्पन्न हुई। 15 वर्ष की उम्र में आपको शिक्षा ग्रहण करने हेतु अमेरिका भेज दिया गया। 1962 में रतन टाटा ने अमेरिका के कार्नेल विश्व विद्यालय से आर्किटेक्चर एवं स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग में ग्रैजुएट की डिग्री प्राप्त की। आपने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल

से एडवांस्ड मैनेजमेंट प्रोग्राम का भी कोर्स किया।

भारत वापस आने पर 1962 में आपने टाटा समूह में प्रवेश किया। उस समय जे. आर. डी. टाटा, टाटा समूह के चेयरमैन थे। जे. आर. डी. ने टाटा स्टील में कार्य करने हेतु रतन को जमशेदपुर भेज दिया ताकि वे टाटा स्टील के कार्य को भलीभांति समझ सकें।

टाटा स्टील में रतन के कर्मचारियों की तरह नीली वर्दी पहनकर ही कार्य किया। इस कार्य में फावड़े से चूने के पत्थरों को हटाने से लेकर धधकती हुई भट्ठियों से सम्बन्धित कार्य तक शामिल थे। 1971 में रतन जी को नेशनल रेडियो एंड इलेक्ट्रॉनिक्स कम्पनी (नेल्को) का उत्तरदायित्व (कार्यभार) दिया गया। उस समय नेल्को की आर्थिक स्थिति काफी खराब थी। रतन जी ने कम्पनी के भविष्य को जान लिया था और उसे कठिनाइयों से बाहर निकालने हेतु तत्कालीन चेयरमैन जे. आर. डी. टाटा को कम्पनी में और निवेश करने के लिए राजी कर लिया, जबकि जे. आर. डी. उस कम्पनी में और निवेश नहीं करना चाहते थे। सन् 1975 में आपने हॉर्वर्ड स्कूल से प्रबन्धन में उच्च डिग्री हासिल की। दिसम्बर १९८८ में आपको टेल्को का चेयरमैन बनाया गया।

पिता की मृत्यु के पश्चात् सन् 1989 में आपने सर रतन टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन का उत्तरदायित्व संभाला।

जे. आर. डी. टाटा ने अपने कार्यकाल के दौरान टाटा संस के आधार को विस्तार रूप दिया। सन् 1980 में टाटा संस में निदेशकों की संख्या 11 थी, 1991 तक निदेशकों की संख्या बढ़कर 18 हो गयी। ऐसे व्यक्तियों को निदेशक मण्डल में लिया गया जिन्होंने टाटा समूह के विकास में अहम भूमिका निभाई थी। कालान्तर में इसमें परिवर्तन होते रहे। जे. आर. डी. टाटा ने 25 मार्च, 1991 को अपने उत्तराधिकारी के रूप में टाटा संस के चेयरमैन के लिए रतन नवल टाटा के नाम का प्रस्ताव किया और स्वयं आपने अवकाश ले लिया।

रतन टाटा के कुशल व दूरदर्शी नेतृत्व में टाटा ग्रुप की यात्रा

लगभग 50 वर्षों तक टाटा समूह का कार्य भार संभालने वाले जे. आर. डी. टाटा के बाद रतन नवल टाटा ने 104 वर्ष पुराने टाटा समूह को अपना नेतृत्व दिया। जे. आर. डी. टाटा ने समूह को एक नया कलेवर दिया जिसमें उसकी एक अलग आकर्षक छवि निर्मित हुई। उन्होंने समूह पर अपनी व्यक्तिगत कार्यशैली की भी छाप छोड़ी। जे. आर. डी. के कार्यकाल के आखिरी वर्षों में टाटा ग्रुप के विभिन्न प्रतिष्ठानों के कुछ पॉवर फुल चेयरमैन तथा प्रबंध निदेशकों, जो जे. आर. डी. से करीबी रूप से जुड़े हुए थे, ऐसे लोगों ने अपनी निकटता के आधार पर स्वयं से जुड़ी हुई कम्पनियों पर अपनी छाप डालने का प्रयास किया।

जुलाई, 1991 में भारत सरकार द्वारा एम. आर. टी. पी. के अनेक प्रावधानों को खत्म कर दिया गया और देश उदारीकरण के रास्ते पर चल पड़ा। सरकार का यह कदम रतन टाटा के लिए काफी राहत पूर्ण था, रतन जी ने 3 महीने पूर्व ही चेयरमैन के रूप में टाटा समूह का कार्यभार अपने हाथों में लिया था।

जब रतन टाटा, टाटा समूह के चेयरमैन बने, उस समय वैयक्तिक कम्पनियों का संचालन पॉवरफुल चेयरमैन या प्रबंध निदेशकों के हाथ में था। वे अपने-अपने तरीके से अपना कार्य कर रहे थे। सभी को एक साथ जोड़कर चलना रतन जी के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य था। रतन टाटा ने चेयरमैन और प्रबंध निदेशक के पद के लिए अवकाश ग्रहण करने की आयु निश्चित की। चेयरमैन के लिए 75 वर्ष तथा प्रबंध निदेशक के लिए 65 वर्ष निश्चित हुआ। आपने उस समय की कम्पनियों को सुसंगठित किया, कुछ अन्य से बाहर आना सुनिश्चित किया, नई कम्पनियों की स्थापना की तथा कालान्तर में कुछ कम्पनियों का अधिग्रहण भी किया। रतन टाटा ने अपने यशस्वी कार्यकाल के 10 वर्षों के अन्दर ही 32 नई शुरुआतें की।

1993 तक अर्थात् जे. आर. डी. टाटा की मृत्यु तक यह पूरी तरह साफ हो चुका था कि रतन टाटा का टाटा संस के नेतृत्व में समूह की कम्पनियों को संगठित करने की कोशिशों को जे. आर. डी. का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। उदारीकरण के उस दौर में टाटा होल्डिंग कम्पनी ने ग्रुप कम्पनीज जैसे टिस्को (टाटा स्टिल), टाटा केमिकल्स, टेल्को एवं

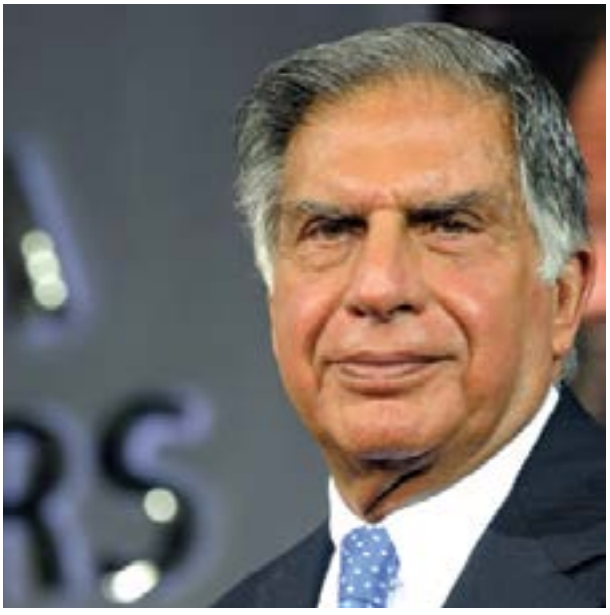

टाटा टी में शनैः-शनैः अपनी भागीदारी का अनुपात बढ़ा दिया। उनके अधीन टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज का सार्वजनिकीकरण हुआ। उसी समय टाटा मोटर्स न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हुआ।

सदी के अन्तिम दशक में कार्य की सुगमता की दृष्टि से टाटा समूह ने अनेक क्षेत्रों यथा-खाद्य तेल, (टोमको), कॉस्मेटिक्स, फार्मास्युटिकल्स, पेंटस् में अपने शेयर बिक्री कर दिये। इसके अतिरिक्त आपने ए. सी. सी., कम्प्यूटर ऐंड टेलीकम्युनिकेशन हार्डवेयर एवं तेल में अपनी परिसम्पत्तियों की भी बिक्री कर दी। आई. बी. एम. टाइमेक्स जैसे संयुक्त उपक्रमों से आप अलग हो गये।

सन् 1990 से 2002 तक आपका फोकस कार, टेलीकॉम, इंश्योरेंस एवं फर्टिलाइजर्स पर था।

21 वीं सदी में टाटा समूह के कार्यक्षेत्र को मुख्यरूप से सात भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. **मैटेरियल्स- जैसे स्टील एवं उन्नत प्लास्टिक्स**
2. **केमिकल्स- इनआर्गेनिक फर्टिलाइजर्स, पेस्टीसाइड्स**
3. **इंजीनियरिंग- ऑटोमोबाइल्स, ऑटोकम्पोनेंट्स, एअर कंडीशनिंग**
4. **एनर्जी- ऊर्जा**
5. **उपभोक्ता वस्तुएँ- चाय, कॉफी, घड़ियाँ**
6. **सेवाएँ- होटल, रिटेल, वित्त सेवाएँ, इंश्योरेंस, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार**
7. **सूचना पद्धतियाँ- सॉफ्टवेयर, औद्योगिक एवं दूरसंचार, ऑटोमेशन एवं दूरसंचार।**

चेयरमैन का उत्तरदायित्व संभालते ही रतन टाटा ने अनेक तकनीकी व्यवसायों को स्थापित किया तथा अनेक उपक्रमों के विकास का लक्ष्य बनाया। जे. आर. डी. के कुशल एवं प्रभावशाली निर्देशन में आप ने टाटा समूह के सम्बन्ध में अपनी कल्पनाओं को मूर्तरूप देना आरम्भ किया। वह एक प्रकार से संक्रमण काल था। उदारीकरण के आरम्भ के साथ ही प्राचीन मान्यताओं एवं व्यवसायों की जगह नई मान्यताएँ एवं नियम स्थापित हो रहे थे। केन्द्रीय औद्योगिक नीति में परिवर्तन तथा व्यक्तिगत उपक्रमों की स्थापना में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने तथा उनके समुचित विकास के लिए आवश्यक वातावरण बनाने हेतु सरकार थी कुछ कोशिश कर रही थी। परिणाम स्वरूप पब्लिक सेक्टर के कुछ क्षेत्र प्राइवेट सेक्टर के लिए खोल दिये गये। कुछ देशों की आर्थिक नीतियाँ बदल चुकी थीं और कुछ में परिवर्तन की बयार बह रही थी। भारत सरकार भी मानकर चल रही थी कि सम्मानजनक एवं उच्च विकास दर हासिल करने के लिए उदार नीतियों की आवश्यकता है।

सरकार की नई सोच और तत्कालीन परिस्थिति का फायदा रतन टाटा को भी प्राप्त हुआ और इसी क्रम में आप ने अनेक नए औद्योगिक क्षेत्रों में अपने कदम आगे बढ़ाए। ध्यातव्य है कि टाटा कन्सल्टेंसी सर्विस की वजह से टाटा समूह की विदेशी उपलब्धियों में उल्लेखनीय बढ़त हुई। इसको रतन टाटा ने ही 90 के दशक में स्थापित किया था। शीघ्र ही यह वैश्विक औद्योगिक क्षितिज पर कन्सल्टेंसी के क्षेत्र में एक सुप्रसिद्ध नाम के रूप में सुस्थापित हो गया।

दूरदर्शी रतन टाटा

जिस समय रतन टाटा ने टाटा संस का नेतृत्व संभाला उस समय न केवल टाटा ग्रुप में बल्कि समूचे देश में प्राचीन प्रचलन को लेकर परिवर्तन की हवा बह रही थी। भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण तथा विश्व अर्थव्यवस्था की सोच में परिवर्तन के अवसरों तथा चुनौतियों का नवीन युग सामने था। आई हुई चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने तथा उपलब्ध अवसरों को सफलता में बदलने के लिए रतन टाटा ने अनेक कदम उठाए।

जब रतन टाटा ने कार्यभार संभाला तो उनकी प्रमुख चुनौती थी, कम्पनियों को एक निर्धारित रूपरेखा के अन्तर्गत लाना जिससे वे एक दिशा में कार्य कर सकें। आप ने कम्पनियों पर अपनी मजबूत पकड़ बनाई। हालांकि, रतन जी ने काफी हद तक कम्पनियों की स्वायत्तता उनके पास ही रहने दिया किन्तु नीतिगत फैसलों में एक शेयर होल्डर होने के नाते उसे एक निश्चित परिणाम तक पहुँचाने का अधिकार अपने हाथ में रखा।

आज टाटा ग्रुप की कम्पनियाँ पारस्परिक रूप से घनिष्ठता के साथ जुड़ी हुई हैं और भविष्य की चुनौतियों से निबटने के लिए स्वयं में सक्षम हैं तथा उन्हें उसी दिशा में अग्रसर किया गया है।

दृढ़ निश्चयी रतन टाटा

1980 तक टाटा केमिकल्स तथा टेल्को की गणना देश की दो सबसे बड़ी कम्पनियों में की जाती थी। 2000-01 में टेल्को के साथ एक अप्रत्याशित घटना घटी, जिसमें रातों रात उसके उत्पादों का बाजार 45 प्रतिशत तक गिर गया। कम्पनी को 500 करोड़ रूपये की हानि हुई। वास्तव में, 1993-1997 तक टेल्को की बिक्री में 7500 करोड़ रूपये की वृद्धि हुई। यह बिक्री तब नीचे गिर गयी जबकि कम्पनी की इण्डिका कार परियोजना में 1700 करोड़ रूपये लग गये थे। ऐसी स्थिति में बिक्री में भारी गिरावट तथा 500 करोड़ रूपये का घाटा कम्पनी तथा उसके कर्मचारियों के लिए बड़ी चुनौती थी। कम्पनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने एकनिष्ठ भाव से निश्चित कर लिया कि उन्हें उस स्थिति से बाहर आना है। सच्चई यह है कि उस स्थिति को कम्पनी के अधिकारी तथा कर्मचारी ही भलीभाँति संभाल सकते थे, क्योंकि उन्हें यह मालूम था कि क्या और कहाँ है तथा उसका हल क्या है?

रतन टाटा ने बड़ी ही सफलता पूर्वक कर्मचारियों की आत्मसम्मान की भावना को कम्पनी के पुनरुत्थान से जोड़ा और सफल एवं सार्थक उपयोग किया। तीसरे वित्त वर्ष में ही यानी 2002-03 में कम्पनी को 500 करोड़ रूपये लाभ की स्थिति में ला दिया। यह उपलब्धि उन दिनों किसी चमत्कार से कम नहीं थी। रतन टाटा ने 1993 में टाटा इंडिका का स्वप्न देखा था जिसे साकार किया उन्होंने 1999 में। रतन जी के सपनों को मूर्तरूप देने के लिए टेल्को के अधिकारियों ने दुनिया के तमाम देशों का दौरा किया। वास्तव में रतन टाटा जी एक ऐसी कार बनाना चाहते थे जो भारत की परिस्थितियों के लिए सर्वथा उपयुक्त हो, अनुकूल हो। इस बड़ी परियोजना से रतन टाटा जी का मानसिक जुड़ाव था। उन्होंने जिस प्रकार इस चुनौती को स्वीकार किया उसी प्रकार, उसी अनुपात में आपने कड़ी मेहनत भी की। आपने उक्त कार को अपने दम पर विकसित किया। वास्तव में इसे एक राष्ट्रीय उपलब्धि के रूप में देखा जाना चाहिए। 1999 में जब इण्डिका शो-रूम से बाहर आई तो कम्पनी के पास 1,15,000/- ऐसी बुकिंग थी जिनमें पूरी रकम अग्रिम भुगतान कर दी गयी थी। इसी से इसकी प्रसिद्धि और लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है। बाद में

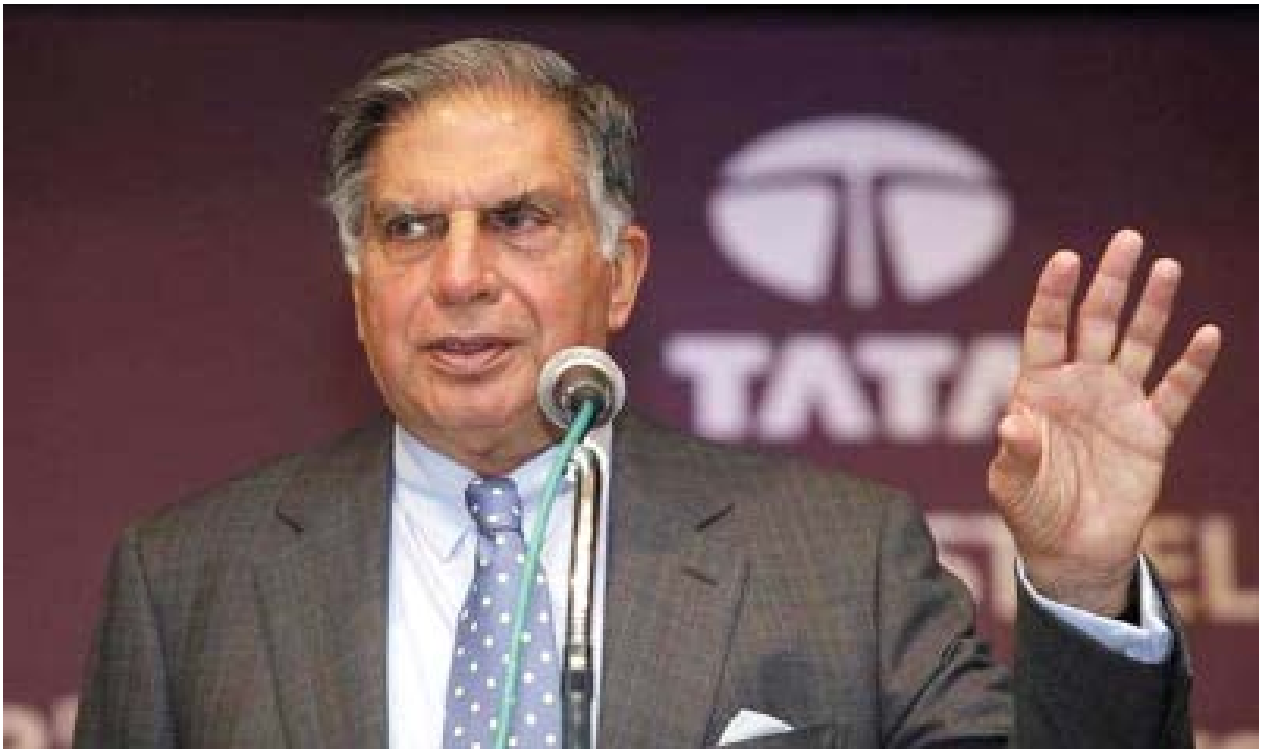

इसमें अनेक सुधार किये गये एवं अनेक अन्य मॉडल जैसे- इंडिका वी 2, इंडिगो, इंडिका सेडान आदि विकसित किये गये।

इसी समय इंग्लैण्ड के रोवर्स को एक वर्ल्ड क्लास कार की आवश्यकता थी। रोवर्स ने टेल्को के साथ इंडिका वी2 को इंग्लैण्ड तथा यूरोपीय महाद्वीप में बिक्री का एग्रीमेंट किया तथा 5 वर्षों में कुल एक लाख कारें सिटी रोवर के नाम से बिक्री होनी थी। इनका प्रथम बैच सन् 2003 में भेजा गया। उदारीकरण से पूर्व टाटा केमिकल देश की अपने क्षेत्र में अग्रणी कम्पनी थी। सन् 1990 में इसकी ओर से तीन नई शुरूआतें हुई। वे शुरूआतें थीं- बबराला फर्टिलाइजर प्लांट, उत्तर प्रदेश, टाटा किसान केन्द्रों की स्थापना एवं ब्रॉन्डेड खाद्य नमक का उत्पादन। बबराला प्लांट 1994 में आरम्भ हुआ। इसमें यूरिया का उत्पादन होना था। इसके साथ ही इसी कामप्लेयन में एक अमोनिया प्लांट भी स्थापित किया गया था। यहाँ उल्लेखनीय है कि बबराला काम्प्लेक्स ने उत्पादन, तकनीक, ऊर्जा संरक्षण तथा संरक्षा के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित किये।

इसके बावजूद चीन से सोडा एश की भारी आवक तथा यूरिया की निश्चित निर्धारित दर में कमी किये जाने के कारण वर्ष 1999 में यहाँ एक विषम परिस्थिति उत्पन्न हो गयी। कम्पनी के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि सन् 2000 में जून में समाप्त तिमाही के लिए हानि घोषित करनी पड़ी।

परिणामत:, एक नई प्रबंधन समिति गठित की गयी। प्रबंधन समिति को प्रसाद मेनन के अधीन कार्य करते हुए इसे कम्पनी की इस स्थिति के लिए जिम्मेदार कारकों पर पुन: ध्यान केन्द्रित करते हुए कम्पनी को नये सिरे से अर्जित करना था। इसने विभिन्न प्रकृति के कुछ नवीन कदम उठाए। उठाए गये कदमों का अपेक्षित प्रभाव पड़ा तथा 2001-02 में लाभ की धनराशि 200 करोड़ हो गयी। यह कर्मठ और दूरदर्शी व्यक्तित्व के स्वामी रतन टाटा जी की कुशाग्र बुद्धि का प्रभाव ही था कि आने वाले खतरों से निबटने के लिए आवश्यक कदम समय से उठा लिए गये तथा टाटा केमिकल्स न केवल स्वयं की पूर्व की स्थिति में वापस आ गयी बल्कि तीव्र गति से दौड़ने लगी।

एक दूसरी घटना टाटा स्टील, जमशेदपुर से सम्बन्धित है। वहाँ की एक समस्या का समाधान रतन जी ने चुटकी बजाते हुए कर दिया था। उदारीकरण के समय में प्रतिस्पर्धा में टिके रहने के लिए टाटा स्टील को नवीनीकरण की सघन आवश्यकता थी। नवीनीकरण के कारण लगभग 35,000/- कर्मचारियों की छंटनी करना आवश्यक था। उन दिनों टाटा स्टील में फैक्ट्री तथा खनन खदानों को मिलाकर 78,000 कर्मचारी थे। इतनी विशाल संख्या में कर्मचारियों की छंटनी पर इसके तात्कालिक दुष्परिणाम से सभी अवगत थे, किन्तु छंटनी भी उतनी ही जरूरी थी। रतन जी की अगुवाई में हानि-लाभ का आकलन किये जाने के बाद यह निष्कर्ष निकला कि यदि कर्मचारियों की छंटनी हेतु कुछ आकर्षक शर्तें रखी जायं तो समस्या आसानी से हल की जा सकती है। इन शर्तों से पड़ने वाले विपरीत प्रभावों को आधुनिकीकरण के कुछ ही सालों में खत्म कर लिया जाएगा। इस प्रकार यह एक प्रकार से फायदे का ही सौदा होगा। स्वैच्छिक अवकाश की शर्तें इतनी आकर्षक थीं कि भारी संख्या में कर्मचारियों ने अवकाश के लिए आवेदन प्रस्तुत किये और जल्द ही अतिरिक्त कर्मचारियों से कम्पनी को मुक्ति मिल गई। यह सब बहुत ही आसानी पूर्वक औद्योगिक सौहार्द्र बनाकर प्राप्त किया गया। इन्हीं कारणों से टाटा स्टील आगामी वर्षों में न केवल प्रतिस्पर्धा में टिका रहा अपितु काफी आगे निकल गया।

इसके अलावा कई स्टील कम्पनियों का अधिग्रहण करने में भी सफलता मिली।

रतन टाटा जी के दृढ़ निश्चयी स्वभाव एवं इरादे का दर्शन सिंगूर भूमि अधिग्रहण विवाद मामले से भी होता है, जहाँ कुछ लोगों की आवश्यक जिद के सामने आप नहीं झुके बल्कि वहाँ से हट गये।

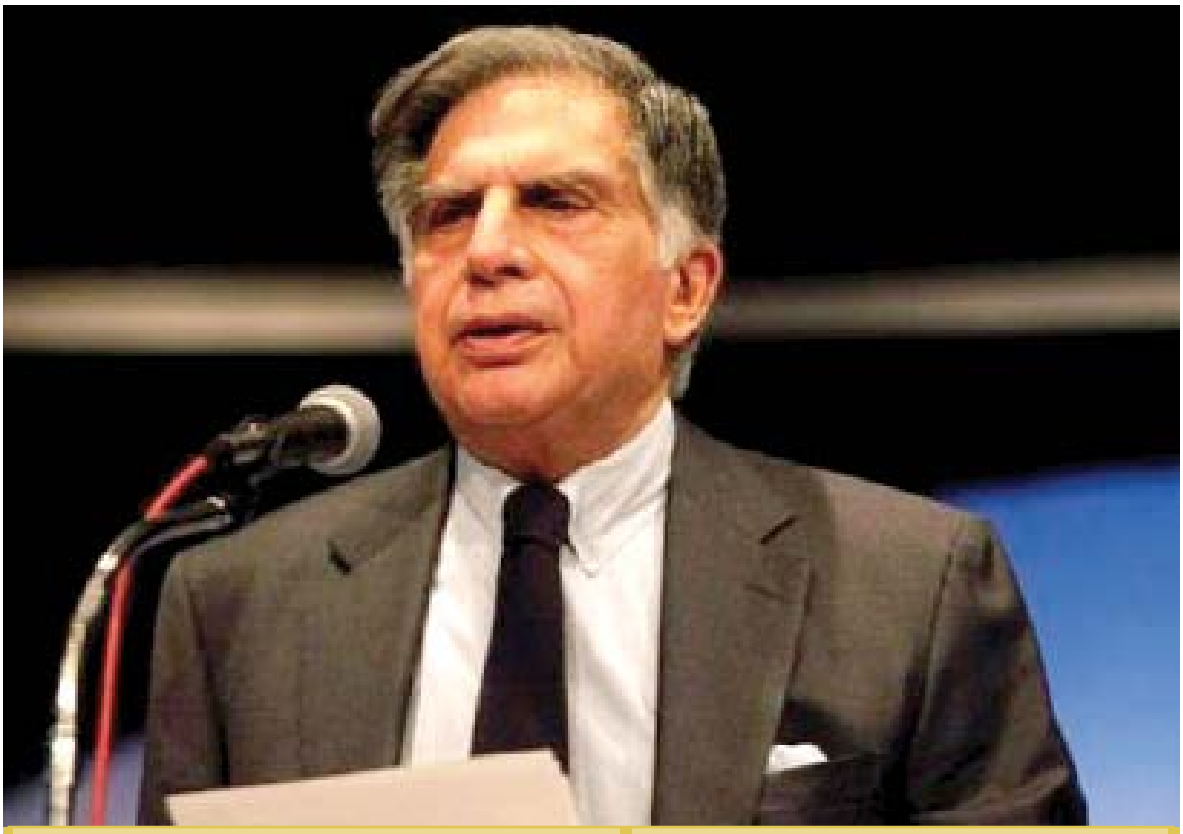

रतन टाटा को प्राप्त सम्मान

- 26 जनवरी, 2008 को आपको भारत सरकार द्वारा देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।
- सन् 2008 में ही रतन जी को नैसकॉम ग्लोबल लीडरशिप अवॉर्ड 2008 से सम्मानित किया गया।
- सन् 2007 में रतन टाटा ने टाटा परिवार की तरफ से कॉर्नेगी मेडल ऑफ फिलांथ्रोपी सम्मान प्राप्त किया।
- सन् 2006 में कार्नेल विश्व विद्यालय ने आपको २६ वें रॉबर्ट एस. हेटफील्ड फैलो इन इकोनॉमिक्स से सम्मानित किया।
- सन् 2004 में रतन टाटा को चीन में **आनरेरी इकोनॉमिक एडवाइजर टू हेंगजवाऊ सिटी** की पदवी प्रदान की गई।
- लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एवं इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, खड़गपुर से उन्हें आनरेरी डॉक्टरेट की उपाधियाँ मिलीं।
- मई, 2008 में टाइम मैगजीन की दुनिया के 100 प्रभावशाली लोगों की सूची में रतन टाटा जी को स्थान प्राप्त हुआ।
- 29 अगस्त, 2008 को सिंगापुर की सरकार ने रतन टाटा को ऑनरेरी सिटिजन शिप (नागरिकता) प्रदान की। यह सम्मान उन्हें सिंगापुर के विकास में उनके योगदान के लिए प्रदान किया गया।

प्राप्त सदस्यताएँ

- सदस्य, प्रधानमंत्री परिषद, व्यापार एवं उद्योग
- सदस्य एडवाइजरी बोर्ड, मित्सुबिशी कॉरपोरेशन
- सदस्य, अमेरिकी अंतर्राष्ट्रीय ग्रुप, जे. पी. मोर्गन एवं बूज ऐलन हेमिल्टन।
- सदस्य, बोर्ड ऑफ स्टडीज टैंड कॉरपोरेशन
- सदस्य, यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलीफोर्निया, कार्नेल यूनिवर्सिटी।
- सदस्य, दक्षिण अफ्रीका इंटरनेशनल इंवेस्टमेंट कौंसिल
- सदस्य, न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज में एशिया पैसेफिक एडवाइजरी कमेटी।
- अध्यक्ष, भारतीय विज्ञान संस्थान, कोर्ट, बंगलोर
- सचिव, प्रबंध समिति, टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, मुम्बई।
- सदस्य, ग्लोबल बिजनेस कौंसिल ऑफ एचआईवी, भारत में एड्स के प्रति जागरूकता पैदा करने सम्बन्धी कार्यों के लिए।

इसके अलावा रतन टाटा जी अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से जुड़कर देश– दुनियां एवं मानवता की अप्रतिम सेवा कर रहे हैं।

नटराजन चंद्रशेखरन
कार्यकारी अध्यक्ष
टाटा समूह

कुशल औद्योगिक रणनीतिकार
नटराजन चंद्रशेखरन

नटराजन चंद्रशेखरन वर्तमान में टाटा समूह के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। श्री चंद्रशेखरन ने कुशल औद्योगिक रणनीति और व्यावसायिक कुशाग्रता के माध्यम से टाटा समूह की औद्योगिक उपस्थिति को व्यापक स्तर पर आगे बढ़ाने का काम किया है। श्री चंद्रशेखरन को टाटा समूह में एक दूरदर्शी लीडर के रूप में देखा जाता है। टाटा समूह के चेयरमैन के रूप में वह जिस शानदार तरीके से अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं, वह अपने आप में अत्यंत सराहनीय है। इतने विशाल औद्योगिक समूह का नेतृत्व करना कोई आसान काम नहीं है। आज चंद्रशेखरन टाटा समूह की 100 से अधिक कंपनियों के संचालक हैं, जिनका कुल व्यवसाय 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है। वे 2016 में टाटा समूह के बोर्ड में शामिल हुए और जनवरी 2017 में उन्हें समूह का चेयरमैन नियुक्त किया गया।

चंद्रशेखरन टाटा स्टील, टाटा मोटर्स, टाटा पॉवर, टाटा ग्लोबल बेवरेजेस लिमिटेड, इंडियन होटल्स कंपनी लिमिटेड और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) सहित कई समूह संचालन कंपनियों के बोर्डों की भी अध्यक्षता करते हैं। इन सभी में वे 2009-17 के दौरान मुख्य कार्यकारी अधिकारी थे। टाटा समूह की कंपनियों में संयुक्त रूप से बाजार पूंजीकरण के साथ 29 सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध निगम शामिल हैं जो 2017 की शुरुआत में 120 बिलियन डॉलर से अधिक थे।

श्री चंद्रशेखरन यूनिवर्सिटी में पढ़ाई के दौरान ही टीसीएस में शामिल हुए। उसके बाद 30 सालों तक अलग-अलग पदों पर काम करने के बाद उन्हें दुनिया की सबसे बड़ी आईटी समाधान और परामर्श देने वाली कंपनी टीसीएस का चेयरमैन बनाया गया। टाटा समूह में अपने पेशेवर कैरियर के अलावा, चंद्रा को 2016 में भारतीय रिजर्व बैंक के निदेशक मंडल के सदस्य के रूप में भी नियुक्त किया गया था। 2018 में श्री चंद्रशेखरन को सिंगापुर के आर्थिक विकास बोर्ड के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार परिषद में नियुक्त किया गया। चंद्रशेखरन भारतीय प्रबंधन संस्थान, लखनऊ के अध्यक्ष होने के साथ-साथ भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु में जूरी के अध्यक्ष भी हैं। वह बोकोनी यूनिवर्सिटी के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार परिषद के सदस्य और भारत अमेरिका सीईओ फोरम के उपाध्यक्ष भी हैं।

श्री चंद्रशेखरन को राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी विश्वविद्यालयों द्वारा कई मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया है। इनमें मैक्वेरी विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया के एक डॉक्टरेट ऑफ.लेटर्स और रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज, त्रिची, तमिलनाडु के डॉक्टर ऑफ लेटर्स शामिल हैं, जहाँ उन्होंने 1987 में कंप्यूटर एप्लीकेशन में मास्टर्स की डिग्री पूरी की थी।

(प्रस्तुति: अभ्युदय वात्सल्यम्)

◆◆◆

कर्मयोगी

स्व० धीरूभाई अम्बानी

संस्थापक - अध्यक्ष, रिलांयस इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

किशोरावस्था में स्व.धीरूभाई अम्बानी अनंत की ऊचाइयाँ छूने के लिए मचल उठे और इस क्रम में उन्होंने विदेशी धरती पर अपने पाँव रखे। देश स्वतंत्र हो चुका था और स्वतंत्रता के रथ पर सवार होकर भारत के भविष्य का महारथी निकल पड़ा अपने महाभियान पर।

Reliance
Industries Limited

परमात्मा की लीला विचित्र होती है और कभी-कभी तो परम विचित्र होती है। वह किसको निमित्त बनाकर क्या करना चाहता है, यह वही जाने । उसकी लीला अपरम्पार है । हाँ, इतना अवश्य है कि वह अपनी लीलाओं को बिल्कुल सुपात्र और सुयोग्य विभूतियों के माध्यम से सम्पन्न कराता है और उस विभूति के व्यक्तित्व में स्वयं का ही विशिष्ट प्रकाश प्रदान कर लोकहित सिद्ध करता है, अपनी महती अनुकम्पा प्रदान कर महान विभूति के माध्यम से महान कार्य सम्पन्न कराता है। परमात्मा सामान्य से दिखने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व में विशिष्ट गुणों, विचारों एवं परम पुरुषार्थ की उदात्त भावना व शक्ति का संचार कर उन्हें युग-पुरुष के रूप में स्थापित करता है, जिससे युग प्रेरणा प्राप्त करता है । कर्म की गति बहुत गहन होती है । ईमानदारी, सच्ची लगन, निष्ठा और उत्कट पुरुषार्थ को धारण कर यदि पूर्ण मनोयोग से जीवन में कोई भी कार्य किया जाय तो संसार में कुछ भी असंभव नहीं है । अर्थात् - वह सब कुछ सहज संभव है जिसे मनुष्य प्राप्त करना चाहता है, वह अपने लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त कर सकता है। ऐसे कर्मयोगी व्यक्तित्व स्वयं का गगनोन्नत उत्थान तो करते ही हैं, साथ ही साथ समाज, राष्ट्र व संसार की प्रगति व उत्थान में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, वे हमारे पथ प्रदर्शक बन जाते हैं, प्रेरणा स्रोत बन जाते हैं। ऐसे ही कर्मयोगी थे स्व० श्री धीरूभाई अम्बानी जी जो एक साधारण व्यक्ति के स्तर से ऊपर उठकर अंतरराष्ट्रीय

औद्योगिक जगत की महान हस्ती बन गये । श्रीमद्भगद्गीता के सार तत्व को अपने जीवन आचरण में उतार कर इस कर्ययोगी ने वैश्विक औद्योगिक जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और व्यापक पैमाने पर बहुविधि समाज व राष्ट्र की महान सेवा की । स्व० धीरूभाई अम्बानी के ज्येष्ठ पुत्र मुकेश अम्बानी भी अपने पिता की ही भाँति कर्मठता की साक्षात् प्रतिमूर्ति प्रतीत होते हैं। स्व० धीरूभाई अम्बानी ने उद्योग का विशाल साम्राज्य स्थापित किया तो आपके सुयोग्य व कर्मठ पुत्र मुकेश भाई अम्बानी ने विश्व विजयी महान सिकंदर की भांति पिता द्वारा स्थापित औद्योगिक साम्राज्य को और अधिक ऊंचाई प्रदान किया, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक विस्तार दिया । संसार के 13 वें सर्वाधिक अमीर व्यक्ति और भारत के सबसे अमीर व्यक्ति, भारतीय उद्योगपतियों के शहंशाह श्री मुकेश अम्बानी रिलायंस इण्डस्ट्रीज के संस्थापक स्व० धीरूभाई अम्बानी के कर्मयोग की तपस्या से उद्भूत महान सफलता और सुयश को सतत् अग्रसर किये हुए हैं।

कर्मयोगी स्व० श्री धीरूभाई अम्बानी की प्रेरणाप्रदायी यशस्वी जीवनयात्रा का संक्षिप्त वृतान्त प्रस्तुत करना अत्यावश्यक है।

सिंधी वंश भारत का एक धार्मिक-सामाजिक जातीय समूह है

सिंध की पावन धरती से अम्बानी परिवार के श्रेष्ठ पुरुष का गुजरात की तपोभूमि पर हुआ पदार्पण अम्बानी परिवार के लिए ही नहीं अपितु भारत और सम्पूर्ण विश्व के लिए सुफलदायी सिद्ध हुआ । वर्तमान का सिंध जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है भारत विभाजन के पूर्व वह अखण्ड भारत का अभिन्न अंग था, वह देश का उत्तर-पश्चिमी प्रांत था । **सिंधी वंश** भारत का एक धार्मिक-सामाजिक जातीय समूह है जिसका व्यापार, शिक्षा एवं देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है । सिंध से गोर्धन भाई अम्बानी का परिवार आज के गुजरात प्रांत के जूनागढ़ के चोरवाड़ में आकर बस गया । गोर्धन भाई सिंधी समुदाय की एक जाति मोधबनियां वंश के थे । वैश्विक औद्योगिक जगत में आप को बेतहासा सफलता व सुयश प्राप्त हुआ । स्व. धीरूभाई अम्बानी ने अपनी मेधा शक्ति, दूरदर्शिता, पुरुषार्थ, लगन,कर्मठता एवं व्यावसायिक कार्य कुशलता से सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया और आज आप द्वारा बीजारोपित औद्योगिक प्रतिष्ठान रिलायंस इन्डस्ट्रीज लिमिटेड **महावट वृक्ष** बनकर सम्पूर्ण विश्व को आच्छादित किये हुए है।

धन-कुबेर बनने की पृष्ठभूमि

छोटे से बीज में बहुत बड़ा आकार छिपा होता है। बालक के रूप में ही धीरूभाई अम्बानी ने अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दे दिया था, उन्होंने अपने क्रिया-कलापों से सिद्ध कर दिया था कि वे बालक नहीं

हैं बल्कि भविष्य के औद्योगिक पितामह हैं, उद्योगाधिपति हैं। जिस उम्र में बालकों के अंदर खेलने-कूदने, मौज मस्ती करने की भावना, रुचि व इच्छा होती है, उस उम्र में धीरूभाई अम्बानी से ईश्वर ने उनके धन-कुबेर बनने की पृष्ठभूमि में व्यावसायिक श्रीगणेश करवाया । किशोरावस्था में ही धीरूभाई ने व्यवसाय की शुरूआत कर दी । वे सप्ताह के अंत में (शनिवार-रविवार को) गिरनार की पहाड़ियों पर तीर्थयात्रियों को पकौड़े खिलाकर (बेचकर) धार्मिक, आर्थिक लाभ कमाने लगे। परमात्मा ने बाल्यकाल में ही धीरूभाई अम्बानी से पर्याप्त तपस्या करा ली थी। महान विभूतियों के जीवन में कुछ ऐसी ही घटनाएं होती हैं जो प्राय: सर्व सामान्य के जीवन में नहीं होतीं। इसीलिए बाल्यकाल में ही धीरूभाई अम्बानी का शुरू हुआ तपस्यापूर्ण व्यावसायिक सफर आगे **उद्योगाधिपति** के रूप में उन्हें प्रतिष्ठापित करने का आधार सिद्ध हुआ ।

सच्ची लगन, परिश्रम और कर्तव्यनिष्ठा

किशोरावस्था में स्व.धीरूभाई अम्बानी अनंत की ऊचाइयाँ छूने के लिए मचल उठे और इस क्रम में उन्होंने विदेशी धरती पर अपने पाँव रखे । देश स्वतंत्र हो चुका था और स्वतंत्रता के रथ पर सवार होकर भारत के भविष्य का महारथी निकल पड़ा अपने महाभियान पर। भारत को स्वतंत्रता मिलने के एक वर्ष पश्चात् अर्थात् सन् 1948 में मात्र 16 वर्ष की उम्र में धनोपार्जन की इच्छा से धीरूभाई यमन गये। यमन में धीरूभाई ने ए. बेस्सी एण्ड कम्पनी (A Bessi and Company) में उस समय तीन सौ रूपये मासिक वेतन पर कार्य शुरू किया। सच्ची लगन, परिश्रम और कर्तव्यनिष्ठा के परिणामस्वरूप मात्र दो वर्ष की अवधि के अन्दर ही ए. बेस्सी

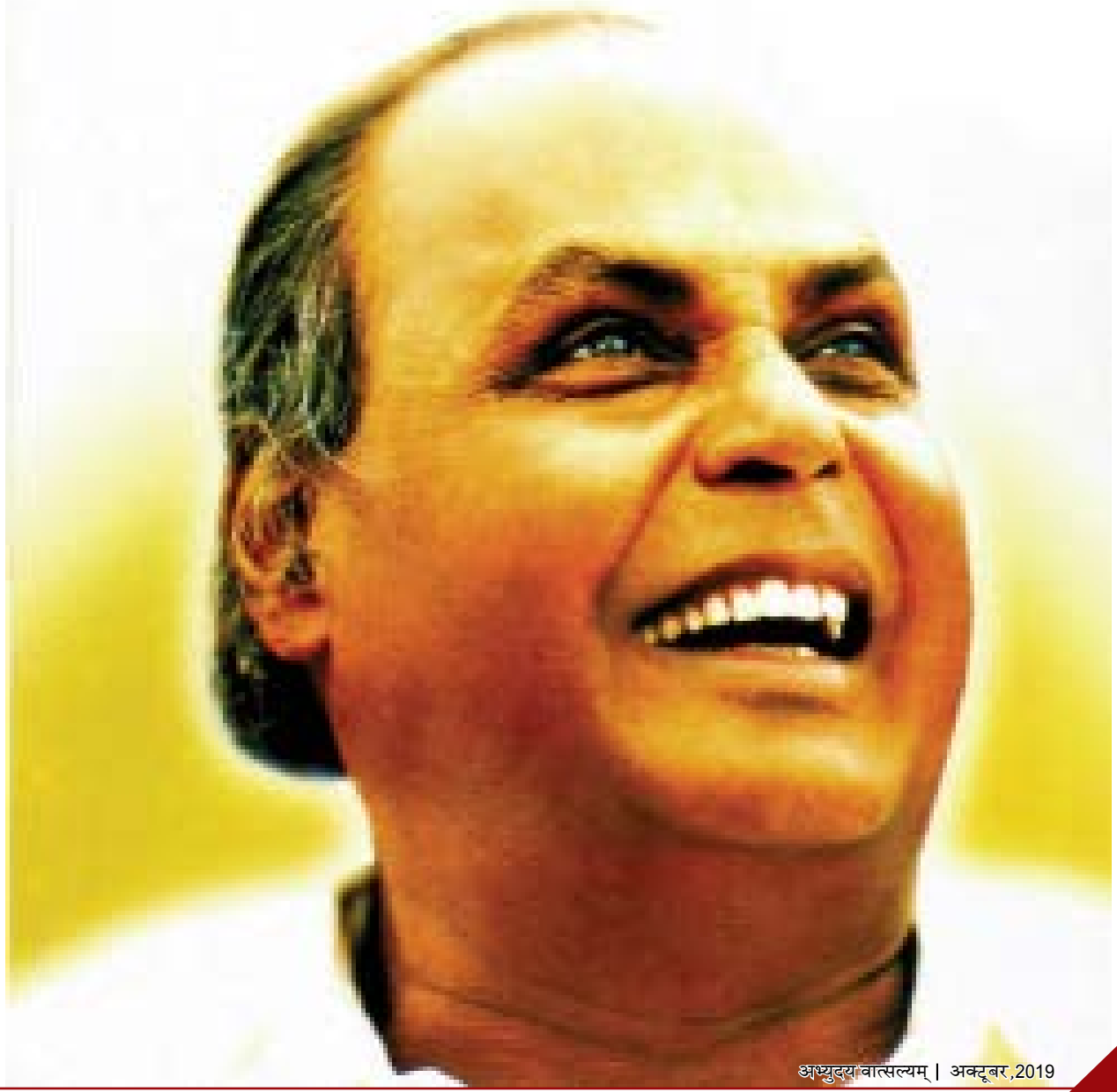

एण्ड कम्पनी शेल (SHELL) उत्पादन के वितरक के रूप में नियुक्त हुए और एडडन के बंदरगाह के एक फिलिंग स्टेशन के मैनेजर के रूप में पदोन्नत हुए । श्री धीरूभाई अम्बानी ने अपने महाभियान का प्रथम चरण बहुत ही कुशलता पूर्वक पूर्ण किया और आत्मविश्वास से परिपूर्ण उनका व्यक्तित्व चमत्कृत हो उठा।

धीरूभाई को स्वयं पर, अपने-सपनों पर और उन सपनों के साकार होने पर पूरा भरोसा था

लक्ष्मी स्वरूपा कोकिलाबेन जी के साथ आपका शुभ विवाह भी अत्यंत शुभदायी व शौभाग्यशाली सिद्ध हुआ। विवाह के पश्चात् आप लगभग यमन में ही रहने लगे । 24 वर्ष की उम्र में मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त श्री धीरूभाई बर्मा शैल प्रोडक्ट कम्पनी के जनरल मार्केटिंग मैनेजर बन गये। अपनी कर्तव्यपरायणता एवं अद्वितीय प्रतिभा के बल पर धीरूभाई यह महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये । बर्माशेल कम्पनी के यहूदी मालिक ने सबसे पहले उनकी विलक्षण प्रतिभा को पहचाना और अपनी कम्पनी की प्रगति के लिए, उस विलक्षण प्रतिभा के प्रयोग के लिए उच्च पद प्रदान किया । धीरूभाई की प्रखर प्रतिभा को तो यहूदी कम्पनी मालिक ने पहचाना किन्तु उस विलक्षण प्रतिभा सम्पन श्रेष्ठ मानव की भावी योजनाओं, सपनों को नहीं पहचान पाया और न यही पहचान सका कि श्री धीरूभाई किसी के नौकर नहीं बल्कि मालिक बनने के लिए पैदा हुए थे ।

धीरूभाई को स्वयं पर, अपने-सपनों पर और उन सपनों के साकार होने पर पूरा भरोसा था । आपकी जगह यदि दूसरा कोई व्यक्ति होता तो शायद वह कम्पनी द्वारा प्रदान किये गये उच्च पद और सुविधा सम्पन्न जीवन के व्यामोह का त्याग नहीं कर पाता । इसीलिए सन् 1959 में जब धीरूभाई ने कम्पनी से इस्तीफा देकर भारत आने का निर्णय लिया तो किसी को विश्वास ही नहीं हुआ । धीरूभाई को किसी को विश्वास दिलाने की आवश्यकता ही नहीं थी क्योंकि उन्हें स्वयं पर पूर्ण विश्वास था । उनका स्वयं पर पूर्ण विश्वास होना ही उन्हें साधारण मानव से अलग सिद्ध करने के लिए काफी था । धीरूभाई के व्यक्तित्व में आत्म विश्वास और सर्वथा उचित समय पर निर्यण लेने की विलक्षण क्षमता कूट-कूट कर भरी हुई थी, उन्होंने समय-समय पर अपने जीवन के महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी निर्णयों से यह सिद्ध कर दिया था ।

अल्प पूँजी से आपने रिलायंस कामर्शियल कॉरपोरेशन की नींव रखी

भारत की धरती पर अपना व्यावसायिक साम्राज्य खड़ा करने के क्रम में धीरूभाई अम्बानी ने स्वयं का व्यवसाय शुरू करने का निर्णय किया । सन 1959 में 25 वर्षीय धीरूभाई अम्बानी पत्नी और बच्चे सहित भारत वापस आ गये । मात्र कुछ रूपये की अल्प पूँजी से आपने रिलायंस कामर्शियल कॉरपोरेशन की नींव रखी और उसके माध्यम से अदरक, हल्दी, इलायची तथा कपड़ों का निर्यात शुरू किया । इसके अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की मांग होने पर उसका भी निर्यात किया जाता था

। उस समय शायद किसी को भी अनुमान नहीं रहा होगा कि कमोडिटी ट्रेडिंग और एक्सपोर्ट हाउस जैसे इस कार्य से शुरूआत करने वाला कभी संसार का धनकुबेर बन जायेगा । लघुता में ही गुरुता होती है। छोटे पैमाने पर शुरू हुआ रिलायंस कॉमर्शियल कॉरपोरेशन का निर्यात व्यवसाय धीरूभाई के सुयोग्य नेतृत्व में फलने-फूलने लगा और अन्ततः सुफलदायी सिद्ध हुआ।

एक बेहद महत्वाकाँक्षी परियोजना

धीरूभाई अम्बानी आत्म विश्वास, उमंग और उत्साह से परिपूर्ण एक दूरदर्शी व्यक्तित्व के स्वामी थे। इसीलिए उन्होंने अपने व्यावसायिक यात्रा के अगले चरण के शुभारंभ के लिए गुजरात की पावन भूमि को चुना, जो उनके दृष्टिकोण से पूर्णतया अनुकूल था। अपनी व्यावसायिक कामयाबी से उत्साहित धीरूभाई ने सन् 1966 में अपनी प्रबल महत्वाकांक्षी योजना को मूर्तरूप दिया मात्र 15,000 की पूंजी के बल पर अहमदाबाद के नरोदा में कपड़ा मिल की स्थापना करके । इसके बाद तो उन पर भगवान की असीम कृपा हुई और फिर उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा, नित-नई बुलदियों को छूने लगे । एक के बाद एक योजनाएं सफल होती गईं और धीरूभाई ने रिलायंस नाम को न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व में सुप्रसिद्ध कर दिया । आत्मविश्वासी, साहसी एवं कर्मठ व्यक्ति के लिए ईश्वर की कृपा से क्या नहीं संभव हो जाता है। ईश्वर की कृपा से श्री धीरूभाई अम्बानी की योग्यता - पात्रता और योजनाओं को चमत्कारी पंख मिल गये और अनंत की उड़ान भरने के लिए तैयार हो गये।

युग पर अमिट छाप

आपके साहस, समर्पण,दूरदर्शिता, त्याग, लगन और संघर्ष का यहाँ वर्णन कर पाना संभव नहीं है। इतना ही कहा जा सकता है कि धीरूभाई अम्बानी भगवान द्वारा प्रदत्त इस संसार को अनुपम उपहार थे, जिन्होंने युग पर एक गहरी छाप छोड़ी । युग पर उन्हीं महापुरुषों का अमिट प्रभाव रहता है, जो अपनी जीवन यात्रा में संसार को दिशा-दिखाते हैं, समाज-देश, विश्व का उद्धार करते हैं और निःस्वार्थ भाव से सबकी सेवा करते हुए अपने जीवन के उद्देश्यों को पूर्ण कर मानवता के लिए अमर संदेश प्रदान करते हैं।

संसार से विदा हुए

अपनी जीवन लीला पूर्ण करके प्रत्येक प्राणी को संसार से विदा लेना पड़ता है। इसी शाश्वत सत्य की स्थापित अनादि कालीन परम्परा के अनुसार धीरूभाई अम्बानी की जीवन यात्रा पूर्ण होने को आई। धीरज लाल हीराचंद अम्बानी (धीरूभाई) 6 जुलाई, 2002 को 69 की आयु में ब्रीच केंडी अस्पताल में मध्यरात्रि 11.50 बजे ब्रम्हलीन हो गये । अपनी विलक्षण प्रतिभा से सम्पूर्ण विश्व को चमत्कृत व आश्चर्य चकित कर देने वाले औद्योगिक जगत के बादशाह आज हम सबके लिए प्रेरणा के स्रोत हैं, हम सब के पथ प्रदर्थक हैं। धीरूभाई अम्बानी जैसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी युगों-युगों में कभी एकाध बार ही पैदा होते हैं। श्री धीरूभाई पर राष्ट्र और विश्व को गर्व है। महाप्राण को कोटिशः नमन्! हार्दिक आदरांजलि, श्रद्धांजलि, पुष्पांजलि!

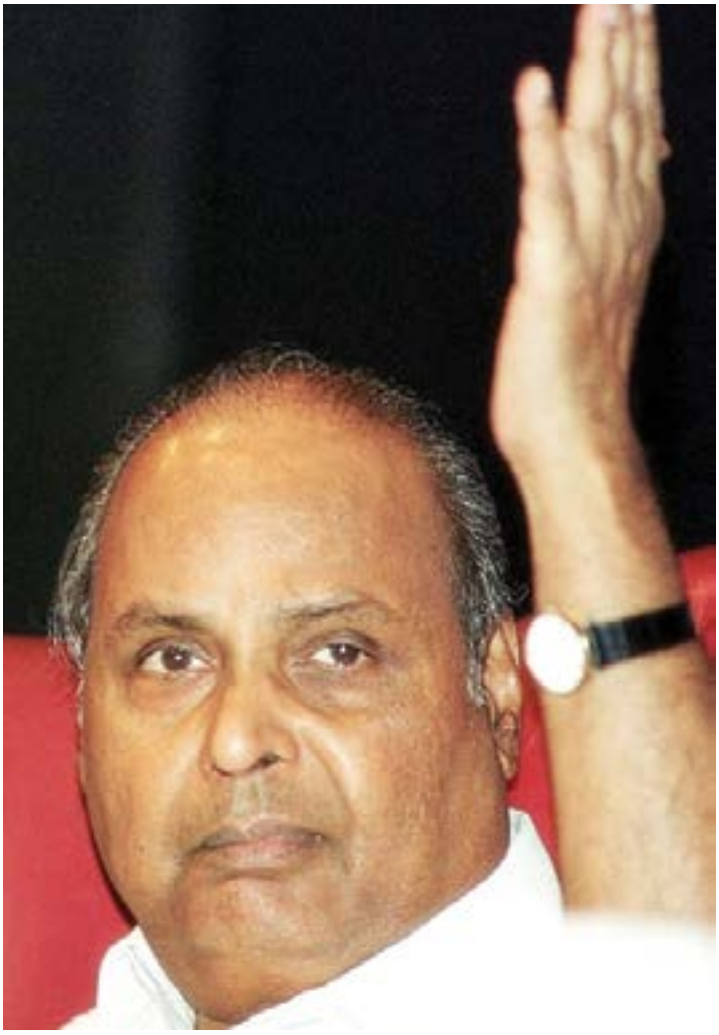

उपलब्धियों पर हुए सम्मानित धीरूभाई अम्बानी

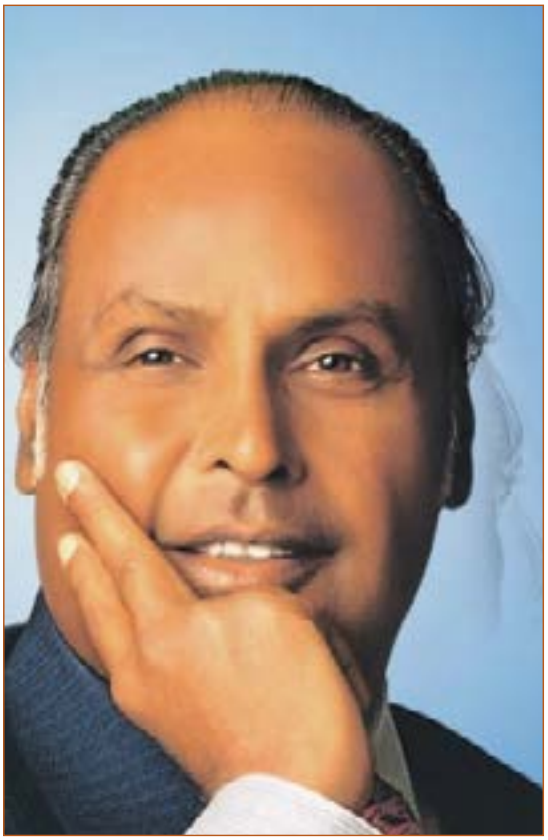

- 'बिजनेस इण्डिया मैगजीन' द्वारा धीरूभाई को वर्ष **1993** के लिए 'बिजनेसमैन ऑफ द इयर'**1993** घोषित किया गया ।
- फाइबर आधारित उद्योगों की वृद्धि में योगदान करने वाले पचास व्यक्तियों को यूनाइटेड किंगडम की 'कम्पैनियम मेम्बरशिप' से सम्मानित किए जाने की परम्परा रही है। धीरूभाई को **1994** में टेक्सटाइल्स इंस्टीट्यूट की सदस्यता करके सम्मान प्रदान किया गया ।
- बिजनेस वीक, यू.एस. ए. द्वारा जून **1998** में 'स्टार ऑफ एशिया' का खिताब देकर सम्मानित किया गया ।
- अग्रणीयता का विलक्षण उदाहरण स्थापित करने हेतु जून **1998** में पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के वॉरटन बिजनेस स्कूल द्वारा भी 'डीन्स मेडल' से सम्मानित किया गया ।
- भारत के 'दि टाइम्स ऑफ इण्डिया' द्वारा जुलाई, **1999** में टाइम्स कॉमर्शियल के मतदान में धीरूभाई को 'सर्वाधिक प्रशंसनीय भारतीय बिजनेस लीडर' घोषित किया गया ।
- धीरूभाई अम्बानी **1999** में बिजनेस बेरेन्ज की पावर **-50** की सूची में शामिल किए गए। यह सूची राजनीति, उद्योग और अर्थव्यवस्था से संबंध रखने वाले **50** सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तियों को शामिल करके बनाई जाती है।
- दिसम्बर **1999** में ही भारतीय उद्योग व पूंजी बाजार के विकास में विलक्षण उपलब्धियों में हिस्सेदारी के लिए उन्हें इंडियन मर्चेण्ट्स चैम्बर द्वारा 'बीसवीं सदी के विलक्षण स्वप्नद्रष्टा' के रूप में चयनित किया गया ।
- 'इण्डिया टुडे' ने जनवरी **2000** में 'बीसवीं सदी में भारत का आकार गढ़ने वाले सौ व्यक्ति के शीर्षक से अपने शताब्दी संस्करण में धीरूभाई को **वित्तीय समता के रचयिता** के रूप में चयनित कर सम्मान दिया ।
- जनवरी 2000 में ही **दि टाइम्स ऑफ इण्डिया** के पोल में 'सम्पत्ति स्रष्टा' के रूप में धीरूभाई को सर्वाधिक मत- समर्थन प्राप्त हुआ।
- 'लीजेण्ड्स सेलिब्रेशन ऑफ एक्सीलेंस' के रूप में जनवरी **2000** में 'जी नेटवर्क' द्वारा प्रायोजित तथा अर्नेस्ट एण्ड यंग द्वारा बिजनेस व इकॉनॉमिक्स के क्षेत्र में धीरूभाई को सहस्राब्दी के 'सर्वाधिक प्रशंसनीय भारतीय' के रूप में मतदान द्वारा विजेता घोषित किया गया ।
- 'एशिया वीक' मैगजीन ने **2000** में पुन: 'पावर – **50**' एशिया के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तियों में धीरूभाई के नाम को सम्मिलित कर सम्मान प्रदान किया ।
- 'बीसवीं सदी का भारतीय उद्यमी' के नाम से फिक्की (FICCI) द्वारा अवॉर्ड प्रदान किया जाता है, जो मार्च **2000** में धीरूभाई को विलक्षण उद्यमिता की रचनाशीलता हेतु प्रदान किया गया ।
- धीरूभाई को नवम्बर **2000** में केमटक फाउण्डेशन तथा केमिकल इंजीनियरिंग वर्ल्ड द्वारा **मैन ऑफ दि सेन्चुरी अवॉर्ड** से सम्मानित किया गया । यह अवॉर्ड केमिकल उद्योग की प्रगति में असाधारण प्रदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है।
- ग्रेटर मुम्बई नगर महापालिका द्वारा दिसम्बर – **2000** में सिविल रिसेप्शन में प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया गया ।
- भारत वर्ष के सबसे अधिक प्रशंसनीय **CEO** के रूप में धीरूभाई को तीन बार जून **1999, 2000, 2001** में सम्मानित किया गया । यह सम्मान बिजनेस बैरन्ज तथा टेलर नेलसन सोर्फूल द्वारा किए जाने वाले सर्वेक्षण पर आधारित होता है।
- 'दि इकॉनॉमिक टाइम्स' द्वारा दिया जाने वाला अवॉर्ड **व्यावसायिक उत्तमता में जीवनकालिक उपलब्धि** अगस्त २००२ में धीरूभाई को प्रदान कर सम्मानित किया गया।
- इण्डिया **H.R.D.** कांग्रेस द्वारा **जीवनकाल उपलब्धि** सम्मान भी फरवरी २००२ में धीरूभाई को प्राप्त हुआ।

Pitambari Products Pvt. Ltd.
Thane: 022 - 6703 5555, CRM: 022 - 6703 5564, 5699, Maharashtra: 8451907123, 8450971400, 9921001222, 7720099854, 7720099853, 7888002366,
CIN: U24239MH1989PTC051314, Toll Free: 18001031299, Now Shop Online On: www.pitambari.com/shop & www.amazon.in

With Best Compliments

From

Mr. Chandan Agarwal

Chairman & Managing Director

G.D.Goenka Public School- Kanpur & Bareilly

Address : HS-1, NRI City, Mainawati Marg, Kanpur-208017(U.P.).

अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक जगत के दिग्गज

मुकेश अम्बानी

मुकेश अम्बानी
चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर
रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड

मुकेश जी एक कुशल रणनीतिकार होने के साथ-साथ दूरदर्शी व्यक्तित्व के स्वामी हैं और समय की सही नब्ज को पहचानने वाले विवेक वान और गम्भीर संकल्प-संयोजना में सिद्धहस्त हैं और अनथक परिश्रम करने वाले महान औद्योगिक योद्धा हैं।

धीरूभाई अम्बानी पिता के रूप में एक युयोग्य और परम पुरूषार्थी पिता थे। दूरदर्शिता, कर्मठता, कर्तव्य परायणता, विनम्रता और कठोर परिश्रम तथा लक्ष्य की ओर एकाग्रता पूर्वक सतत् आगे बढ़ते रहना आपके सुविशाल व्यक्तित्व के प्रमुख गुण थे । पिता की भांति श्री मुकेश अम्बानी के व्यक्तित्व में भी इन्हीं गुणों का समावेश है। श्रीमती कोकिलाबेन धीरूभाई अम्बानी की पावन कोख से उनकी प्रथम संतान मुकेश का जन्म 19 अप्रैल, 1957 को हुआ। अत्यंत शांतिपूर्ण ढंग से प्रशासनिक कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न कर लेने में स्वयं सिद्ध मुकेश बाल्यावस्था से ही मितभाषी और थोड़े संकोची स्वभाव के हैं। वे बातचीत से अधिक कार्य को पूर्ण हुआ देखना चाहते हैं । मुकेश जी स्वभाव से ही दृढ़ विचार के हैं, यदि किसी कार्य को करने का निर्णय ले लिया गया तो उसे पूर्ण कर ही लिया जाना चाहिए । वैचारिक व निर्णयात्मक दृढ़ता आपके व्यक्तित्व का विशिष्ट गुण है । मुकेश जी ने पिता स्व० धीरूभाई अंबानी जी की संघर्षपूर्ण जीवन गाथा को बहुत करीब से देखा है (क्योंकि उनकी बाल्यावस्था भी समृद्धि में नहीं गुजरी थी), उसमें साझीदार रहे हैं। यही कारण है कि मुकेश जी के व्यक्तित्व में कठोर परिश्रम, संघर्ष और जुझारूपन संस्कार रूप में व्याप्त है । धीरूभाई अम्बानी कहते थे – मैं गीता पढ़ने में नहीं उसमें जीने में विश्वास करता हूँ । धीरूभाई अपने उक्त कथन के अनुसार ही कर्मयोग में आचरणशील रहे, अनुरक्त रहे और वही कर्मयोग का सारतत्व आत्मसात् कर मुकेश जी भी पिता की भांति गीता जीने में विश्वास करते है, वह भी गीता जी रहे हैं । भारत और विश्व में अनेक उद्योगपतियों का व्यक्तित्व आर्थिक जगत के मसीहा के रूप में स्थापित है परन्तु पिता-पुत्र धीरूभाई-मुकेश अन्यों की अपेक्षा अधिक विराट व्यक्तित्व के स्वामी हैं। मुकेश अम्बानी का विराट व्यक्तित्व सुअवसर की प्रतीक्षा करने के बजाय सुअवसर उत्पन्न करने वाला है । पिता धीरूभाई अम्बानी के सपनों के साम्राज्य को मूर्तरूप देने में मुकेश जी की योग्यता, क्षमता, कार्यकुशलता और साहस का महत्वपूर्ण योगदान है । आपने पूर्ण मनोयोग से औद्योगिक गतिविधियों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया और उन्हें घरातल पर साकार रूप प्रदान कर अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया । जब रिलायंस उद्योग समूह ने इंटीग्रेटेड

जामनगर परियोजना को साकार रूप देना आरम्भ किया, तब देश का औद्योगिक जगत उसे जैसे सहन नहीं कर पाया और उसने रिलायंस समूह को अतिमहत्वाकांक्षी कहकर उसकी निंदा शुरू कर दी और परियोजना का विरोध शुरू कर दिया । परियोजना की सफलता और भविष्य का पता लगाने हेतु कुछ विदेशी विशेषज्ञ नियुक्त किये गये जिन्होंने अपने अध्ययन के अनुसार घोषणा की कि इस परियोजना के सफलता की संभावना नहीं के बराबर है । विदेशी विशेषज्ञों द्वारा निकाले गये निष्कर्ष से तनिक भी विचलित हुए बिना मुकेश अम्बानी ने अपनी दूरदर्शिता और साहस का परिचय देते हुए ठान लिया कि परियोजना को तो सफल बनाना ही है। बस फिर क्या था? जैसे ही रिफायनरी का कार्य शुरू हुआ उसकी देख – रेख का उत्तरदायित्व मुकेश जी ने खुद पर ले लिया और प्रत्येक सप्ताह जामनगर साइट पर जाकर कार्य का निरीक्षण करने लगे । मुकेश जी के ही परामर्श पर परियोजना हेतु पूर्व निर्धारित कार्य नीति में बदलाव किया गया और अपने अति भरोसेमंद सहयोगी युवा, ऊर्जावन श्री हेतल मेसवानी (मुकेश जी के फुफेरे भाई) को जामनगर में रखा गया जो निर्माण कार्य की पल-पल की सम्पूर्ण जानकारी रखते और मुकेश जी को उससे अवगत कराते थे । मुकेश जी की सूझबूझ से निर्माण कार्य तीव्रगति से चला और रिकॉर्ड स्थापित करते हुए तीन वर्ष में ही पूरा कर लिया गया । कार्य योजनाबद्ध एवं तीव्रगति से पूरा होने के कारण इस रिफाइनरी की लागत एशिया महाद्वीप की अन्य रिफाइनीरियों की अपेक्षा प्रति टन 30 से 50 प्रतिशत कम आई । विशेषज्ञों ने जिस परियोजना की सफलता के विषय में नकारात्मक राय दी थी वही आज भारत में रिफाइन किये जाने वाले कुल कच्चे तेल का एक-चौथाई भाग अकेले रिफाइन करती है। इसका सर्वाधिक श्रेय मुकेश भाई अम्बानी को जाता है जिनकी दूरदर्शिता, दृढ़ इच्छाशक्ति और कुशल रणनीति की बदौलत उक्त परियोजना पूर्णतया सफल हुई । मुकेश जी एक कुशल रणनीतिकार होने के साथ-साथ दूरदर्शी व्यक्तित्व के स्वामी हैं और समय की सही नब्ज को पहचानने वाले विवेक वान और गम्भीर संकल्प-संयोजना में सिद्धहस्त हैं और अनथक परिश्रम करने वाले महान औद्योगिक योद्धा हैं।

धीरू भाई अम्बानी परिस्थिति की प्रतिकूलता और अपनी

औद्योगिक महत्वाकांक्षा के कारण स्वयं भले ही उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके किंतु वे उच्च शिक्षित थे, डिग्री भले ही न हासिल की थी, शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्ता भली भांति महसूस किए थे। उन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। मुकेश अम्बानी की प्रारंभिक शिक्षा मुंबई के अबाय मोरिस्वा स्कूल में सम्पन्न हुई। मुकेश ने पिता जी के स्वप्न को साकार

किया और मुंबई विश्वविद्यालय से केमिकल इंजिनियर की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् वे एम. बी. ए. की डिग्री प्राप्त करने के लिए स्टैन फोर्ड विश्व विद्यालय अमेरिका गए। वहां से भारत लौटने पर बड़ी सूझबूझ के साथ उद्योग के क्षेत्र में सक्रिय हुए। रिलायंस कंपनी पुराने – परंपरागत तरीके से टेक्सटाइल कारोबार कर रही थी। मुकेश अंबानी ने 1981 में रिलायंस में प्रवेश किया और परंपरागत टेक्सटाइल व्यापार को पोलिएस्टर फाइबर और फिर पेट्रोकेमिकल्स में परिवर्तन कर आगे बढ़ाने का कार्य किया। इसी क्रम में रिलायंस ने महाराष्ट्र (पाताल गंगा) में 1982 में सर्व प्रथम पी. एफ. वाई की फैक्ट्री स्थापित की और 1986 से पी. एस. एफ. (पॉलिएस्टर स्टेपल फाइबर) का उत्पादन शुरू किया। परिवर्तन की प्रक्रिया में मुकेश अम्बानी ने विश्व स्तरीय 60 नई विभिन्न तकनीक संयुक्त निर्माण सुविधाओं की रचना को निर्देशित कर और महत्वपूर्ण स्वरूप दिया।

मुकेश जी ने अपनी औद्योगिक प्रतिभा का परिचय देते हुए पिता जी के सपनों को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। मुकेश जी के काम संभालने से पहले रिलायंस की उत्पादन क्षमता लगभग 10 लाख टन वार्षिक थी। मुकेश जी ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए उसकी उत्पादन क्षमता एक करोड़ बीस लाख टन वार्षिक के उच्चांक तक ले गए। धीरु भाई की छत्र-छाया में उन्होंने अपना भरपूर सहयोग प्रदान करते हुए जिम्मेदारियों को बखूबी संभाला और पिता जी को विश्वास दिलाया कि आप के साम्राज्य को बढ़ाने के लिए मैं हर कदम पर साथ हूँ। धीरु भाई अम्बानी चाहते थे कि भारतीय उत्पादन में आधुनिकता का समावेश हो और उसकी किस्म अंतर्राष्ट्रीय स्तर की हो और दाम भी प्रतियोगी स्तर पर कम हो। पिता की इस कामना की पूर्ति के लिए मुकेश जी हमेशा तत्पर रहे। उन्होंने भारत में बुनियादी स्तर को देखते हुए गुजरात प्रांत के जामनगर में संसार की सबसे बड़ी पेट्रोलियम रिफाइनरी की स्थापना की। आज इस रिफाइनरी की दैनिक क्षमता 6: लाख साठ हजार बैरल से अधिक है अर्थात वार्षिक तीन करोड़ तीस लाख टन। एक लाख करोड़ के निवेश से स्थापित इस रिफाइनरी में आज पेट्रोकेमिकल, पावर जनरेशन, पोर्ट तथा संबंधित आधारभूत ढाँचा है जो विश्व के उद्योग जगत में भारत के लिए गर्व की बात है। मुकेश जी ने रिलायंस ग्रुप के शोध आधारित जीवन – विज्ञान (लाइफ साइंस) के क्रिया कलापों में सक्रियता का श्रेष्ठ परिचय दिया। उन्होंने भारत की सबसे बड़ी दूर संचार कंपनियों में शुमार की जाने वाली रिलायंस कम्युनिकेशन्स (पहले रिलायंस इन्फोकॉम नाम था) लिमिटेड की स्थापना की। मुकेश जी के कुशल नेतृत्व में रिलायंस ने अपने पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी रिलायंस रिटेल के माध्यम से खुदरा बाजार के उद्योग जगत में प्रवेश कर कार्य शुरू किया है। उनका उद्देश्य आम उत्पादक और उपभोक्ता दोनों को लाभ पहुँचाते हुए कारोबार करना है। श्री मुकेश अम्बानी स्वभाव

से अंतर्मुखी और अल्पभाषी हैं। वे कम बोलने में विश्वास रखते हैं। वे बेहद शांत मस्तिष्क के व्यवस्थापक, नीति और योजना बुनने वाले व्यक्तित्व हैं। अपने उत्पादन की प्रगति और उसके मूल्यांकन पर शुरू से ही उनकी गहन पकड़ रही है। उनकी उसी योग्यता को भाँप कर उनको वाइस चेयरमैन नियुक्त कर उनके महत्व को रेखांकित किया गया था।

अपने पिता के वृहद औद्योगिक साम्राज्य की प्रगति और सुरक्षा के दृष्टिकोण से मुकेश जी ने कई बार संकट के समय **ट्रबलशूटर** की भूमिका निभाई है। सन् 1980में जब बांम्बे डाईंग के नुस्ली वाडिया, इंडियन एक्सप्रेस और रिलायंस समूह के बीच तीव्र विवाद एवं उलझन पैदा हुई थी, तब मुकेश जी की ही प्रबंधन एवं समन्वय क्षमता ने उस विवाद को सुलझाने में सफलता प्राप्त की थी। उन्होंने रिलायंस ग्रुप की महत्वपूर्ण नई परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूर्णता प्रदान की। इसी प्रकार पातालगंगा प्रोजेक्ट और हजीरा काम्प्लेक्स के निर्माण में भी मुकेश अम्बानी की भूमिका का लोग लोहा मानते हैं। जामनगर की २७ हजार करोड़ की रिफाइनरी के प्रोजैक्ट को समय पर पूरा करते हुए उन्होंने अपनी कार्यक्षमता का परिचय दिया। उल्लेखनीय है कि जामनगर की रिफाइनरी की लागत विश्व की अन्य रिफाइनरियों की तुलना में आश्चर्यजनक रूप से कम रही है। धीरु भाई के जीवन काल में ही मुकेश जी ने छोटे भाई अनिल अम्बानी को साथ लेकर उद्योग जगत के कई मुकाम सफलता पूर्वक तय किए और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की। उनकी प्रतिभा का ही परिणाम रहा कि रिलायंस ग्रुप का कारोबार अस्सी गुना अधिक हो गया। आई.सी.एल., इंडिया पॉलीफाइबर्स, उड़ीसा सिंथेटिक्स, रेमण्ड सिंथेटिक्स, डी. सी.एल.पॉलिएस्टर तथा जे सी डी एवं आई. पी. सी. एल. जैसी कंपनियों के अधि ग्रहण की रणनीति और सफलता में मुकेश जी की कुशाग्रबुद्धियुक्त भूमिका कारगर साबित हुई। अपनी कार्यक्षमता और दायित्वबोध को स्पष्ट करते हुए 1977 में एक साक्षात्कार में मुकेश जी ने कहा भी था कि – हम दोनों भाइयों ने रिलायंस समूह की तमाम जिम्मेदारियों को सँभाल लिया है, हम इसके उत्तराधिकारी न होकर इसका हिस्सा बन चुके हैं। बाद में यदि दोनों भाइयों में उलझन न पैदा हुई होती, दोनों अलग न हुए होते और मुकेश अंबानी प्रेसिडेंट बने रहते तो उनकी कुल संपत्ति एक साथ होने से वे संसार के सबसे ज्यादा धनी व्यक्ति होते और वह भी एक बहुत बड़े अंतर से जिसको (अंतर को) मिटा पाना निकट भविष्य में किसी औद्योगिक समूह के लिए असम्भव होता।

मुकेश अम्बानी रिलायंस इण्डस्ट्रीज, रिलायंस इन्फोकॉम और आई.पी.सी.एल. के चेयरमैन, रिलायंस यूरोप लिमिटेड के डायरेक्टर हैं और व्यक्तिगत आमदनी के आधार पर सबसे अमीर भारतीय हैं। भारत और भारतीय उद्योग जगत के लिए अभिमान का अवसर मुकेश अम्बानी ने प्रदान किया। रिलायंस इण्डस्ट्रीज के प्रमुख के रूप में उन्हें **युनाइटेड बिजनेस कांउंसिल लीडरशिप अॅवार्ड** –ग्लोबल विजन 2007 के लिए वाशिंग्टन में ससम्मान प्रदान किया गया। एन.डी.टी.वी. द्वारा कराये गये सार्वजनिक चुनाव में उन्हें **बिजनेस मैन आफ दि इयर** – 2007 का सम्मानजनक पद प्राप्त हुआ। विश्व के सबसे सम्मानित बिजनेस लीडरों में बयालीसवाँ स्थान प्राप्त किया। फाइनेन्सियल टाइम्स लंदन के अनुसार चार सी. ई. ओ. में. द्वितीय स्थान का सम्मान प्राप्त हुआ। दूरसंचार के क्षेत्र में सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में **वर्ल्ड कम्युनिकेशन अवॉर्ड** प्राप्त किया और

टेलीकॉम मैन आफ दि ईयर से सम्मानित किए गए। इनके अतिरिक्त तमाम अवॉर्ड, पुरस्कार, सम्मान के साथ-साथ

गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों **चित्रलेखा पर्सन आफ दि इयर - 2007** पुरस्कार से सम्मानित हुए। श्री धीरु भाई अम्बानी का महत्वपूर्ण कथन है कि मेरा लक्ष्य भारत के लोगों की बचत पर उन्हें अधिक से अधिक मुनाफा प्रदान करना है। आम व्यक्ति की खुशहाली में ही रिलायंस की खुशहाली का राज छुपा है। इसी आम आदमी की खुशहाली के उद्देश्य से ही मुकेश जी ने खुदरा बाजार संस्कृति की तरफ कदम बढ़ाया और रिलायंस मार्ट की महत्वकांक्षी योजना शुरू की। उन्होंने रिटेल मार्केटिंग की संस्कृति को इस कारण प्रोत्साहन देने की शुरूआत की ताकि उपभोक्ताओं को उचित दरों पर उत्तम क्वॉलिटी का सामान प्राप्त हो, यह उनका अधिकार है। साथ ही बिचौलिया पद्धति से भी उत्पादक को मुक्ति मिले। इससे उनके लाभ का प्रतिशत बढ़ेगा और उपभोक्ताओं को वाजिब दर पर वस्तुओं की प्राति होगी। मुकेश अम्बानी इस समय संसार के सबसे कीमती (मँहगे) घर के मालिक हैं। मुंबई शहर के महत्वपूर्ण आवासीय - व्यापारिक क्षेत्र में निर्मित उनका आवास **एंटीलिया** सत्ताइस फ्लोअर वाला साठ मंजिला स्क्रेपर है जिसमें नौकरों-चाकरों का भी निवास है। इस महत्वपूर्ण मकान की कीमत दो अरब डॉलर है।

क्रिकेट के विश्व कप का आयोजन धीरुभाई अंबानी की महान सफलता है। **रिलायंस वर्ल्ड कप** के आयोजन से पहले निजी क्षेत्र की किसी भी भारतीय कंपनी ने तब तक इस प्रकार के आयोजन का गौरव हासिल नहीं किया था। क्रिकेट के प्रति पिता जी के लगाव का सम्मान करते हुए मुकेश जी ने इंडियन प्रीमियर लीग की टीम मुंबई इंडियन्स का मालिकाना हक लिया। सचिन तेंदुलकर की सौवीं सेंचुरी के बाद उनके सम्मान में आयोजित कार्यक्रम मुकेश जी के क्रिकेट प्रेम, मानवता, भारतीयता और अन्य की उपलब्धि पर आनंदित होने की उनमें रची-बसी भारतीय संस्कृति का प्रमाण है। पिता धीरु भाई अम्बानी शिक्षा को जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते थे और कामना करते थे कि देश का प्रत्येक बच्चा शिक्षा प्राप्त करे। उनकी उसी भावना को पूजनीय मानते हुए आपने मुंबई में धीरुभाई अम्बानी इंटरनैशनल स्कूल की स्थापना की है जो सफलतापूर्वक अपना दायित्व पूर्ण कर रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि मुकेश अम्बानी को सशक्त, समृद्ध, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संबंधों की विरासत प्राप्त हुई है। पिता के स्थान पर धीरु भाई अम्बानी अपने आप में गर्व एवं सफलता का सौभाग्य हैं तथापि मुकेश जी की योग्यता को विरासत के नाम पर रंच मात्र भी कम नहीं आँका जा सकता है। मुकेश अंबानी जैसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी संसार में कम ही हैं जो विरासत को आधार मान कर चलने के बजाय स्वयं के पुरुषार्थ पर भरोसा करते हैं। महान लोगों के जीवन में खुद के साथ-साथ समाज, देश और विश्व के व्यापक हित सिद्धि का महती दृष्टिकोण होता है और इसी कारण उनके समस्त कार्य न केवल उच्च कोटि के परिणाम प्रदाता होते हैं बल्कि दिव्य भी होते हैं। निजी जीवन और औद्योगिक जगत में श्री मुकेश अंबानी की स्थिति अत्यंत मर्यादित, सुसभ्य और सम्मानजनक है। मुकेश जी ने अपनी योग्यता, समर्पण, कर्मठता, प्रतिबद्धता और कुशल प्रबंधन के द्वारा विरासत के परचम को दिन-प्रति दिन उच्चता ही प्रदान की है। वे अपनी अनवरत नवोन्मेषी प्रतिभा सम्पन्न दृष्टि के परिणाम स्वरूप विश्व में अग्रगण्य उद्योग पतियों के बीच अत्यंत सम्मानित हैं । मुकेश अम्बानी भारत की आन-बान - शान हैं, देश के सपूत हैं, देश के गर्व हैं। मुकेश जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से भारत ही नहीं अपितु विश्व भी सुशोभित है। निश्चित ही ईश्वर ने आप के जीवन के रहस्य में लोक कल्याण की महान भावना का समावेश सुनिश्चित किया है तभी तो आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के आलोक में लाखों-करोड़ों का जीवन सुव्यवस्थित रूप से गतिमान है, समाज, राष्ट्र और विश्व लाभान्वित है ।

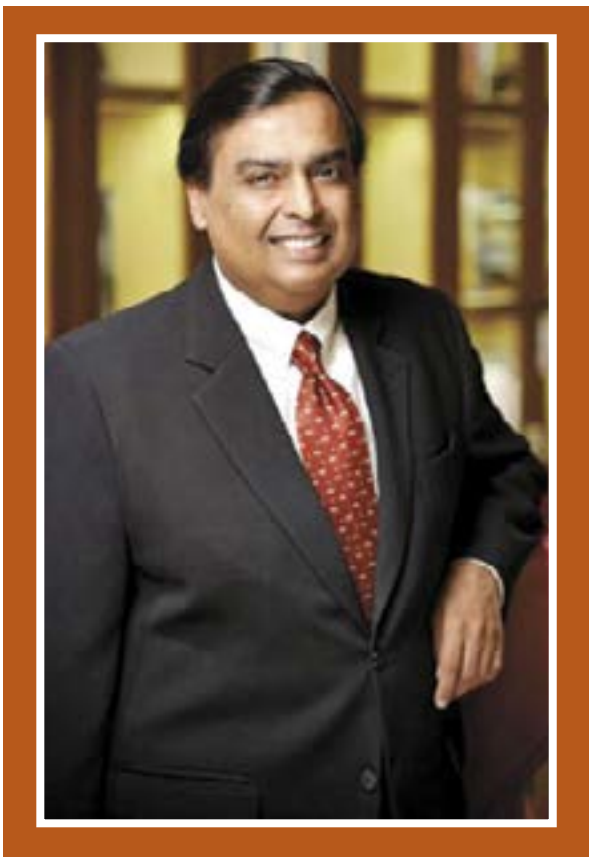

श्री मुकेश अंबानी को प्राप्त सम्मान - पुरस्कार एवं उपलब्धियां

- वर्ष 2000 में अर्नेस्ट एण्ड यंग इंडिया ऑर्गनाइजेशन की ओर से 'अर्नेस्ट एण्ड यंग इन्टरप्रेन्योर ऑफ द ईयर' के पुरस्कार से सम्मानित किये गये ।
- 2004 में वाइस एण्ड डाटा मैगजीन द्वारा 'टेलीकॉम मैन ऑफ द ईयर' चुने गये ।
- 2004 में होटल टेलीकॉम द्वारा दूरसंचार में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति के लिए 'विश्व संचार पुरस्कार' से सम्मानित किये गये।
- 2004 में फॉरच्यून मैगजीन द्वारा प्रकाशित 'एशिया की पॉवर 25' सूची में 13 वाँ स्थान प्राप्त किया।
- 2004 में इंडिया टुडे द्वारा प्रकाशित 'पॉवर लिस्ट – 2004' में लगातार दूसरे वर्ष के लिए नंबर एक स्थान पर रहे ।
- वर्ष 2006 में कॉरपोरेट एक्सीलेंस के लिए 'इकोनॉमिक टाइम्स अवॉर्ड' से सम्मानित किये गये।
- वर्ष 2007 में गुजरात सरकार द्वारा, वर्ष के 'चित्रलेखा व्यक्ति पुरस्कार' से सम्मानित किये गये।
- वर्ष 2007 में सीएनबीसी – टीवी 18 की 'आउटस्टैंडिंग बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर अवॉर्ड' से सम्मानित किये गये।
- 2009 में 'जुरन क्वॉलिटी मेडल' से पुरस्कृत हुए ।
- वर्ष 2009 में शीर्ष 50 वैश्विक कंपनियों के सीईओ की अपनी रैंकिंग में हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू द्वारा दुनिया में ५वां सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले सीईओ रहे।
- वर्ष 2010 में फाइनेंसियल क्रॉनिकल द्वारा 'बिजनेस मैन ऑफ द ईयर' के पुरस्कार से सम्मानित किये गये।
- वर्ष 2010 में पेन्सिलवेनिया युनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड अप्लाइड साइंस द्वारा 'डीन पदक' से सम्मानित किये गये ।
- वर्ष 2010 में बिजनेस काउंसिल फॉर इण्टरनेशनल अण्डर स्टैन्डिंग ऑर्गनाइजेशन द्वारा 'ग्लोबल लीडरशिप अवॉर्ड' से सम्मानित किये गये ।
- वर्ष 2010 में एनडीटीवी इंडिया द्वारा 'बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर' के पुरस्कार से सम्मानित किये गये।
- वर्ष 2010 में एशिया सोसायटी द्वारा 'ग्लोबल विजन अवॉर्ड' से सम्मानित किये गये ।
- एशिया सोसायटी वाशिंगटन डी.सी.द्वारा 'लीडरशिप अवॉर्ड' प्रदान किया गया ।
- प्रतिष्ठित फोर्ब्स पत्रिका द्वारा वर्ष 2010 के लिए जारी सर्वाधिक प्रभावशाली 68 व्यक्तियों में सम्मानजनक स्थान प्राप्त किए।
- गत वर्ष (2013) में ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन द्वारा 'इन्टरप्रेन्योर ऑफ द डिकेड' से सम्मानित किया गया।

प्रेरक एवं अनुकरणीय व्यक्तित्व

नीता अम्बानी

नीता अम्बानी
चेयरपर्सन
रिलायंस फाउंडेशन

नीता अम्बानी जी के रूप में आदर्श भारतीय नारी का गौरव पूर्ण व्यक्तित्व सम्पूर्ण नारी जगत के लिए गर्व और सम्मान का विषय है। श्रीमती नीता जी अम्बानी का जनसेवी व्यक्तित्व उदार व निर्मल चरित्र समाज, राष्ट्र और विश्व को सेवाकार्य एवं मानवता के माध्यम से एक व्यापक दृष्टि प्रदान कर हमें जन सेवा के लिए प्रेरित करने वाला जागतिक अनुपमेय जीवन दृष्टि रूपी अमृत रसायन है, जिससे मानवता महिमामण्डित होती है, अजर-अमर होती है ।

मुकेश अम्बानी की पत्नी श्रीमती नीता अम्बानी आधुनिकता, उच्च भारतीय आदर्श एवं संस्कारों से संपन्न महिला हैं । मुकेश जी की सफलता की पीछे पिता धीरूभाई अम्बानी, माता कोकिला बेन अम्बानी और पत्नी नीता अम्बानी के योगदान को भी महत्वपूर्ण माना जाता है। जीवन में सुलक्षणा, सुकर्मा और सुन्दर स्वभाव वाली पत्नी के रूप में नीता जी मुकेश जी के लिए ईश्वरीय वरदान से कम नहीं हैं। नीता जी का प्रेरक व्यक्तित्व प्रशंसनीय है, अनुकरणीय है, अभिनंदनीय है। नीता जी के व्यक्तित्व में उच्च मानवीय संस्कारों एवं आधुनिक वैचारिक-आचरणीय तत्वों का आर्कषक साम्मिश्रण परिलक्षित होता है । इतनी विपुल धन-सम्पदा की स्वामिनी होने के बावजूद नीता जी का स्वभाव सास श्रीमती कोकिलाबेन के आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक व भारतीय परिवार संस्कृति के प्रति समर्पित व्यक्तित्व से ही मिलता-जुलता है। नीता जी विवाह से पूर्व सांताक्रुज के एक उच्च - मध्यम वर्गीय गुजराती परिवार की भारतीय संस्कार युक्त बेटी थीं। संयुक्त परिवार का संस्कार उन्हें विरासत में मिला है । यद्यपि, उनमें आधुनिकता के परिवेश की झलक मिलती है। उनकी जीवन पद्धति में आधुनिकता का भी एक रंग होना स्वाभाविक है क्योंकि वे मुंबई, फिल्म जगत की एक समय की जानी-मानी हस्ती रह चुकी हैं तथापि दोनों परिवारों के भारतीय पारंपरिक संस्कारों ने उन्हें आडंबरों की आगोश में रंचमात्र भी नहीं आने दिया है। जीवन में सहजता, सरलता और सत्कर्म माधुर्य आपके प्रेरक व अनुकरणीय **जनसेवी व्यक्तित्व** की एक बहुत बड़ी विशेषता है। नीता अम्बानी का जन्म मुंबई के उपनगर सांताक्रुज में एक उच्च मध्यम वर्गीय गुजराती परिवार में 1 नवंबर, 1963 को हुआ । उनके पिता बिरला ग्रुप में एक सीनियर एक्सक्युटिव के पद पर कार्यरत थे । उनकी माँ एक कुशल गृहणी थीं। नीता जी

को बचपन से ही शास्त्रीय नृत्य में गहरी रुचि थी और वे इसी क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहती थीं, जब कि उनकी माँ की इच्छा उन्हें चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट बनाने की थी और इसके लिए वे हमेशा नीता जी को प्रेरित करती रहती थीं । माँ की सद्शिक्षाओं का प्रकाश नीता जी के जीवन में सूक्ष्म रूप से विद्यमान है। नीता जी मुंबई के विलेपार्ले पश्चिम में स्थित मुंबई युनिवर्सिटी के प्रतिष्ठित कॉमर्स कॉलेज – नरसी मोनजी कॉलेज ऑफ कामर्स एण्ड इकॉनामिक्स से वाणिज्य में स्नातक हैं। इस समय वे एक शिक्षिका और इंटिरियर डिजाइनर के रूप में भी क्वॉलिफाइड हैं। मुकेश जी से विवाह के पश्चात् नीता जी ने अम्बानी परिवार की बड़ी बहू का दायित्व बखूबी स्वीकार किया और उसे पूरी निष्ठा, लगन एवं अपनेपन के साथ पूर्ण कर रही हैं। उच्च मानवीय गुणों, नारी के भारतीय संस्कारों से परिपूर्ण,आधुनिक युगानुरूप नवीन दृष्टिकोण एवं विचारधारा से संयुक्त समाज के विकास हेतु सक्रिय, गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए अनवरत प्रयासरत, आपदा प्रबंधक के रूप में सुविख्यात नीता अम्बानी एक कुशल गृहिणी, सहधर्मिणी और ममतामयी माता हैं । आप समाज, परिवार एवं कार्य- सभी दायित्वों में समन्वय स्थापित करने में माहिर हैं और सभी को बखूबी निभा रही हैं। घर और बाहर, परिवार और समाज कार्य, उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा का प्रसार, खेल और लोककल्याण के कार्य सभी को आप द्वारा संतुलित महत्व प्रदान किया जा रहा है और आप सफलता पूर्वक प्रत्येक मोर्चों पर जंग जीत रही हैं। आप भारतीय नारी समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं और उदाहरण हैं उन अन्य सक्षम नारियों के लिए जो समाज के लिए कुछ विशेष सहयोग देने में समर्थ हैं, किंतु ऐसा करती नहीं । आप बहुआयामी व्यक्तित्व की स्वामिनी हैं। संसार के अग्रगण्य सम्मानित उद्योगपतियों में से एक भारतीय मुकेश अम्बानी की सहधर्मिणी नीता अम्बानी धीरू भाई इंटरनेशनल स्कूल से उसके प्रारंभ वर्ष 2003 से ही सहचर की भांति कदम से कदम मिला कर चल रही हैं । मुंबई में स्थित धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल एक श्रेष्ठतम् शैक्षणिक संस्थान है जो राष्ट्रीय के साथ ही साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पाठ्यक्रम को भी शिक्षा का आधार बना कर कार्य कर रहा है । संस्थान का उद्देश्य देश में शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन मानक (आदर्श) विकसित करना है। इस स्कूल का नाम देश के उन 37 स्कूलों की सूची में बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम को अपने शैक्षणिक कार्यक्रम में स्वीकृत किए हैं। आप के नेतृत्व में इस स्कूल की सेवाएँ सफल एवं प्रशंसनीय हैं, इसके अलावा आप देश के अन्य भागों में भी शिक्षा और उसकी उच्च गुणवत्ता के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान कर रही हैं। आपके प्रयत्नों से गुजरात, गोवा, दादरा नगर हवेली, दमन, दीव एवं महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न शिक्षण संस्थान स्थापित किये गये हैं, जो आपके मार्गदर्शन में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। मेधावी छात्रों को प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहायता करने के उद्देश्य से आप द्वारा स्कॉलरशिप की भी समुचित व्यवस्था की गई है। शिक्षा के क्षेत्र में आप का योगदान स्तुत्य है। खेलों से धीरू भाई अम्बानी को विशेष लगाव था । भारतीय खेलों में क्रिकेट उनके लिए काफी प्रिय था। उनकी भावना का सम्मान करते हुए नीता अम्बानी खेलों को भी काफी प्रोत्साहन प्रदान कर रही हैं । वैसे नीता जी की खेलों में व्यक्तिगत स्तर पर भी विशेष रुचि है। आप उदीयमान खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित और उनके आगे बढ़ने के लिए हर संभव प्रशंसनीय प्रयास तथा योगदान कर रही हैं। क्रिकेट की आई.पी.एल. टीम मुंबई इंडियन्स की आप संयुक्त मालकिन हैं। आई.पी.एल मैचों के समय आप की उपस्थिति और उत्साह, आप की सक्रियता सराहनीय है जिसके लिए खेल प्रतिभाएँ ससम्मान आप की ऋणी हैं। आप एक धर्मनिष्ठ, उदारमना के साथ-साथ देश-सेवा के प्रति भी सजग-सक्रिय महिला हैं। भारत की सीमा पर जान की जोखिम उठा कर, अनेक कठिनाइयों को झेल कर देश और नागरिकों को सुरक्षा प्रदान

करने वाले वीर भारतीय सपूत सैनिकों के प्रति आप के मन में गहरी आस्था, सम्मान एवं लगाव है। उनके जीवन को खुशहाल बनाने के लिए, सहायता के लिए आप सतत् प्रयासरत रहती हैं। रिलांयस कारगिल स्कॉलरशिप स्कीम के माध्यम से सैनिकों की सेवा का कार्य आप की राष्ट्रसेवी भावना का प्रत्यक्ष प्रमाण और कारगिल के अमर शहीदों के प्रति आप की संवेदनात्मक आदरांजलि है।

एक उदार एवं संस्कारित परिवार से प्राप्त उच्च मानवीय गुणों की विरासत एवं एक अति संपन्न परिवार से प्राप्त सेवा के अवसर एवं साधनों से सम्पन्न जीवन को आपने समाज एवं जन सेवा के संवर्धन तथा पोषण में बखूबी समर्पित किया है। उदारमना श्रीमती नीता अम्बानी दीन-दुखियों व वंचितों के उद्धार व विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील हैं। आपके नेतृत्व तथा मार्गदर्शन में धीरू भाई अम्बानी फाउण्डेशन द्वारा विभिन्न प्रकार के जनोपयोगी, कल्याणकारी कार्य संपादित किए जा रहे हैं जो जरूरतमंदों को शिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में सराहनीय सेवाएँ उपलब्ध करा रहे हैं। साथ ही साथ फाउण्डेशन भूख व कुपोषण, गरीबी उन्मूलन के प्रति भी प्रयास कर रहा है। आप के मार्गदर्शन में भ्रूण हत्या के विरोध में, निरक्षरता को समाप्त करने के लिए तथा लोगों में स्वरोजगार के प्रयास के लिए जागरूकता अभियान तीव्र गति से संचालित किया जा रहा है। कैंसर, एड्स आदि असाध्य बीमारियों के उन्मूलन के लिए भी आप द्वारा गंभीरता पूर्वक अभियान चलाया जा रहा है । नेत्र हीन को रोशनी प्रदान करने के लिए आप प्रोजेक्ट **दृष्टि** का संचालन करती है। आपके सतत् सद्प्रयास से इस प्रोजेक्ट दृष्टि अभियान द्वारा अनेक दृष्टि हीनों को नि:शुल्क नेत्र ज्योति प्राप्त हुई है। विगत वर्ष इस प्रोजेक्ट के तहत एक हिन्दी समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया गया है । नेत्रहीनों के लिए नि:शुल्क नेत्रदान हेतु चलाया जाने वाला यह अभियान दूसरों के प्रति आप के ममतापूर्ण वात्सल्य का प्रमाण है जो आप को **माँ** के भारतीय गरिमामय नि:स्वार्थ पद पर आसीन करता है ।

नीता अम्बानी की सामाजिक, राष्ट्रसेवी,जनोपयोगी, जनकल्याणकारी एवं लोकमंगल की भावना से आप्लावित मानवता की जितनी भी सराहना की जाए कम ही होगी। जनसामान्य आपकी कल्याणकारी शुभेच्छाओं के लिए नतमस्तक है। आप की सेवा भावना को सम्मान प्रदान करने के लिए सन् २००५ में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के शुभ अवसर पर आपको भारत नारी शक्ति पुरस्कार समारोह में **समाज सेवा - विश्व भूषण** की उपाधि प्रदान कर भारतीय मानवता के श्रेष्ठ गुणों को महिमामंडित किया गया, नारी के भारतीय स्वरूप को सम्मानित किया गया ।

◆◆◆

Health Insurance
Motor Insurance
Universal Sompo
General Insurance Co. Ltd.
Insuring your
Health,Property & Assets
at every step
Home Insurance
Travel Insurance
Toll Free No.1800-200-4030 | Log on to www.universalsompo.com
A joint venture of Allahabad Bank ★ Indian Overseas Bank ★ Karnataka Bank Ltd. ★ Dabur Investment Corp ★ Sompo Japan Nipponkoa Insurance Inc.

कुमार मंगलम बिड़ला
अध्यक्ष, बिड़ला समूह

भारतीय उद्योग जगत के गौरव

कुमार मंगलम बिड़ला

आदित्य बिड़ला समूह के अध्यक्ष कुमार मंगलम बिड़ला ने हर एक व्यवसाय पर ध्यान देने और भारत को वैश्विक मानचित्र पर अहम स्थान दिलाने के उद्देश्य से समूह को विजन, रणनीतिक दिशा एवं शानदार नेतृत्व प्रदान किया है। पिछले 22-23 सालों में उन्होंने समूह को पुनर्संरचना, पुनगर्ठन, अधिग्रहण एवं कंसोलिडेशन के माध्यम से नई ऊँचाईयाँ प्रदान की हैं और विश्व के 42 देशों में भारत का परचम लहराया है। उन्होंने न केवल इसे गुणवानों को स्थान देने वाला एक समूह बनाया, बल्कि शेयर होल्डर वैल्यू भी बढ़ाया। कुमार जी भारत और विश्व में आदित्य बिड़ला समूह की अधिकांश कम्पनियों की अध्यक्षता करते हैं। इस समूह की वैश्विक कम्पनियों में नोवेलिस,कोलम्बियन केमिकल्ज, आदित्य बिरला मिनरल्ज, आदित्य बिरला केमिकल्ज, थाई कार्बन ब्लैक, ऐलेग्जैंड्रिया कार्बन ब्लैक, डोमस्जो फैब्रिकर और टेरेस बे पल्प मिल शामिल हैं। भारत में वे बोर्ड ऑफ.हिंडाल्को, ग्रेसीम अल्ट्राटेक, आइडिया और आदित्य बिरला कैपिटल लिमिटेड की अध्यक्षता करते हैं। इस समूह का उद्योग इंडस्ट्रियों की श्रृंखलाओं से जुडा हुआ है, जिसके अंतर्गत एलमुनियम, कॉपर, सीमेंट, टेक्सटाइल (पल्प, फाइबर, सूत, फैब्रिक और ब्रांडेड परिधान), कार्बन ब्लैक, इंसुलेटर, प्राकृतिक संसाधन, सौर ऊर्जा, कृषि व्यवसाय, टेलीकम्युनिकेशन सेवाएं, खुदरा एवं विपणन आते हैं।

बिजनेस रिकॉर्ड

पिता की असामयिक मृत्यु के कारण 1995 में 28 साल की उम्र में बिरला जी ने इस समूह की अध्यक्षता स्वीकार की और आदित्य बिरला समूह को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। इन 22 सालों में इस समूह के संचालक के रूप में इन्होंने इसकी वृद्धि को नई गति दी, प्रतिभा का निर्माण किया और स्टेकहोल्डर मूल्य को बढ़ाया। इस प्रक्रिया में उन्होंने समूह के टर्नओवर, जो कि 1995 में 2 बिलियन यूएस डॉलर था, को आज 48.3 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंचा दिया है। बिरला जी ने उद्योगों का पुनर्गठन किया ताकि इसके द्वारा संचालित क्षेत्र वैश्विक एवं राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरें। इन्होंने भारत और विश्व में 20 सालों में 36 अधिग्रहण किए जोकि किसी भारतीय के संदर्भ में सबसे अधिकतम है।

वर्ष 2007 में नोवेलिस का अधिग्रहण हुआ जो कि भारतीय कंपनी के द्वारा अब तक का दूसरा सबसे बडा अधिग्रहण था। इसने भारतीय कंपनियों को सम्मानित दर्जा प्राप्त कराया, साथ ही देश को औद्योगिक रुचि का केन्द्र भी बनाया। बाद के अधिग्रहण में कोलंबियन केमिकल्स जो कि यूएस की कंपनी है और दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी कार्बन ब्लैक उत्पादित करने वाली कम्पनी है, ने इस समूह को इस क्षेत्र में पहले नम्बर का प्लेयर घोषित किया, जिसने कि अब इसे अपना कार्बन ब्लैक संचालन कार्य

सौंप दिया है। इसी तरह डोमस्जो फैब्रिकर एक नेतृत्वशील स्वीडिश पल्प उत्पादक कम्पनी ने इस समूह के पल्प एवं फाइबर के व्यापार को वैश्विक पहचान दिलायी। जर्मनी में सीटीपी जीएमबीएच–केमिकल्ज.एंड पॉलीमर्स अधिग्रहण इस क्रम में मील का पत्थर बना।

हाल ही में बिरला जी ने नोवेलिस के माध्यम से यूएस की प्रमुख मेटल कंपनी अलेरिस पर 2.6 बिलियन डॉ लर की बोली लगाई। इसके अलावा इन सालों में बिरला जी ने कनाडा, चीन,इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया की खानों के उत्पादक संयंत्रों पर अपना स्वामित्व कायम किया तथा मिस्र, थाईलैंड और चाइना में नए संयंत्र स्थापित किए। उन्होंने प्रत्येक समूह की उत्पादन इकाई में अपनी क्षमताओं का विस्तार किया। इसी तरह भारत में भी उन्होंने कई बड़े अधिग्रहण किए, जिनमें(चुनिंदा सूची) से जेपी सीमेंट, बिनानी सीमेंट, सीमेंट डिवीजन ऑफ.लार्सेन एंड टुब्रो, इंडल फ्रम ऐल्कान, मदुरा गार्मेंट्स फ्रम कोट्स वीएल्ला, द क्लोर अल्कलाई डिविजन ऑफ.कनोरिया केमिकल्ज.एंड सोलॉरिस केमटेक इंडस्ट्रीज प्रमुख हैं।

अभी हाल में ही वोडाफोन और आइडिया के अधिग्रहण से बिरला जी ने भारत को सबसे बडा टेलीकॉम ऑपरेटर और विश्व का दूसरा सबसे बडा प्लेयर बना लिया। इनके नेतृत्व में आदित्य बिरला ग्रुप अपने सभी प्रमुख संचालित क्षेत्रों में शीर्ष नेतृत्वकारी पद का वहन करता है। इन वर्षों में बिरला जी ने कई सराहनीय संस्थाओं, जो कि 42 भिन्न देशों के 1,20,000 कर्मचारियों की साझी मेहनत की नींव पर स्थापित है, का सफल निर्माण किया है।

आदित्य बिरला ग्रुप ने एओएन हेविट, फॉर्च्यून पत्रिका और आरबीएल (एक स्ट्रैटजिक एचआर और नेतृत्व सलाहकार कंपनी) द्वारा के गयी **टॉप कंपनीज फॉर लीडर्स स्टडी 2011** में दुनिया में चौथा और एशिया में पहला स्थान प्राप्त किया है। इस समूह ने नीलसंज कॉरपोरेट इमेज.मॉनिटर 2014-15 में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है और नंबर 1 कॉ रपोरेट के रूप में उभरते हुए,तीसरे क्रमिक वर्ष के लिए बेस्ट इन क्लास रहा है। इस समूह ने **2018** में एओएन हेविट द्वारा

द बेस्ट एम्प्लॉअर्स तो वर्क फार इंडिया की प्रतिष्ठित पहचान फिर से हासिल की। विभिन्न नियामक संस्थाओं में केंद्रीय भूमिका निभाते हुए अभी नियामक एवं प्रोफेशनल निकायों में बिरला जी महत्वपूर्ण पदों को संभालते हैं। वे भारतीय रिजर्व बैंक की केंद्रीय निदेशक मंडल के डायरेक्टर रह चुके हैं। मिनिस्ट्री ऑफ़ कंपनी अफेयर्स के द्वारा बनाई गई एडवाइजरी कमेटी के चेयरमैन तथा व्यापार व उद्योग पर बनी भारत के प्रधानमंत्री की सलाहकार परिषद के रूप में काम कर चुके हैं। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड कमेटी के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने निगम की शासन प्रणाली पर पहली रिपोर्ट **कॉरपोरेट गवर्नेंस पर कुमार मंगलम बिरला कमेटी की रिपोर्ट** शीर्षक से प्रस्तुत की, जो कॉरपोरेट गवर्नेंस मानदंडों की नींव बन गई। प्रशासनिक और कानूनी सिंपलीफिकेशंस पर हुए प्रधानमंत्री टास्क फोर्स के संयोजक होने के नाते उनके द्वारा रिपोर्ट में प्रस्तुत किए गए सुझावों को संपूर्णता में लागू किया जा चुका है। बिरला जी ने आंतरिक व्यापार के लिए बनी एसईबीआई कमेटी के चेयरमैन के रूप में भी अपनी सेवाएं दी हैं जिसने कि भारतीय कॉरपोरेट्स के लिए कॉरपोरेट शासन विधि के सिद्धांतों को विकसित किया है। वे नेशनल काउंसिल ऑफ.द कन्फेडरेशन ऑफ. इंडियन इंडस्ट्री और एपेक्स एडवाइज़री काउन्सिल ऑफ. असोशिएटेड चेम्बर्ज.ऑफ.कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ.इंडिया में शामिल हैं।

शिक्षण संस्थाओं से संबद्धता

- बिरला जी शैक्षिक संस्थानों से बहुत गहरा जुड़ाव रखते हैं। प्रसिद्ध बिरला इन्स्टिटूट ऑफ टेक्नॉलजी एंड साइंस (BITS), जिसके कैम्पस पिलनी, गोवा, हैदराबाद और दुबई में हैं, के वे कुलपति हैं।
- बिरला जी आईआईएम, अहमदाबाद के अध्यक्ष हैं। वे जीडी बिरला मेडिकल रिसर्च एंड एजुकेशनल फाउंडेशन के डायरेक्टर हैं।

- वे लंदन बिजनेस स्कूल्ज.एशिया पेसिफिक एडवाइजरी बोर्ड और लंदन बिजनेस स्कूल के सम्मानित सदस्य हैं।
- बिरला जी रोड्ज.इंडिया स्कॉलरशिप कमिटी के अध्यक्ष हैं।

प्राप्त सम्मान

श्री बिरला ने नेतृत्व प्रक्रियाओं और संस्थान/सिस्टम निर्माण में अपने अनुकरणीय योगदान के लिए विशिष्ट ख्याति अर्जित की है। प्रस्तुत है सूचीबद्ध ब्यौरा:

- एमिटी यूनिवर्सिटी, हरियाणा – डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (डी.फिल) ऑनोरिस कौसा, 2019
- सीएनबीसी–टीवी 18– आईबीएलए वर्ष 2018 का उत्कृष्ट व्यवसायी
- फ्रॉस्ट एंड सुलिवन का द जीआईएल विजनरी लीडरशिप अवार्ड (ग्लोबल इनोवेशन लीडर) 2017
- अंतर्राष्ट्रीय विज्ञापन संघ (आईएए) का 'सीईओ ऑफ.द ईयर अवार्ड 2016
- सम्मानीय सदस्य के रूप में रोटरी क्लब ऑफ.मुंबई (नवंबर 2014) में शामिल
- हैलो हॉल ऑफ फेम – वर्ष 2014 के बिजनेस लीडर (नवंबर 2014)
- यूएस इंडिया बिजनेस काउंसिल (यूएसआईबीसी) 2014 ग्लोबल लीडरशिप अवॉर्ड
- बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर, इकोनॉमिक टाइम्स अवाड्र्स फॉर कॉरपोरेट एक्सीलेंस, 2012–
- इकोनॉमिक टाइम्स कॉरपोरेट इंडिया के 100 सबसे सशक्त सीईओ की सूची में चौथे सबसे शक्तिशाली सीईओ (2013)
- इंदौर मैनेजमेंट एसोसिएशन का पुरस्कार;नेशनल इंडियन बिजनेस आइकन
- फोर्ब्स इंडिया लीडरशिप अवॉर्ड – फ्लैगशिप अवॉर्ड एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर, 2012
- एनडीटीवी प्रॉफिट बिजनेस लीडरशिप अवॉर्ड्स 2012 –'मोस्ट इन्स्पाइरिंग लीडर'
- विश्वेश्वरैया टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, कर्नाटक, 2012 द्वारा देश में बहु–विषयक इंजीनियरिंग विचार प्रक्रियाओं को शामिल करते हुए विशिष्ट इंजीनियरिंग उत्पादों में उनकी भूमिका के लिए डॉक्टर ऑफ साइंस (ऑनोरिस कॉसा) की डिग्री।
- नैसकॉम का ग्लोबल बिजनेस लीडर अवॉर्ड, 2012
- 'टेकिंग इंडिया एब्रोड के लिए सीएनबीसी–टीवी 18 इंडिया बिजनेस लीडर अवॉर्ड 2012
- जीक्यू बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर अवॉर्ड – 2011 कॉन्डे नास्ट इंडिया प्रा.लिमिटेड, कोंडेनास्ट ग्लोबल का सहयोगी।
- ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन (एआईएमए), मैनेजिंग इंडिया अवॉर्ड्स 2010 'बिजनेस
- लीडर ऑफ द ईयर, 2010
- द एआईएमए – 'आरडी टाटा कॉरपोरेट लीडरशिप अवॉर्ड
- जी.डी.पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, 2008 द्वारा उद्योग प्रशासन के क्षेत्र में उनकेअमूल्य योगदान के लिए डॉक्टर ऑफ साइंस (ऑनोरिस कारण) की मानद उपाधि।
- प्रौद्योगिकी के विकास के लिए और उद्योगों के क्षेत्र में देश को दूसरे देशों के साथ लाने के लिए,उद्योग के क्षेत्र में भागीदारी के लिए, तमिलनाडु में एसआरएम विश्वविद्यालय ने डॉक्टर ऑफ लिटरेचर, 2008 की उपाधि प्रदान की।

- द एशिया पैसिफिक ग्लोबल एचआर एक्सीलेंस – एग्जेम्पलरी अवॉर्ड, 2007
- द ग्लोबल इंडियन लीडर ऑफ द ईयर 'एनडीटीवी प्रॉफिट इन देअर बिज़नेस लीडर अवाड्र्स
- जून 2006 में मोनैको के मोंटे कार्लो में अर्न्स्ट एंड यंग वर्ल्ड एंटरप्रेन्योर अवॉर्ड में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जहाँ उन्हें अर्नस्ट एंड यंग वर्ल्ड एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर अकादमी के सदस्य के रूप में शामिल किया गया था।
- 'द अर्न्स्ट एंड यंग एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर अवॉर्ड, 2005
- बिजनेस टुडे, 2005 द्वारा सीईओ श्रेणी में 'यंग सुपर परफॉर्मर।
- वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (दावोस) द्वारा 9यंग ग्लोबल लीडर्स, 2004 में से एक के रूप में चयनित।
- बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, 2004 द्वारा डी.लिट (ऑनरिस कौसा) की उपाधि।
- ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन, 2004 द्वारा मानद फैलोशिप
- टाइम्स– द बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर, कॉरपोरेट एक्सीलेंस के लिए द इकोनॉमिक टाइम्स अवॉर्ड्स 2002-03
- बिजनेस इंडिया का बिजनेस मैन ऑफ द ईयर –2003
- मुंबई प्रदेश यूथ कांग्रेस, 2001 द्वारा बिजनेस एक्सीलेंस और देश के लिए उनके योगदान के लिए राजीव गांधी पुरस्कार।
- नेशनल एचआरडी नेटवर्क, 'द आउटस्टैंडिंग बिजनेस मैन ऑफ द ईयर 2001
- इंस्टीट्यूट ऑफ डायरेक्टर्स गोल्डन पीकॉक नेशनल अवॉर्ड फॉर बिजनेस लीडरशिप
- हिंदुस्तान टाइम्स, 'द बिज़नेसमैन ऑफ.द इयर
- बॉम्बे मैनेजमेंट एसोसिएशन – 'द मैनेजमेंट मैन ऑफ द ईयर 1999-2000
- 'कॉरपोरेट फाइनेंस के 10 सुपर स्टार्स में से ग्लोबल फाइनेंस, 1998

व्यवसाय से इतर समाज के कमजोर तबकों तक पहुंचने की कोशिश में

ट्रस्टीशिप की अवधारणा पर अमल करने वाले बिड़ला ने दूसरों को देने और उनकी देखभाल करने के सिद्धांत को संस्थागत रूप दिया है। उनके नेतृत्व में यह समूह भारत, थाइलैंड,इंडोनेशिया, फिलीपींस और मिस्र के सैकडों ग. रीब गाँवों और समाज के कमजोर तबकों की जीवन–गुणवत्ता सुधारने वाले कार्यक्रमों से जुडा है। बिरला जी के निर्देशन में इस समूह का सीएसआर निवेश लगभग 500 करोड.रुपये है।

भारत में यह प्रति वर्ष 7.5 मिलियन लोगों तक अपनी पहुंच बनाता हुआ 5000 गाँवों से जुड़ा हुआ है तथा स्वास्थ्य, शिक्षा, सतत जीविकोपार्जन, इंफ्रास्ट्रक्चर, सामाजिक कारक आदि पर आधारित विभिन्न परियोजनाओं के द्वारा उनकी जीवन शैली में बदलाव ला रहा है। उदाहरण के लिए यह समूह 56 स्कूल चलाता है जो कि 45000 बच्चों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करते हैं। इसके अलावा एक लाख युवा शैक्षणिक प्रोग्राम और व्यावसायिक प्रशिक्षण से लाभ उठा रहे हैं। इसके 22 अस्पताल 1 मिलियन से भी ज्यादा ग्रामीण लोगों को फायदा पहुंचा रहे हैं। सतत विकास के प्रति इसकी प्रतिबद्धता के क्रम में इसने मुंबई में कोलंबिया ग्लोबल सेंटर अर्थ्स इंस्टीट्यूट की स्थापना के लिए कोलंबिया यूनिवर्सिटी के साथ साझेदारी की। संस्थाओं में जीने के एक तरीके के रूप में सीएसआर को लागू करने के लिए दिल्ली में आदित्य बिरला सीएसआर सेंटर फॉर एक्सीलेंस स्थापित किया। मुंबई यूनिवर्सिटी से कॉमर्स में स्नातक हुए कुमार मंगलम बिरला जी चार्टर्ड अकाउंटैंट हैं। उन्होंने लंदन बिजनेस स्कूल से एमबीए किया।

जिन समुदायों के बीच हम काम करते हैं, उनके सामाजिक और आर्थिक विकास में सक्रिय योगदान देना चाहिए। ऐसा करते हुए हम समाज के कमजोर वर्गों के लिए जीवन का एक बेहतर और स्थायी तरीका निर्मित कर सकते हैं और देश के मानव विकास सूचकांक में भी वृद्धि सुनिश्चित होगी।

– राजश्री बिड़ला
चेयरमैन, आदित्य बिड़ला सेंटर फॉर कम्युनिटी इनिशिएटिव एंड रूरल डेवलपमेंट

आदित्य बिड़ला समूह में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व

ग्रामीण विकास व सामुदायिक पहलों हेतु आदित्य बिडला सेंटर (चेयरपर्सन, श्रीमती राजश्री बिडला) के माध्यम से आदित्य बिडला समूह वार्षिक रूप से 5000 गांव में कार्य करता है और 75 लाख लोगों तक अपनी पहुंच सुनिश्चित करता है।

फोकस के क्षेत्र :-

स्वास्थ्य देखभाल

5000 चिकित्सा शिविरों और 20 अस्पतालों में वार्षिक रूप से 10 लाख से अधिक मरीजों का उपचार किया गया है।

- 1200 से अधिक बच्चों की हार्ट फाँक की सर्जरी की गई है।
- 50 मूक-बधिर बच्चों (0-5 वर्ष के बीच की आयु वाले) की कोक्लियर इंप्लांट सर्जरी की गई है। यह बच्चों के लिए एक जिंदगी बदल देने वाला अनुभव था क्योंकि अब वे बोल और सुन सकते हैं।
- कर्नाटक (हरिहर – 3000 व्यक्ति) और लखनऊ (जगदीशपुर) में 5000 से अधिक शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को कृत्रिम अंग प्रदान करने के माध्यम से उन्हें आत्मनिर्भर बनाया गया है। यह भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के साथ किया गया है।
- आदित्य बिड़ला समूह की सीएसआर टीम ने पिछले 7 वर्षों में 7 करोड.बच्चों में पोलियो के विरुद्ध प्रतिरोधकता विकसित करने में सहायता की है। पिछले 3 वर्षों से रोटरी इंटरनेशनल के साथ मिलकर पोलियो का पुनरुत्थान रोकने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।
- माता व बालक स्वास्थ्य देखभाल परियोजनाएं : वर्ष भर में 1 लाख माताओं व उनके बच्चों की सहायता की जाती है।
- स्वास्थ्य देखभाल में समूह की सीएसआर परियोजना ग्राम सामाजिक उद्यमी चार राज्यों (आंध्र प्रदेश, केरल, हरियाणा व उत्तर प्रदेश) में 100 स्थानों पर तीन लाख लोगों को कवर करती है।
- विजन फाउंडेशन ऑफ इंडिया के साथ लगभग 6600 अंधे लोगों को दृष्टि प्रदान करने की एक विशाल परियोजना में आदित्य बिड़ला समूह का सीएसआर विंग संलग्न है। इसके अलावा संयंत्र टीमों और सरकार के सहयोग से 5000 लोगों के मोतियाबिंद की सर्जरी भी करते हैं।
- आदित्य बिड़ला सेंटर द्वारा समूह में संशोधित राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम के तहत 55000 मरीजों की देखभाल किया जा रहा है तथा डॉट (प्रत्यक्षत: पर्यवेक्षित उपचार) के अंतर्गत उनकी दवाइयाँ प्रशासित की जा रही हैं।
- एचआईवी एड्स जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से वार्षिक रूप से 30000 लोगों तक पहुंचा जाता है।
- आदित्य बिड़ला समूह ने अपनी इकाइयों के निकट के ग्रामीणों को पेयजल उपलब्ध कराने के लिए 550 आरओ संयंत्र स्थापित किया है।
- खुले में शौच से मुक्त गाँव बनाने की दिशा में कार्य करते हुए आदित्य बिड़ला समूह ने सामाजिक क्षेत्र के लिए सरकारी योजनाओं की आंशिक सहायता से 22,000 से अधिक टॉयलेट स्थापित करने में मदद की है। जम्मू-कश्मीर के 50 गांव के 2,000 घरों में 2,010 टॉयलेट उपलब्ध कराए हैं।

शिक्षा

संपूर्ण भारत में स्थित समूह के 56 विद्यालयों में 46,500 बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराया जा रहा है। देश के आंतरिक भागों से संबंध रखने वाले 32000 बच्चों को मेरिट छात्रवृत्ति उपलब्ध कराई जाती है। भारत

के आंतरिक भागों में 28,000 से अधिक बच्चों को उनका आत्मविश्वास निर्मित करने के लिए संवादात्मक अंग्रेजी सिखाई जा रही है।

आदित्य बिड़ला समूह बडौदा और ओडिशा में दिव्यांगों के लिए चलाई जा रही परियोजनाओं में सहयोग देता है। बड़ौदा में एमएस विश्वविद्यालय के साथ जुड़कर अपने संगठन 'प्रयास' के माध्यम से वार्षिक खेल कार्यक्रम का आयोजन भी आदित्य बिड़ला के सीएसआर विंग द्वारा किया जाता है । ओडिशा में समूह का सीएसआर विंग 'स्वाभिमान' के साथ जुड़ा हुआ है। वे शहरी गरीब परिवारों से संबंध रखने वाले 400 बच्चों के लिए कौशल व व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम चलाते हैं, जो पूर्णत: आदित्य बिड़ला समूह द्वारा वित्तपोषित है।

आदित्य बिड़ला समूह द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अन्य निम्नलिखित कार्य किये जा रहे हैं -

- राजस्थान में 20 विद्यालयों को मॉडल विद्यालयों में परिवर्तित करना।
- 40 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (लडकियों के लिए आवासीय विद्यालय) को समर्थन देना और बच्चियों के उद्देश्य को भी प्रोत्साहित करना ।
- मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र और ओडिशा के 31 दूरस्थ विकास खंडों के 4.5 लाख से अधिक छात्रों को सोलर लैंप प्रदान करना ।
- खेल (Knowledge Hub for e-learning) के माध्यम से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में 50 स्कूलों के 7500 छात्र, खेल, शिक्षा-शास्त्र, मनोविज्ञान मल्टीमीडिया विधियों से अंग्रेजी, गणित और विज्ञान सीखते हैं।
- प्रोजेक्ट ज्ञानार्जन के तहत 1,000 वंचित छात्रों को बोर्ड स्तर और सीईटी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग दी जाती है। इसके अलावा समूह की संयंत्र टीमों द्वारा बोर्ड परीक्षा में शामिल होने वाले लगभग 2,000 छात्रों की सहायता भी की जाती है। सरकार द्वारा संचालित नवोदय विद्यालयों की प्रवेश परीक्षा हेतु भी छात्रों को पढाते हैं।
- आदित्य बिड़ला समूह ने ओडिशा के केंझार जिले में मध्याह्न भोजन के अच्छी व्यवस्था सुनिश्चित की है, इसके माध्यम से 268 विद्यालयों में 63,000 बच्चों को मध्याह्न भोजन उपलब्ध कराया जाता है। इसके साथ ही परिवहन सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके अतिरिक्त लखनऊ, जयपुर, मैसूर, बेंगलुरू, सूरत, वड़ोदरा, पुरी, कटक और अहमदाबाद में 625 स्कूलों के 50,000 बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन प्रायोजित किया जाता है।

मॉडल गाँव

आदित्य बिड़ला समूह अपने सीएसआर कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण भारत में मॉडल गाँवों के निर्माण में सलग्न है। यह एक बृहद परिवर्तनकारी परियोजना है जिसके लिए समूह

ने 300 गाँवों को चुना है। 5 वर्षों की एक समय सीमा में ये गाँव हर तरीके से आत्मनिर्भर बनेंगे और गरीबी रेखा से नीचे की अपनी स्थिति से बाहर आएँगे। भारत के आंतरिक भागों में अब तक 90 से अधिक गांव मॉडल गाँव के स्तर तक पहुंच चुके हैं। ये गाँव तमिलनाडु, कर्नाटक, छत्तीसगढ, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान में स्थित हैं।

सीएसआर रणनीति

आदित्य बिड़ला समूह के सामाजिक कार्यक्रम आदित्य बिड़ला सेंटर फॉर कम्युनिटी इनिशिएटिव एंड रूरल डेवलपमेंट के तत्वावधान में संचालित किये जाते हैं। इसकी चेयरपर्सन श्रीमती राजश्री बिड़ला हैं व इसे डॉ. प्रज्ञा राम, ग्रुप एक्जीक्यूटिव प्रेसीडेंट, ग्रुप हैड - सीएसआर, लेगेसी डॉक्यूमेंटेशन एण्ड आर्काइव्स द्वारा प्रशंसनीय समर्थन प्राप्त है। आदित्य बिड़ला सेंटर सामाजिक कार्यक्रमों के लिए एक बेहतर रणनीतिक दिशा प्रदान करता है और कार्य के लिए अत्यावश्यक क्षेत्र चिह्नित करता है तथा निष्पादन प्रबंधन भी सुनिश्चित करता है। आदित्य बिड़ला समूह की सीएसआर टीम में 150 योग्य पेशेवर तथा 1000 जमीनी कार्यकर्ताओं का कार्य बल शामिल है। इसके अतिरिक्त सीएसआर समितियों का बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और संपन्न हुए कार्यों का मूल्यांकन भी करता है। वैश्विक स्तर पर आदित्य बिड़ला समूह ने सिर्फ सीएसआर के लिए लगभग 500 करोड़ का निवेश किया है। आदित्य बिड़ला सेंटर का ध्यान ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में स्थित समूह के संयंत्रों के आस-पास निवास करने वाले समुदायों के समग्र विकास पर है। समूह की सभी कंपनियों - ग्रेसिम हिंडालको एवं अल्ट्राटेक के अपने ग्रामीण विकास सेल हैं जो अपने - अपने स्तर पर समाज के लिए अपना योगदान देते हैं।

आदित्य बिड़ला समूह के आधार स्तम्भ

आदित्य बिड़ला समूह के मूल्यों और सफलताओं को दो महान व्यक्तियों के प्रेरक आदर्शों और दृष्टिकोणों में रचित होते देखा जा सकता है, जिन्होंने भारत और विदेशों में आदित्य बिड़ला समूह की नींव मजबूत करने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया।

घनश्याम दास बिड़ला

आदित्य बिड़ला समूह की जड़ें राजस्थान के रेगिस्तान के बीच स्थित पिलानी के सुरम्य शहर में 19वीं शताब्दी में पाई जा सकती हैं। यहां सेठ शिव नारायण बिड़ला ने बिडला घराने की आधारशिला रखते हुए कपास में व्यापार शुरू किया। यद्यपि 1850 का दशक भारतीयों के लिहाज से मुश्किल वक्त था फिर भी देश में व्यापार का तेजी से विस्तार हुआ। बीसवीं सदी की शुरुआत में, आदित्य बिड़ला समूह के संस्थापक श्री घनश्याम दास बिडला ने वस्त्र और फाइबर, एल्यूमीनियम, सीमेंट और रसायन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उद्योग स्थापित किए। महात्मा गांधी के एक निकट विश्वासपात्र के रूप में आपने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने गांधी जी के साथ लंदन में पहले और दूसरे दौर के सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। यह दिल्ली का बिडला हाउस ही था जहाँ अक्सर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिग्गज बैठते थे और ब्रिटिश राज के पतन की नीतियाँ बनाते थे।

श्री घनश्याम दास बिड़ला एक साथ संत स्वभाव को भी अपनाए रहे और व्यवसाय में भी सफलता हासिल की। आप इसमें कोई विरोधाभास नहीं देखते थे। वे स्वतंत्रता पूर्व के बड़े उद्योगपतियों में शुमार रहे। आपने जिन सिद्धांतों को जिया वो उनके पोते श्री आदित्य विक्रम बिड़ला के जीवन में भी उतर आया।

आदित्य विक्रम बिड़ला

श्री आदित्य बिड़ला ने मात्र 24 साल की उम्र में एक वैश्विक व्यापार साम्राज्य स्थापित करने का सपना देखा। उन्होंने पहली बार भारतीय व्यापार को विश्व पटल पर स्थापित किया और यह 1969 में हुआ तब जबकि वैश्वीकरण जैसी जादुई अवधारणा चर्चित भी नहीं हुई थी।

उस समय के मुक्त बाजार में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में, आपने विश्व स्तर का उत्पादन आधार स्थापित करने का साहस किया। उन्होंने परिवर्तन की हवाओं की कल्पना की थी और एक प्रतिस्पर्धी, मुक्त बाजार संचालित आर्थिक व्यवस्था पर अपने व्यापार के भविष्य को दांव पर लगा दिया था। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव और पूर्व केन्द्रीय वित्त मंत्री डॉ मनमोहन सिंह द्वारा आर्थिक उदारीकरण की औपचारिक रूप से शुरुआत करने से २२ वर्ष पहले ही भारतीय व्यापार को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत कर दिया।

आपने भारत के बाहर थाईलैंड, मलेशिया, इन्डोनेशिया, फिलीपींस और मिस्र में 19 कंपनियों की स्थापना की।

दिलचस्प बात यह है कि श्री आदित्य बिडला के लिए वैश्वीकरण का अर्थ भौगोलिक पहुंच से कहीं अधिक था। उनका मानना था कि भारत में रहने के दौरान भी एक व्यापार वैश्विक हो सकता है। इसलिए, इन्होंने अपने देश को ही आधार बनाते हुए उन कड़ियों को जोडना शुरू कर दिया जिनसे भारतीय व्यवसाय वैश्विक रूप से प्रभावशाली हो जाए। उनके नेतृत्व में, बिड़ला समूह ने विस्कोस स्टेपल फाइबर के उत्पादन में शीर्ष, ताड़– तेल परिशोधन की सबसे बडी रिफाइनरी, इंसुलेटर का तीसरा सबसे बडा उत्पादक और कार्बन ब्लैक का छठॉ सबसे बड़ा उत्पादक होने का गौरव प्राप्त किया। भारत में उन्होंने सीमेंट, ग्रे सीमेंट और रेयॉन ग्रेड लुगदी के उत्पादक होने के अलावा विस्कोस फिलामेंट यार्न के सबसे बड़े एकल उत्पादक का दर्जा प्राप्त किया। यह समूह निजी क्षेत्र में एल्यूमीनियम का सबसे बड़ा उत्पादक भी है। इसके अतिरिक्त यह भारत में वस्त्र उद्योग में लिनेन का एकमात्र उत्पादक है।

1995 में उनके असामयिक निधन के समय, समूह का राजस्व विश्व स्तर पर 8,000 करोड़ रुपये को पार कर गया था तथा 9,000 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति थी। उसी समय समूह के पास ५५ बेंचमार्क गुणवत्ता वाले संयंत्र, 75,000 की कर्मचारी संख्या और 60,000 के लगभग शेयरधारक थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि उनकी कंपनी भारत आधारित पहला अंतर्राष्ट्रीय व्यावसायिक समूह बना तथा देश के उन्नत व्यावसायिक घराने के रूप में लोगों का खूब प्रेम अर्जित किया। उद्यम के इस उत्कृष्ट रिकॉर्ड के माध्यम से उन्होंने राष्ट्र के लिए अपार संपदा अर्जित करने में मदद की और दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय उद्यमशीलता के लिए सम्मान अर्जित किया। अपने समय में, उनकी सफलता भारत के किसी भी अन्य उद्योगपतियों से बेहतर थी। .

विकसित देशों के बीच भारत को सम्मान दिलाने का सपना आप हमेशा देखा करते थे। आपको भारत पर गर्व था और आपने भारतीय होने पर भी उतना ही गर्व किया।

आदित्य बिड़ला समूह की नेतृत्व टीम

अजय श्रीनिवासन

श्री अजय श्रीनिवासन आदित्य बिड़ला कंपनी लिमिटेड में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के पद पर कार्य करते हैं। 2007 में आदित्य बिड़ला समूह में शामिल होने से पहले श्रीनिवासन प्रूडेंशियल कॉर्पोरेशन एशिया के चीफ एग्जीक्यूटिव – फंड मैनेजमेंट थे । प्रूडेंशियल में कार्य करने से पहले आप 'आईटीसी थ्रेडनीडल असेट मैनेजमेंट' में इंडिया ऑपरेशंस के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी' और मुख्य निवेश अधिकारी थे। अजय ने दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफंस कॉलेज से अर्थशास्त्र में बीए (ऑनर्स) किया है और आप भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद से एमबीए भी कर चुके हैं।

डॉ. संतृप्त मिश्रा

डॉ. संतृप्त मिश्रा वर्तमान में आदित्य बिडला समूह के लिए मानव संसाधन समूह के निदेशक, बिड़ला कार्बन के सीईओ और केमिकल फर्टिलाइजर्स एंड इंसुलेटर्स के निदेशक के रूप में कार्य करते हैं। ३० वर्षों से अधिक समय से एक एचआर पेशेवर और प्रख्यात व्यावसायिक नेतृत्वकर्त्ता रहे डॉ. मिश्रा ने लगभग 2 दशकों तक विभिन्न भारतीय व विदेशी कंपनियों और गैर–सरकारी संगठनों में बोर्ड स्तर पर कार्य किया है। आप ओएनजीसी के बोर्ड में एक स्वतंत्र निदेशक, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, राउरकेला के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष और एस्टन बिजनेस स्कूल के सलाहकारी बोर्ड (यूनाइटेड किंगडम) की प्रबंधन समिति तथा जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, भुवनेश्वर के बोड का हिस्सा हैं। आप 3 वर्षों तक एस.एच.आर.एम सर्टिफिकेशन कमीशन यूएसए के सदस्य भी रहे हैं।

डॉ. मिश्रा क्रमश: भारत व यूनाइटेड किंगडम से राजनीतिक विज्ञान एवं कार्मिक प्रबंधन व औद्योगिक संबंधों में स्नातकोत्तर डिग्री तथा लोक प्रशासन और औद्योगिक संबंधों में दो पीएचडी भी धारण करते हैं। डॉ. संतृप्त यूएसए स्थित नेशनल एकेडमी ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेज के अध्येता, कोचिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के मानद अध्येता, आइजन्नहावर अध्येता, एस्टन बिजनेस स्कूल के अध्येता, ए.आई.एम.ए अध्येता और कॉमनवेल्थ स्कॉलर रहे हैं।

अशोक गुप्ता

अशोक गुप्ता वर्तमान में समूह महाधिवक्ता, मुख्य विधिक अधिकारी और आदित्य बिड़ला मैनेजमेंट कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक हैं। इससे पहले आपने हिंदुस्तान यूनिलीवर के लिए 25 वर्षों तक विभिन्न पदों पर काम किया है। आदित्य बिड़ला समूह में आने से पहले आपने हिंदुस्तान यूनिलीवर में विधिक व सचिव-स्तरीय कार्यकारी निदेशक के रूप में सेवाएं दीं। आप कंपनी विधि नियम समिति के सदस्य हैं और 2018 की कॉरपोरेट विधि समिति के संयुक्त अध्यक्ष रहे हैं। श्री अशोक गुप्ता के पास विधि और वाणिज्य में स्नातकोत्तर डिग्री है। आप इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज. तथा इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट्स एंड मैनेजमेंट अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया के सदस्य भी हैं।

दिलीप गौर

दिलीप गौर ग्रेसिम इंडस्ट्रीज.के प्रबंध निदेशक, आदित्य बिड़ला समूह के अंतर्गत संचालित वैश्विक पल्प एवं फाइबर बिजनेस के प्रमुख तथा आदित्य बिड़ला मैनेजमेंट कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड के बोर्ड में निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। अपनी वर्तमान भूमिका से पहले वे अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड में उप प्रबंध निदेशक और मुख्य विनिर्माण अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे थे। आपने हिंडालको के वैश्विक तांबा व्यापार का भी नेतृत्व किया। श्री गौर बिरला कार्बन के मिस्र-आधारित व्यवसाय के प्रबंध निदेशक तथा मलेशिया/फिलीपींस में समूह के खाद्य तेल एवं ओलियो केमिकल्स के राष्ट्रीय प्रमुख के रूप में भी कार्य कर चुके हैं।

आप, हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड में 24 वर्ष तक फूड्स एच.पी.सी एवं स्पेशलिटी केमिकल्स व्यवसाय में कार्य करने के बाद 2004 में आदित्य बिड़ला समूह में शामिल हुए। वे खाद्य प्रबंधन समिति के सदस्य भी रहे हैं। श्री गौर केमिकल इंजीनियरिंग में स्नातक उपाधि धारण करते हैं। आपने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से उन्नत प्रबंधन कार्यक्रम भी पूर्ण किया है।

हिमांशु कपानिया

हिमांशु कपानिया वर्तमान में वोडाफोन आइडिया लिमिटेड के गैर-कार्यकारी निदेशक, ग्रेसिम इंडस्ट्रीज बोर्ड के उपाध्यक्ष तथा आदित्य बिड़ला समूह की व्यवसाय समीक्षा परिषद के सदस्य हैं।

पहले बिरला AT&T के रूप में जानी जाने वाली आइडिया में कपानिया 1997 में शामिल हुए। आइडिया सेल्यूलर लिमिटेड में अपने कार्यकाल के दौरान अपने मुख्य संचालन अधिकारी (2006-2011), उसके बाद मार्च 2011 से सितंबर 2018 तक आइडिया के प्रबंध निदेशक के रूप में कार्य किया। कपानिया बिडला इंस्टिट्यूट ऑफ. टेक्नोलॉजी, मेसरा और भारतीय प्रबंधन संस्थान, बैंगलोर के भूतपूर्व छात्र हैं।

के.के. माहेश्वरी

के.के. माहेश्वरी अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक हैं। वह ग्रुप के साथ 35 वर्षों से अधिक समय से जुड़े हुए हैं और आपने समूह के विभिन्न व्यवसायों जैसे– पल्प, फाइबर एवं टेक्सटाइल, वैश्विक रसायन व्यवसाय, वैश्विक अंतरराष्ट्रीय ट्रेडिंग व्यवसाय और सीमेंट व्यवसाय का नेतृत्व किया है। इससे पूर्व आपका कार्य ग्रेसिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड के प्रबंध निदेशक का था। श्री माहेश्वरी आदित्य बिड़ला मैनेजमेंट कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक के रूप में भी कार्य करते हैं।

आप 4 वर्षों तक बैंकॉक स्थित न्यू इंटरनेशनल स्कूल ऑफ थाईलैंड के बोर्ड सदस्य व ट्रस्टी रहे हैं। माहेश्वरी भारत के मानव निर्मित फाइबर उद्योग के अध्यक्ष तथा राज्य बिजली बोर्डों में सुधार हेतु विद्युत मंत्रालय द्वारा गठित अहलूवालिया समिति के सदस्य भी रह चुके हैं। आप वाणिज्य में स्नातकोत्तर उपाधि धारण करते हैं तथा इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया के अध्येता सदस्य भी हैं।

प्रणब बरुआ

प्रणब बरुआ आदित्य बिड़ला फैशन एवं रिटेल लिमिटेड के गैर–कार्यकारी निदेशक हैं और वे आदित्य बिडला समूह में ग्रुप मेंटर भी हैं। आप 2009-2017 के बीच आदित्य बिड़ला फैशन एवं रिटेल लिमिटेड के व्यवसाय निदेशक भी रहे हैं। आप पास रेकिट बेनकिसर, हिंदुस्तान यूनिलीवर जैसे खाद्य व खुदरा क्षेत्र के कई अन्य निजी इक्विटी समूहों में कार्य करने का 45 वर्षों का पेशेवर अनुभव है।

श्री बरुआ दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इंग्लिश ऑनर्स में स्नातक हैं। आपने कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। इनमें फोर एकर्स, यूनाइटेड किंगडम में जनरल मैनेजमेंट कोर्स और स्टैनफोर्ड ग्रेजुएट स्कूल ऑफ बिजनेस यूएसए में एडवांस्ड मैनेजमेंट प्रोग्राम जैसे कार्यक्रम शामिल हैं।

समूह के व्यवसाय में उनके योगदान तथा दूरदर्शितापूर्ण नेतृत्व हेतु आदित्य बिड़ला ग्रुप के चेयरमैन श्री कुमार मंगलम बिड़ला द्वारा 2011 में आपको अपनी तरह का पहला लीडर ऑफ लीडर्स पुरस्कार प्रदान किया गया था।

सतीश पई

सतीश पई हिंडालको इंडस्ट्रीज.के प्रबंध निदेशक व आदित्य बिडला मैनेजमेंट कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड के बोर्ड निदेशक हैं। श्री पई आदित्य बिडला समूह में हिंडालको के एल्युमीनियम व्यवसाय के सीईओ के रूप में 2013 में शामिल हुए थे। आपने हिंडालको के उप प्रबंध निदेशक के रूप में भी कार्य किया है तथा इसके तांबा व्यवसाय का भी नेतृत्व किया है। आदित्य बिड़ला समूह में शामिल होने से पहले श्री पई 28 वर्षों से पेरिस से संचालित होने वाले श्लमबर्गर के लिए काम कर रहे थे।

आप ए.बी.बी ज्यूरिक के बोर्ड में निदेशक के रूप में भी काम करते हैं। सतीस पई इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मेटल्स के आजीवन सदस्य हैं और सी. आई.आई द्वारा चीन पर गठित टास्क फोर्स का हिस्सा हैं। आप एल्युमीनियम एसोसिएशन ऑफ इंडिया की सरकारी मामलों की समिति के चेयरमैन व उपाध्यक्ष के पद पर कार्य करते हैं और फिक्की की अलौह धातु समिति के अध्यक्ष हैं।

सुशील अग्रवाल

श्री सुशील अग्रवाल वर्तमान में आदित्य बिडला समूह के लिए ग्रुप सीएफओ और आदित्य बिडला मैनेजमेंट कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक के रूप में कार्य करते हैं। आप कई समूह कंपनियों के बोर्ड में निदेशक के रूप में भी कार्य करते हैं। इनमें आदित्य बिडला कैपिटल लिमिटेड व आदित्य बिडला फैशन एवं रिटेल लिमिटेड शामिल हैं। आप समूह की व्यवसाय समीक्षा परिषद के सदस्य भी हैं। वे समूह के साथ पिछले 30 वर्षों से जुडे.हुए हैं और उन्हें समूह के पूर्व चेयरमैन स्वर्गीय आदित्य विक्रम बिडला और वर्तमान चेयरमैन कुमार मंगलम बिडला के साथ निकटता से कार्य करने की उपलब्धि प्राप्त है। अपनी विख्यात वित्तीय कुशाग्रता व विश्लेषण कौशल के द्वारा उन्होंने समूह हेतु कई पुनर्संरचनाओं, विलयों व अधिग्रहणों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

2018 में आपको एशिया वन इंडियाज.ग्रेटेस्ट ब्रांड्स एंड लीडर्स अवॉर्ड्स में 'इंडियाज.ग्रेटेस्ट सीएफओ' के रूप में पुरस्कृत किया गया था। 2018 में ही 11वें आई.सी.ए.आई अवॉर्ड्स में आपको 'बिजनेस लीडर कॉरपोरेट सीएफओ' से सम्मानित किया गया था। आदित्य बिडला समूह के चेयरमैन द्वारा आपको 2000 में एक्सेप्शनल कंट्रीब्यूटर अवार्ड तथा 2014 में आउटस्टैंडिंग लीडरशिप अवॉर्ड प्रदान किया गया था। सुशील अग्रवाल एक योग्य चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं और आप कॉमर्स में स्नातकोत्तर की उपाधि धारण करते हैं।

◆◆◆

भारत के तपः पूत स्व.आर्देशिर गोदरेज

राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और उद्योग जगत में गोदरेज समूह का विशेष और महत्वपूर्ण योगदान है। वर्ष 1897 में जब भारत गुलामी के दौर में जी रहा था, उस समय 7 मई, 1897 को एक महान राष्ट्रभक्त, दूरदर्शी और कुशाग्र व्यवसायी श्री आर्देशिर बुरजोर जी सोराबजी ने एक ताले बनाने के व्यवसाय की शुरुआत के साथ गोदरेज समूह की स्थापना की। भारत के औद्योगिक इतिहास में गोदरेज परिवार की तरह बेहद ईमानदार और बेदाग उद्योग घराना ढूंढ़ना मुश्किल है। आज विश्व के 60 से भी अधिक देशों में गोदरेज की कंपनियों की पहुँच है और यह उद्योग समूह लगभग 28,000 से भी अधिक लोगों को रोजगार प्रदान कर भारतीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपना सर्वोत्कृष्ट और अप्रतिम योगदान दे रहा है। वर्तमान में इस महान उद्योग समूह का नेतृत्व श्री आदि बी. गोदरेज जी कर रहे हैं जो इस समूह के चेयरमैन (अध्यक्ष) भी हैं। इस उद्योग समूह के महान संस्थापक श्री आर्देशिर गोदरेज जी ने जिस सिद्धांतो और मूल विचारों के साथ समूह की स्थापना की थी, आज भी उसी विश्वास, गुणवत्ता और मौलिक सिद्धांतो के आधार पर गोदरेज समूह आर्थिक और विश्वव्यापी प्रगति के पथ पर गतिशीलता के साथ निरंतर अग्रसर है। गोदरेज समूह भारतीय उद्योग जगत और अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है और लगभग 20 से भी अधिक व्यावसायिक क्षेत्रों में, जिसमें हेअर डाय, फ्रिज, वाशिंग मशीन, मैटेरियल हैंडलिंग,गृहनिर्माण, औद्योगिक रसायन इत्यादि अनगिनत उत्पादों के क्षेत्र में कंपनी कार्य कर रही है।

आइये एक दृष्टि डालते हैं गोदरेज समूह के संस्थापक श्री आर्देशिर गोदरेज जी की औद्योगिक यात्रा पर जिनकी ईमानदारी अप्रतिम सेवा कार्यों और औद्योगिक दूरदर्शिता की सुगंध सम्पूर्ण वसुधा पर फैली हुई है। भारतीय उद्योग जगत में पारसी घराने अपना एक अलग महत्व रखते हैं। टाटा, गोदरेज, मिस्त्री आदि औद्योगिक घरानों ने करीब 100 वर्षों से भी अधिक समय से उद्योग स्थापित कर भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया है और अपने उत्पादों के 'विश्वास" के कारण उन्होंने सामान्य ग्राहकों का दिल सदैव जीता है। ऐसा ही एक लोकप्रिय और प्रसिध्द पारसी उद्योग घराना है "गोदरेज" और प्रस्तुत है इसके महान संस्थापक आर्देशिर गोदरेज की व्यक्तिगत और औद्योगिक जीवन यात्रा :- पूरा नाम है आर्देशिर बुरजोरजी सोराबजी गोदरेज और इनका जन्म मुंबई में वर्ष 1868 में छह भाई – बहनों के बड़े परिवार में बुरजोरजी और दोसीबाई गोथारजी के घर में हुआ। गोथारजी परिवार मुंबई, के अत्यधिक समृद्धशाली परिवारों में से एक था और मूल रूप से प्रापर्टी के कारोबार से जुड़ा था। वर्ष 1871 में बुरजोर जी ने अपना उपनाम बदलकर 'गोथारजी" से "गोदरेज" कर लिया, जो उच्चारण में अधिक सरल था।आर्देशिर गोदरेज अत्यधिक तीक्ष्ण और कुशाग्र व्यक्ति थे और उन्होंने वकालत की पढ़ाई भी की थी। 1890 में आर्देशिर जी की शादी बचुबाई से हुई, लेकिन दुर्भाग्यवश एक दुर्घटना में बचुबाई का निधन हो गया। अपनी स्वर्गवासी पत्नी की याद में उन्होंने कभी दूसरी शादी नहीं की। आपने वर्ष 1894 में जंजीबार (ईस्ट अफ्रीका) में वकालत की शुरुआत की, पर झूठ न बोलने की आदत के कारण आपकी वकालत न चली जो स्पष्ट तौर पर यह बताता है कि आप एक ईमानदार व्यक्तित्व के परिचायक थे। वर्ष 1894 में आप वापस मुंबई आ गये और एक फॉर्मेसी कंपनी में केमिस्ट के सहायक के रूप में नौकरी की। 1895 में आपने मेरवान जी मुचेरजी कामा से मुलाकात की, जो उस समय मुंबई पारसी समाज के सबसे सम्माननीय

सदस्यों में एक थे। आर्देशिर जी ने उन्हें अपनी सर्जरी के लिए लगने वाली औजार की यूनिट की योजना बताई और उनसे ऋण देने की गुजारिश की। कामा के यह पूछने पर कि वे अपने पिता से ऋण क्यों नहीं लेते, आर्देशिर ने कहा, "वे मुझे पैसे उपहार में देंगे, ऋण नहीं देंगे और मुझे उपहार में नहीं चाहिए।" कामा ने यह बात सुनकर उन्हें 3000 रु. ऋण में दे दिये और आर्देशिर गोदरेज ने सर्जरी के उपयोग में आने वाले छूरे, चाकू, कैंची इत्यादि बनाना शुरु कर दिया। सभी औजार बढ़िया बने और सामने वाली कंपनी का मालिक, जो ये औजार खरीदने वाला था, औजारों की गुणवत्ता देखकर बहुत खुश हुआ।

आर्देशिर गोदरेज ने कहा कि इस पर "मेड इन इंडिया" लिखा जाना चाहिए। इस पर ब्रिटिश मालिक ने कहा कि वो ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि "मेड इन इंडिया" लिखा हुआ माल बिकेगा नहीं। परन्तु आर्देशिर गोदरेज अपनी शर्त पर अडिग रहे। दोनों पक्षों के अपनी शर्तों पर अडिग रहने के कारण वह सौदा नहीं हो पाया और इस तरह अपना पहला धंधा गोदरेज को बंद करना पड़ा। एक सुबह आर्देशिर गोदरेज ने बंबई में बढ़ती हुई चोरी की घटनाओं के बारे में अखबार में पढ़ा और साथ ही पुलिस कमिश्नर का बयान भी कि हर किसी को अपने घर व कार्यालय की बेहतर सुरक्षा करनी चाहिए। यह पढ़कर आर्देशिर गोदरेज के दिमाग में ताले बनाने का विचार आया और उन्होंने इस क्षेत्र की जानकारी लेनी शुरु की तो उन्हें पता चला कि भारत में बनने वाले सभी ताले उस वक्त हाथ से बनाए जाते थे और वे बिल्कुल भी मजबूत नहीं थे। अब आर्देशिर गोदरेज ने ऐसे ताले बनाने की ठान ली, जो कोई तोड़ न सके और फिर से वह मेरवान जी कामा के पास गये। पिछले 3,000 रुपये न चुका पाने के लि उन्होंने उनसे माफी माँगी और अपने नए ताले बनाने की योजना के बारे में बताया। मेरवान जी भी इसके लिए उत्सुक हो गये, क्योंकि उन्होनें भी समाचार पत्र में वही सब बातें पढ़ी थीं और कामा ने गोदरेज को नए उद्योग के लिए लगने वाली पूँजी देने का वादा किया। 7 मई, 1897 को मेरवान जी कामा की पूँजी के साथ बॉम्बे गैस वर्क्स के बगल में २१५ फीट के गोडाउन में 40 स्टीम प्रेस गुजरात और मालाबार से बुलाए गये 12 प्रशिक्षित कारीगरों के साथ "गोदरेज" ताला बनाने के काम की शुरुआत हुई। शुरु में आर्देशिर गोदरेज ने "हाई सिक्यूरटी" ताले एंकर ब्रांड में बनाने शुरु किये। उसमें साथ में "ना टूटने" की गारंटीवाला पत्र जोड़ा जाता था। उसके बाद आर्देशिर गोदरेज ने संदूक में लगने वाले सादे ताले बनाने शुरू कये, जिसके साथ एक नोट लिखा होता था कि इसकी सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। साथ ही उसमें कितने लिवर है, यह भी लिखा रहता था। साथ ही यह गारंटी भी रहती थी कि हर ताले व चाबी का सेट अनूठा है और दूसरी कोई चाबी वह ताला नहीं खोल सकती। कुछ वर्षों बाद आर्देशिर गोदरेज द्वारा "गॉर्डियन" ताला और "डिक्टेटर" ताला जैसी नई वेराइटीज बाजार में लाई गई। तालों के साथ दी जाने वाली छोटी बुकलेट में तालों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी रहती थी। यह बात आर्देशिर गोदरेज की गुणवत्ता के प्रति आग्रह की दृष्टि बताती है। वर्ष 1901 में आर्देशिर गोदरेज ने आलमारियाँ बनाने की सोची। गोदरेज ने उस वक्त न केवल चोरों से भी सुरक्षित बल्कि आग से सुरक्षित आलमारी बनाने की ठानी।

आर्देशिर गोदरेज ने कागजों पर दर्जनों डिजाइन बनवाये और अपने इजीनियरों और कारीगरों के साथ अनगिनत बार चर्चा की। चर्चा का सार शीट से यह निकला कि केवल एक ही स्टील की शीट से अलमारी बनाई जाए तो वह सबसे मजबूत रहेगी। तो एक शीट को सोलह बार बैंड किया जाता था। दरवाजे डबल प्लेटेड किये जाते थे ओर ताव हिंजेस सबसे अच्छी क्वालिटी के इस्तेमाल किये जाते थे। इस आलमारी का कुल वजन था पौने दो टन और तीन पेटेंट इसके लिए गोदरेज को करवाने पड़े। 1902 में पहली आलमारी बाजार में आई और लोगों ने इसे हाथोंहाथ खरीदा। 1900 में गोदरेज को स्प्रिंगलेस तालों के लिए ब्रिटिश पेटेंट मिल गया और इस पेटेंट के कारण आर्देशिर गोदरेज ने इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी जाकर वहाँ के तालों के यूनिट देखने की सोची, पर जाने से पहले वे मेरवान जी कामा से मिलकर उनसे उधार लिये हुए 3000 रुपये वापस करने के लिए गये, जो कि उस वक्त मृत्यु शय्या पर पड़े थे। मेरवान जी कामा ने पैसे लेने से मना कर दिया और पूछा कि क्या वे उनके भतीजे बॉयस को अपनी कंपनी में रख सकते हैं? इस पर गोदरेज ने कहा, "हम आपको न कह ही नहीं सकते।" हम उसे अपना पार्टनर बना लेते हैं। अपने वादे के मुताबिक आर्देशिर गोदरेज एवं फिरोजशा गोदरेज बंधुओं ने बॉयस को पार्टनर बना लिया और कंपनी का नाम "गोदरेज एंड बॉयस मैन्युफैक्चरिंग कंपनी" रख लिया। पर बॉयस को उस कंपनी में रुचि नहीं थी।
आर्देशिर गोदरेज के यूरोप से आने के बाद बॉयस ने स्वयं ही कंपनी छोड़ दी लेकिन कंपनी का नाम "गोदरेज एण्ड बॉयस मैन्युफैक्चुरिंग कंपनी" आज भी कायम है। यूरोप से लौटकर आर्देशिर ने काफी नई – नई तकनीकें

अपने उद्योग में अपनाई। भाई फिरोजशा ने उद्योग बढ़ाते – बढ़ाते करीब 600 कारीगर कर लिये। "गोदरेज" का ताला और अलमारी का व्यवसाय फल – फूल रहा था, पर भारत में ब्रिटिश राज और उनके द्वारा लादे गये अन्यायकारक टैक्स गोदरेज को बेचैन करते थे। किसी देश को स्वतंत्र होने के लिए उसे खुद के उत्पाद बनाने चाहिए, खुद की तकनीक विकसित करनी चाहिए, यह उनका मानना था। आर्देशिर गोदरेज जी महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी थे और और मानते थे कि स्वदेशी के नाम पर कभी भी दोयम गुणवत्तावाली वस्तु को उपभोक्ता के सिर पर नहीं मढ़ना चाहिए। भारत की परतंत्रता के वर्ष थे। वर्ष 1906 में कांग्रेस के अधिवेशन में लोकमान्य तिलक के आग्रह पर आर्देशिर गोदरेज ने स्वदेशी का सिध्दांत अपनाने की कसम खाई। उस वक्त नहाने के सभी साबुनों में जानवरों की चरबी इस्तेमाल की जाती थी जो कि हिंदू धर्म के लोगों की भावनाएँ आहत करती थी। इसलिए आर्देशिर गोदरेज ने सर्वप्रथम वनस्पति तेलों का उपयोग कर साबुन बनाया। वर्ष 1920 में इस साबुन को बाजार में उतारा गया और "नं.1" और "नं.2" नाम के इस साबुन से गोदरेज सोप्स की शुरुआत हुई (नं. 1 का विज्ञापन आज भी हम टी.वी. पर देख रहे हैं), जो इतना सफल हुआ कि आर्देशिर गोदरेज ने ताले और अलमारी का व्यवसाय भाई फिरोजशा के कंधे पर सौंपकर खुद को साबुन के व्यवसाय को बढ़ाने में व्यस्त कर लिया और फिर "तुर्किश बाघ" और अन्य साबुन बाजार में आए। पर दाढ़ी बनाने के लिए प्रयोग किये जाने वाला "वतनी" साबुन गोदरेज का सबसे हिट प्रोडक्ट रहा।

राष्ट्रभक्त आर्देशिर गोदरेज ने वर्ष 1920 में "तिलक स्वराज फंड" में 3 लाख रुपये दिये। गाँधी जी ने इसे उस वक्त का सबसे बड़ा चंदा बताया। 1928 में नि:संतान आर्देशिर गोदरेज ने अपने सारे बिजनेस भाई फिरोजशा को सौंपकर नासिक स्थानांतरित होने का फैसला किया, जहाँ उन्होंने शास्त्रोक्त विधि से खेती की। इस महान राष्ट्रभक्त कमयोगी की वर्ष 1936 में स्वाभाविक मृत्यु हो गई। आज आर्देशिर गोदरेज द्वारा स्थापित किया गया "गोदरेज समूह" भारतीय उद्योग जगत का अविभाज्य अंग है और लगभग 20 से अधिक क्षेत्रों में जिसमें हेअर डाय, फ्रिज, वाशिंग मशीन, मैटेरियल हैंडलिंग, ट्रक्स, कंस्ट्रक्शन, औद्योगिक रसायन इत्यादि अनगिनत प्रोडक्टस में कंपनी काम कर रही है। करीब 50 करोड़ भारतीय प्रतिदिन 'गोदरेज" का कोई – न – कोई उत्पाद प्रयोग करते हैं। सम्पूर्ण विश्व में 60 से ज्यादा देशों में गोदरेज समूह की उपस्थिति है और करीब 28 हजार से अधिक कर्मचारियों का समूह है। फिरोजशा गोदरेज के पोते आदि गोदरेज के नेतृत्व में आज यह समूह उसी धारणा, और विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है जो आर्देशिर गोदरेज ने समूह के स्थापना के समय स्थापित की थी। "अपने सिध्दांतों पर विश्वास और अमल" यह आर्देशिर गोदरेज की सबसे बड़ी विशेषता थी। जब उन्होंने निश्चय किया कि किसी से भी पैसा उपहार स्वरूप नहीं लेंगे तो उन्होंने अपने पिता के मरणोपरांत वर्ष 1918 में उनकी दौलत तक स्वीकार नहीं की। गुणवत्ता पर कभी समझौता न करना और उपभोक्ता के सामने सम्पूर्ण पारदर्शिता रखना ये दो महान गुण गोदरेज में थे।

आदि गोदरेज
चेयरमैन, गोदरेज ग्रुप

भारत के अलंकरण पद्मभूषण

आदि गोदरेज

अमेरिका के प्रतिष्ठित एम. आई.टी. संस्थान से एम.बी.ए. करने के बाद आदि गोदरेज भारत वापस आ गये और अपने पारिवारिक व्यवसाय में शामिल हो गये। आदि गोदरेज प्रबंधन की शिक्षा ग्रहण करने के बाद कंपनी में शामिल होने वाले पहले व्यक्ति थे और समूह को आदि गोदरेज से अधिक उम्मीदें थीं। आदि गोदरेज के शामिल होने से पहले कंपनी पुरानी अवधारणा पर कार्य कर रही थी जिसे आदि ने परिवर्तित करना आवश्यक समझा।

आदि गोदरेज जी एक न्याय प्रिय, सिद्धांत प्रिय, शांतिप्रिय, राष्ट्रसेवी तथा परोपकारी व्यक्तित्व हैं। आपके कुशल एवं प्रभावशाली नेतृत्व में भारतीय अर्थव्यवस्था में गोदरेज समूह का अति महत्वपूर्ण योगदान है। भारत आप से गौरवान्वित है, सुशोभित है।

भारतीय उद्योग जगत में ऐसे तमाम महान उद्योगपति हैं जिन्होंने अपनी क्षमता, पात्रता, योग्यता, कर्मठता, दूरदर्शिता और व्यावसायिक कुशाग्रता के माध्यम से भारतीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था में अभूतपूर्व योगदान देकर भारत की गरिमा और प्रतिष्ठा में व्यापक वृध्दि की है। ऐसे ही महान भारतीय उद्योगपतियों की श्रेणी में गोदरेज समूह के अध्यक्ष आदि गोदरेज का नाम अत्यधिक लोकप्रिय है। आदि गोदरेज का समाजसेवी, परोपकारी और राष्ट्रप्रेमी स्वभाव उनके औद्योगिक व्यक्तित्व में चार चाँद लगाता है तथा गोदरेज समूह की व्यावसायिक अवधारणा को निरंतर चरितार्थ करता रहता है। आदि गोदरेज भारत के सबसे धनी उद्योगपतियों में से एक हैं। आदि गोदरेज का जन्म 3 अप्रैल, 1942 को मुंबई में हुआ था और प्रारंभिक शिक्षा भी मुंबई में ही हुई। उनहोंने एच.एल. कॉलेज से स्नातक और एम.आई.टी. स्लोअन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट से एम.बी.ए. की पढ़ाई की है। आप प्रबंधन की पढ़ाई के दौरान "पाई लैम्ब्डा फाई" और "ताऊ बीटा पाई" के सदस्य भी थे और वर्ष 1963 में प्रबंधन की पढ़ाई पूरी की। अमेरिका के प्रतिष्ठित एम.आई.टी. संस्थान से एम.बी.ए. करने के बाद आदि गोदरेज भारत वापस आ गये और अपने पारिवारिक व्यवसाय में शामिल हो गये। आदि गोदरेज प्रबंधन की शिक्षा ग्रहण करने के बाद कंपनी में शामिल होने वाले पहले व्यक्ति थे और समूह को आदि गोदरेज से अधिक उम्मीदें थी। आदि गोदरेज के शामिल होने से पहले कंपनी पुरानी अवधारणा पर कार्य कर रही थी जिसे

आदि ने परिवर्तित करना आवश्यक समझा। आपने कुशल नीति निर्माण, संतुलित और आधुनिक योजनाओं व प्रक्रियाओं के माध्यम से कंपनी के प्रबंधन प्रणाली को सुव्यवस्थित और विकसित बनाया। अगर आज गोदरेज समूह एक "पारिवारिक कंपनी" से हटकर एक "पेशेवर कंपनी" है तो इसका श्रेय श्री आदि गोदरेज जी को जाता है। श्री आदि गोदरेज जी के नेतृत्व और मार्गदर्शन के माध्यम से गोदरेज समूह विभिन्न सामाजिक और परोपकारी गतिविधियों में भी शामिल है। श्री गोदरेज जी "वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फण्ड इन इंडिया" के प्रबल और महत्वपूर्ण समर्थक अध्यक्ष हैं। वर्ष 2012-13 के लिए आपको "कॅन्फेडरेशन ऑफ इंडिया इंडस्ट्री" का अध्यक्ष भी चुना गया था। आप नरसी मोंजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के बोर्ड ऑफ डॉयरेक्टर्स के अध्यक्ष हैं और व्हार्टन एशियन एग्जिक्यूटिव बोर्ड के सम्मानित सदस्य भी हैं।

व्यक्तिगत जीवन

आपकी शादी विश्व प्रसिध्द सोशलाइट और परोपकारी परमेश्वर गोदरेज जी से हुई किंतु ऐसी जनोपकारी और राष्ट्रसेवी व्यक्तित्व की परिचायिका स्व. परमेश्वर गोदरेज अब हमारे बीच नहीं हैं। आपके तीन बच्चे हैं, सबसे बड़ी बेटी तान्या – गोदरेज इंडस्ट्रीज में कार्यकारी निदेशक हैं और विपणन विभाग की अध्यक्ष हैं। आपकी दूसरी बेटी निशा–गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लि. की कार्यकारी निदेशक हैं और बेटे पिरोजशा – गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं।

सम्मान

- श्री आदि गोदरेज को उत्कृष्ट सामाजिक, औद्योगिक और आर्थिक सेवाओं के लिए अनेक राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।
- वर्ष 2002 में राजीव गांधी पुरस्कार
- द अमेरिकन इंडिया फाऊंडेशन लीडरशिप इन फिलान्थ्रोपी अवॉर्ड, 2010
- एशिया पैसिफिक इंटरप्रेन्योरशिप सम्मान, 2010 में "इंटरप्रेन्योर ऑफ द इयर" पुरस्कार से सम्मानित
- जी.क्यू मैन ऑफ द इयर अवॉर्ड 2010 में "बेस्ट बिजनेसमैन ऑफ द इयर" पुरस्कार से सम्मानित
- चेमेक्सिल के "लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार"–2010 से सम्मानित
- एआईएमए – जेआरडी टाटा कॉर्पोरेट लीडरशिप सम्मान, 2010

- बॉम्बे मैनेजमेंट एसोसिएशन – मैनेजमेंट ऑफ द इयर पुरस्कार; 2010-2011
- किम्प्रो प्लैटिनम स्टैण्डर्ड अवॉर्ड फॉर बिजनेस–2011
  अर्न्स्ट एंड यंग इंटरप्रेन्योर ऑफ द इयर–2012
  भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित,–2012
- द एशियन अवॉर्ड्स – इंटरप्रेन्योर ऑफ द इयर–2013
- आल इंडियन मैनेजमेंट एसोसिएशन – बिजनेस लीडर ऑफ द इयर 2015

नादिर गोदरेज
मैनेजिंग डायरेक्टर, गोदरेज इंडस्ट्रीज

उद्योगपति, कवि एवं साहित्य प्रेमी
नादिर गोदरेज

नादिर गोदरेज गोदरेज समूह के प्रबंध निदेशक के साथ-साथ समूह से जुड़ी अनेक कम्पनियों के निदेशक हैं। आप उच्च शिक्षित हैं, कवि, साहित्यकार एवं उच्चकोटि के बिजनेस स्पीकर हैं। आप हिन्दी, अंग्रेजी के अलावा अनेक विदेशी भाषाओं के ज्ञाता हैं।

गोदरेज समूह के प्रबंध निदेशक नादिर बी. गोदरेज एक उच्च शिक्षित और लोकप्रिय उद्योगपति के साथ-साथ साहित्य प्रेमी और कवि भी हैं। नादिर गोदरेज अपनी औद्योगिक दक्षता, दूरदर्शिता और कुशल व्यावसायिक प्रबंधन के माध्यम से गोदरेज समूह को मजबूती प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। नादिर जी एक तेजतर्रार प्रभावशाली और प्रसिद्ध औद्योगिक वक्ता भी हैं और उद्योग जगत में आप एक कुशल वक्ता के रूप में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। बिजनेस फोरम में वक्ता के रूप में आपकी काफी माँग है और आप वक्तव्य भी कविताओं की शक्ल में देते हैं। आप रूसी कवि एलेग्जेंडर पुश्किन और इग्लैंड के रोमांटिक दौर के कवियों से भी प्रभावित हैं। आप फ्रेंच और अंग्रेजी के अलावा हिंदी, रूसी और जर्मन भाषा में बोलते हैं। नादिर गोदरेज इंडस्ट्रीज के प्रबंध निदेशक और गोदरेज एग्रोवेट के चेयरमैन हैं। इसके अलावा आप गोदरेज एंड बॉयस, गोदरेज फूड्स और गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स सहित कई अन्य कंपनियों के भी निदेशक हैं। भारतीय उद्योग जगत के अनुभवी के रूप में नादिर गोदरेज ने गोदरेज के पशु चारा, कृषि इनपुट और रसायन व्यवसायों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपकी सक्रिय रुचि अनुसंधान संबंधित क्षेत्रों में ज्यादा है जिसके फलस्वरुप कृषि रसायन एवं सरफेक्टेंट्स जैसे कई क्षेत्रों में आपने सफल उत्पाद दिए हैं। नादिर ने अपने जबरदस्त अनुभव और विशेषज्ञता के साथ भारत के कम्पाउंड पशुधन फीड मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन, इंडियन केमिकल मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन और ऑयल टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया आदि उद्योग निकायों में भाग लेकर विभिन्न प्रकार के उद्योगों के विस्तार एवं विकास के लिए योगदान दिया है। वर्तमान में नादिर गोदरेज इंडोफ्रेंच तकनीकी एसोसिएशन और एलायंस फेसिस मुंबई के अध्यक्ष हैं। भारत फ्रांस संबंधों में आपके योगदान के लिए आपको फ्रांस सरकार द्वारा "शेवलियर ड लोर्डर नेशम ड्यू मेराइट" और "दि नेशनल ऑर्डर ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर" पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। आपने मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से केमिकल इंजीनियरिंग में स्नातक तथा स्टैनफोर्ड युनिवर्सिटी से परास्नातक एवं हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से एमबीए की शिक्षा भी प्राप्त की। आप अपनी पत्नी व तीन बच्चों के साथ मुंबई में रहते हैं। आप की तीन संताने हैं – बुर्गिस (14), सोहराब (12) और हॉर्मुल्जी (10)।

> नादिर गोदरेज लोकप्रिय उद्योगपति के साथ-साथ साहित्य प्रेमी और कवि भी हैं। नादिर गोदरेज अपनी औद्योगिक दक्षता, दूरदर्शिता और कुशल व्यावसायिक प्रबंधन के माध्यम से गोदरेज समूह को मजबूती प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

बहुआयामी व्यक्तित्व के परिचायक

पद्मभूषण जमशेद गोदरेज

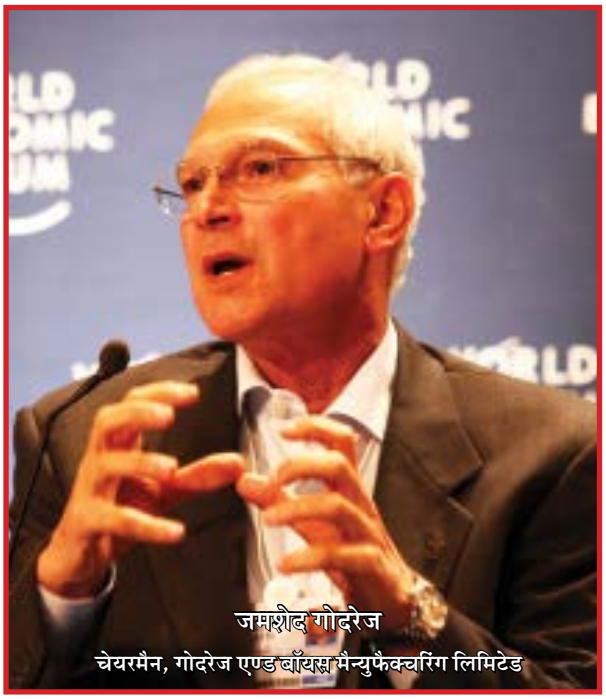
जमशेद गोदरेज
चेयरमैन, गोदरेज एण्ड बॉयस मैन्युफैक्चरिंग लिमिटेड

जमशेद एन. गोदरेज ने अपने विशाल अनुभव, कर्मठता, दूरदृष्टि एवं व्यावसायिक नेतृत्व क्षमता से सम्बंधित कम्पनियों को बुलंदियों पर पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। आपकी कर्मठ सेवाएं समूह के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, उल्लेखनीय हैं।

गोदरेज एण्ड बॉयस मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लि. के बोर्ड चेयरमैन जमशेद एन. गोदरेज जी ने गोदरेज समूह के घरेलू उपकरण, उपभोक्ता कार्यालय उपकरण, औद्योगिक उत्पादों और सेवाओं के क्षेत्र का सफल नेतृत्व किया है। आप आदि बी. गोदरेज जी के चचेरे भाई हैं। अपने पिताजी को अपना आदर्श मानने वाले जमशेद गोदरेज एक बहुआयामी व्यक्तित्व के परिचायक हैं। आज सम्पूर्ण विश्व में गोदरेज एण्ड बॉयस मैन्युफैक्चरिंग कंपनी के उत्पादों की जबर्दस्त माँग है और इसका श्रेय आपके कुशल नेतृत्व को ही जाता है। गोदरेज समूह के इस महत्वपूर्ण अनुषांगिक उद्योग को आपने अपनी कर्मठता और व्यावसायिक दूरदर्शिता से बहुआयामी बनाकर एक नवीन ऊँचाई पर प्रतिष्ठापित किया है। जमशेद एन. गोदरेज जी गोदरेज एंड बॉयस मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लिमिटेड के बोर्ड अध्यक्ष हैं। आपने इलिनोइस प्रौद्योगिकी संस्थान संयुक्त राज्य अमेरिका से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। गोदरेज अंनता सेंटर के चेयरमैन एवं ट्रस्टी हैं एवं अनंता एस्पेन (पहले एस्पेन इंस्टीट्यूट इंडिया के नाम से जाना जाता था।) के पूर्व चेयरमैन हैं। आप नेचर – इंडिया के वर्ड वाइड फंड के अध्यक्ष हैं। आप शक्ति सस्टेनेबल एनर्जी फाउंडेशन इंडिया रिसोर्सेज ट्रस्ट एवं काऊंसिल ऑन एनर्जी इन्वायरमेंट एंड वॉटर के निदेशक मंडल के अध्यक्ष हैं, आप वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क के निदेशक हैं। आप एशिया सोसायटी संयुक्त राज्य अमेरिका के ट्रस्टी भी हैं। आप टोयोटा मोटर्स ग्लोबल एडवॉयजरी कमेटी के मेंबर हैं। आप कॅन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री एवं इंडियन मशीन टूल मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष हैं। जमशेद गोदरेज सीआई सोहराबजी गोदरेज ग्रीन बिजनेस सेंटर के चेयरमैन हैं। यह केंद्र एलईईडी प्लैटिनम डिमॉन्सस्ट्रेशन बिल्डिंग में स्थित है, जो भारत की पहली ग्रीन बिल्डिंग है और इसे दुनिया की ग्रीनेस्ट इमारतों की श्रेणी में रखा गया है। ग्रीन बिजनेस सेंटर ग्रीन बिल्डिंग्स, एनर्जी एफिसिएंशी, एनर्जी कंजरवेशन, नॉन कन्वेन्शनल एनर्जी सोर्सेज, वॉटर पॉलिसी एवं वॉटर कंजर्वेशन इत्यादि का एक आदर्श केंद्र है। गोदरेज एंड बॉयस मैन्युफैक्चरर्स कंपनी लिमिटेड मार्केट रेफ्रीजरेटर, वाशिंग मशीन, एयर कंडीशनर, ऑफिस फर्नीचर गृह फर्नीचर, बैंकों (जैसे तिजोरियाँ,स्ट्रॉंग रूम के दरवाजे, बैंक लॉकर्स आदि के रूप में), वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों और घरों के लिए सुरक्षा उपकरण ताले और लैच फोर्कलिफ्ट ट्रक और भंडारण उपकरण, रसायन–पेट्रोरसायन रिफाइनरी और संबद्ध उद्योगों के लिए प्रक्रिया उपकरण, शीटधातु के लिए सटीक उपकरणों, जस्ता, एल्यूमिनियम अचल संपत्ति के विकास जैसे आदि उपकरणों का निर्माण करती है। गोदरेज समूह घरेलू उपकरणों, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, कार्यालय उपकरण औद्योगिक उत्पादों, उपभोक्ता उत्पादों और सेवाओ में सबसे अग्रणी ब्रॉंड है। श्री गोदरेज एक उत्कृष्ट नौकायन उत्साही हैं। आपने भारत, बाल्टिक और उत्तरी सागर, अटलांटिक महासागर के पश्चिम तट के साथ भूमध्य सागर में एक्सटेंसिव क्रूजिंग पूर्ण की है। भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा श्री गोदरेज को 3 अप्रैल, 2003 को "पद्मभूषण" से सम्मानित किया गया है।

तान्या दुबाश
कार्यकारी निदेशक, गोदरेज इंडस्ट्रीज

उत्कृष्ट प्रतिभा की धनी

तान्या दुबाश

तान्या दुबाश अपनी उत्कृष्ट योग्यता, पात्रता और प्रतिभा का अद्भुत परिचय देते हुए गोदरेज समूह को वैश्विक उद्योग जगत में नई-नई उपलब्धि दिला रही हैं। प्रसिध्द भारतीय उद्योगपति और गोदरेज समूह के अध्यक्ष आदि बी. गोदरेज की सबसे बड़ी बेटी हैं। तान्या गोदरेज समूह की कार्यकारी निदेशक और भारतीय महिला बैंक की निदेशक मण्डल की सदस्य भी हैं। तान्या दुबाश ने ब्राउन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र में उच्च शिक्षा और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से व्यवसाय प्रबंधन की शिक्षा प्राप्त की है। तान्या गोदरेज इंडस्ट्रीज लिमिटेड की मुख्य ब्रांड अधिकारी हैं और गोदरेज समूह में ब्रांड विस्तार व प्रगति के लिए विपणन रणनीति के कुशल उत्तरदायित्व का निर्वहन कर रही हैं। इससे पूर्व गोदरेज इंडस्ट्रीज लिमिटेड की विपणन निदेशक और विपणन अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुकी हैं। 1 अप्रैल, 2004 को तान्या ने गोदरेज रिमोट सर्विसेज लिमिटेड और नेचर्स बास्केट लिमिटेड के अध्यक्ष की बड़ी जिम्मेदारी भी संभाली थी। तत्पश्चात् उन्हें गोदरेज समूह का कार्यकारी निदेशक चुना गया। इसके पहले गोदरेज एग्रोवेट लि. और गोदरेज हाउसहोल्ड लिमिटेड में निदेशक के रूप में भी कार्य कर चुकी हैं। तान्या दुबाश सार्वजनिक क्षेत्र की प्रथम भारतीय महिला बैंक के निदेशक मण्डल में भी हैं, जिसके निदेशक मंडल के सभी सदस्य महिलाएँ हैं। तान्या की शादी उद्योगपति अरविंद दुबाश से हुई है और वो दोनों बच्चों आर्यन और अजार के साथ मुम्बई में रहती हैं।

समाजसेवी एवं परोपकारी व्यक्तित्व

निसाबा गोदरेज

उच्च शिक्षित एवं कुशल औद्योगिक रणनीतिकार निसाबा गोदरेज के कुशल एवं प्रभावशाली नेतृत्व में गोदरेज समूह की संबंधित कंपनियों ने शानदार सफलता प्राप्त की है। निशाबा अपनी माँ की तरह ही समाजसेवी और परोपकारी हैं। निसाबा देश के प्रमुख उद्योगपति श्री आदि गोदरेज की सबसे छोटी बेटी हैं। आप गोदरेज समूह की अनुषांगिक कंपनी गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड की कार्यकारी निदेशक हैं और वर्तमान में गोदरेज एग्रोवेट और टेक फॉर इंडिया के बोर्ड में भी शामिल हैं। आपके नेतृत्व में गोदरेज कंज्यूमर और गोदरेज एग्रोवेट को शानदार उपलब्धि मिली है जिससे गोदरेज समूह को विशेष रूप से मजबूती मिली। आप गोदरेज इंडस्ट्रीज और सहयोगी कंपनियों के लिए रणनीति बनाती हैं और मानवपूँजी कार्यों की देखरेख भी करती हैं। निशाबा ने गुड एण्ड ग्रीन सीएसआर की पहल करके अपनी सामाजिक भावना का अनोखा परिचय दिया है। आपने युनिवर्सिटी ऑफ पेन्सिलवेनिया के व्हार्टन स्कूल से बी.एम.सी. और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से एम.बी.ए. की पढ़ाई की है। आपका व्यक्तित्व आपकी माँ स्व. परमेश्वर गोदरेज जी की तरह ही सामाजिक और परोपकारी है। आप लड़कियों की शिक्षा, डिजाइन ट्रेकिंग और घुड़सवारी आदि चीजों में दिलचस्पी लेती हैं और इन कार्यों के प्रति बेहद संजीदा हैं। निसाबा (निसा) गोदरेज अपने पति कल्पेश मेहता और पुत्र जोरान के साथ मुंबई में रहती हैं।

निसाबा गोदरेज
कार्यकारी अध्यक्ष
गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स

बेमिसाल नेतृत्व क्षमता के धनी

पिरोजशा गोदरेज

पिरोजशा गोदरेज
एमडी – सीईओ
गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड

पिरोजशा आदि गोदरेज, गोदरेज प्रॉपर्टी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। आप सुयोग्य, कर्मठ और दूरदर्शी नेतृत्व क्षमता से भरपूर एक आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं। आपको अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से नवाजा गया है।

गोदरेज समूह के पारम्परिक उद्योग गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड के प्रबन्ध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी पिरोजशा आदि गोदरेज आधुनिक औद्योगिक इतिहास को उच्च स्तरीय शहरी जीवनशैली उपलब्ध कराने के लिए पूर्णतया प्रतिबद्ध हैं। गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड आज देश की प्रमुख रियल एस्टेट कंपनी के रूप में अत्यधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। पिरोजशा गोदरेज ने अपने कुशल नीति निर्माण, व्यावसायिक सूझ-बूझ और बेमिसाल नेतृत्व क्षमता के माध्यम से गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड को नित-नवीन उपलब्धि दिलाते हुए वैश्विक निर्माण जगत में एक विशेष पहचान दिलायी है। पिरोजशा गोदरेज ने व्हॉर्टन स्कूल ऑफ बिजनेस से सन् 2002 में स्नातक की डिग्री प्राप्त की और कोलंबिया युनिवर्सिटी से सन् 2004 में अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में परास्नातक की डिग्री प्राप्त की। पिरोजशा गोदरेज ने वर्ष 2004 - 2006 के दौरान गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड के साथ कार्य किया जब कम्पनी के रणनीतिक विस्तार की जिम्मेदारी उन पर थी और वर्ष 2004 - 2008 के समय पिरोजशा के निर्देशन में किया गया कार्य दो शहरों से लेकर 10 शहरों के बीच तक बढ़ गया। कार्यकारी निदेशक के रूप में जीपीएल में पुन: शामिल होने से पहले 2008 में आपने कोलंबिया स्कूल ऑ

फ बिजनेस से एमबीए की डिग्री पूर्ण की। पिरोजशा के नेतृत्व में आरंभिक सार्वजनिक पेशकश की शुरुआत की गई, जिसकी वजह से 2010 में कम्पनी को गोदरेज प्रॉपर्टी अमेरिका से 100 मिलियन डॉलर का फायदा हुआ। इसके फलस्वरूप पिरोजशा को गोदरेज प्रॉपर्टीज का सीईओ नियुक्त किया गया। आपके नेतृत्व में कंपनी ने भारत में तेजी से बढ़ रहे रियल एस्टेट कारोबार के क्षेत्र में नयी पहचान प्राप्त की। आपके नेतृत्व में गोदरेज प्रॉपर्टीज सतत् विकास के पथ पर अग्रसर है। 2013 में पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी द्वारा गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड को पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार ग्रीन बिल्डिंग मूवमेंट को संचालित करने हेतु प्रदान किया गया। 2013 में पिरोजशा को **रियल एस्टेट पर्सन ऑफ द इयर** का अवॉर्ड, कंस्ट्रक्सन वीक इंडिया अवॉर्ड्स एवं पर्सन ऑफ द इयर का अवॉर्ड गिरेम (GIREM) अवॉर्ड्स में प्रदान किया गया। 2014 में आपने राष्ट्रीय मानव संसाधन विकास नेटवर्क द्वारा "बेस्ट पीपुल सीईओ" का अवॉर्ड प्राप्त किया। 2015 में आपको इकोनॉमिक टाइम्स के 40 वर्ष से कम उम्र के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यापार जगत के लीडर्स की 40 लोगों की सूची में स्थान प्रदान किया। आपको जीक्यू पत्रिका ने भी 50 सर्वाधिक प्रभावशाली युवा भारतीयों की सूची में शामिल किया। गोदरेज प्रॉपर्टीज में शामिल होने से पहले आपने नई दिल्ली में विदेश राज्य मंत्री के अतिरिक्त निजी सचिव के रूप में सेवा प्रदान की एवं प्रशिक्षु के रूप में न्यूयॉर्क में हिलेरी क्लिंटन के सीनेट कार्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त किया। पिरोजशा की रुचि क्रिकेट, भोजन, राजनीति एवं शतरंज के साथ - साथ दुर्लभ पुस्तक संग्रह में है। वह शादीशुदा हैं और उनकी एक बेटी है।

नवरोज गोदरेज
कार्यकारी निदेशक
गोदरेज एण्ड बॉयस

कुशल व्यावसायिक रणनीतिकार एवं दूरद्रष्टा

नवरोज गोदरेज

नवरोज गोदरेज परिवार की चौथी पीढ़ी के युवा, होनहार एवं आधुनिक विचारधारा के पक्षधर एक आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं। आप एक कुशल व्यावसायिक रणनीतिकार तथा निदेशक के रूप में कम्पनी को अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

नवरोज गोदरेज जी गोदरेज एंड बॉयस के कार्यकारी निदेशक और औद्योगिक रणनीतिकार हैं। आप अपने पिता जी की तरह ही विनम्र और सरल हैं, बहुआयामी और बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। गोदरेज एंड बॉयस के व्यवसाय विकास में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपका विश्वास है कि नवाचार प्रक्रिया के द्वारा अवसरों की पहचान करके जीवन में सुधार लाया जा सकता है। जिसकी वजह से आपके नेतृत्व में गोदरेज एंड बॉयस में नवाचार केंद्र स्थापित किया गया। आप भारतीय उद्योगपति जमशेद गोदरेज जी के बेटे हैं। आप चौथी पीढ़ी के इकलौते सदस्य हैं जिन्हें कंपनी के मंडल में शामिल किया गया है। आप आईआईटी इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन शिकागो से डिजाइन की डिग्री में स्नातक हैं। आपको चौथकुल एंड यूएस डिजाइन स्टूडियो के व्यावसायिक विकास में शामिल किया गया है। आप कॅन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (सीआईआई) के नेशनल कॅमेटी ऑन डिजाइन के सह-अध्यक्ष एवं ग्लोबल इनोवेशन एण्ड टेक्नोलॉजी एलांइस (जीआईटीए) के मंडल सदस्य भी हैं।

◆◆◆

शैलेश हरिभक्ति
चेयरमैन, हरिभक्ति ग्रुप

देश के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं

सीए. शैलेश हरिभक्ति

- शिवा तिवारी

शैलेश हरिभक्ति ऐसे व्यक्ति हैं जो हर तरह की परिस्थितियों में अपनी आदर्शनिष्ठा एवं सिद्धांतनिष्ठा को अक्षुण्ण बनाए रहते हैं, आदर्शों की रक्षा, कर्तव्य परायणता को वे अपना सबसे बड़ा धर्म मानते हैं। ऐसे व्यक्तित्व के रुप में हरिभक्ति जी हमारे देश, समाज और संस्कृति के गौरव हैं, प्रकाश स्तम्भ हैं।

शैलेश हरिभक्ति की जीवन साधना में मानव कल्याणार्थ रूप निस्वार्थ सेवा का स्थान सर्वोच्च है। वह कहते हैं कि मानव की जीवात्मा का विकास और जीवन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सेवा से बड़ा तप और पुण्य कुछ भी नहीं है। सफलता का मूलभूत आधार उत्कट इच्छा, तत्पर सक्रियता और क्रियाशीलता ही है। इसके बिना कोई भी व्यक्ति उँचा नहीं उठ सकता है और न ही कोई उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर पाता है। तत्परता, तन्मयता, सक्रियता और मनोयोग के मूल में भी उत्कट आकांक्षा ही उत्प्रेरक काम करती है। यद्यापि सुख-दुख, भली-बुरी परिस्थितियाँ और उत्थान – पतन का मुख्य कारण मनुष्य का कर्म समझा जाता है। लेकिन कर्म रूपी वृक्ष भी विचार और इच्छारूपी बीज से ही उत्पन्न होता है, इच्छा से प्रेरणा की और प्रेरणा से कर्म की उत्पत्ति होती है।

मनुष्य अपनी आकांक्षा के अनुरूप सोचता है और जैसा वह सोचता है वैसे ही साधन उपलब्ध करता है। जैसे साधन उपलब्ध होते हैं वैसा ही कर्म वह करने लगता है। जैसा कर्म किया जाता है वैसी ही परिस्थितियाँ सामने आ खड़ी होती हैं और उसी तरह के परिणाम प्रस्तुत करती हैं। इसे भाग्य, कर्मों का फल, किस्मत या जो भी नाम दे दिया जाए, पर सच्चाई यह है कि यह सब अपनी ही इच्छाओं की परिणति है। जो चाहा जाता है वही प्राप्त होता है, इसलिए कहा गया है कि प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता और तकदीर का लेखक स्वयं है। इसी सोच, विचारधारा, कर्मठता, तत्परता, तन्मयता और सक्रियता के पर्याय हैं प्रसिद्ध चार्टर्ड अकाउंटेंट शैलेश वी. हरिभक्ति। शैलेश हरिभक्ति बताते हैं कि जिस दिन उनका जन्म हुआ उसी दिन से ही यह निर्धारित हो गया कि वह एक प्रभावशाली चार्टर्ड अकाउंटेट ही बनेंगे, क्योंकि यह उनके पिता विष्णु हरिभक्ति की दिली इच्छा थी।

शैलेश हरिभक्ति ने अपने पिता की इच्छा को स्वाकांक्षा में परिवर्तित कर आज एक सुप्रसिद्ध चार्टर्ड अकाउंटेट, कई राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के निदेशक – सलाहकार इत्यादि के रूप में एक विशिष्ट और महनीय पहचान बनाई है। हरिभक्ति जी ने वेस्टर्न इंडिया रीजनल काउंसिल के चेयरमैन के रूप में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपने ज्ञान को, सदगुण की सुगंध को सेवा से, प्रेम से, सद्भाव से फैलाना, अपनी योग्यता, प्रतिभा, समय, धन, श्रम से देश और समाज को सींचना, सेवा करना, प्रेम बाँटना, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के अनुसार सबको अपना परिवार समझना ही सीए. शैलैश हरिभक्ति की सर्वोत्कृष्ट पहचान है। श्री हरिभक्ति जी की जीवन साधना में मानव कल्याणार्थ निस्वार्थ सेवा का स्थान सर्वोच्च है। वह कहते हैं कि मानव की जीवात्मा का विकास और जीवन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सेवा से बड़ा तप और पुण्य कुछ भी नहीं है। हरिभक्ति जी ऐसे व्यक्ति हैं जो हर तरह की परिस्थितियों में अपनी आदर्शनिष्ठा एवं सिद्धांतनिष्ठा को अक्षुण्ण बनाए रहते हैं, आदर्शों की रक्षा, कर्तव्य परायणता को वे अपना सबसे बड़ा धर्म मानते हैं। ऐसे व्यक्तित्व के रूप में हरिभक्ति जी हमारे देश, समाज और संस्कृति के गौरव हैं। स्वयं तो महान हैं ही, आपकी महानता सभी को प्रेरणा प्रकाश भी देती है। हरिभक्ति जी कई

सामाजिक संगठनों में शीर्ष पदों पर रहते हुए पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, गरीबी, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता और स्वास्थ्य सुधार की दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर चुके हैं। श्री हरिभक्ति जी वर्ष २०१४-१५ के लिए रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे के ८५ वें चेयरमैन भी रह चुके हैं और इस पद पर रहते हुए आपने महिला सशक्तिकरण, कन्या भ्रूण हत्या का विरोध और स्वच्छता के क्षेत्र में अपना शानदार योगदान देकर एक विशिष्ट सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन किया है। आप विभिन्न सरकारी और गैर – सरकारी संगठनों को भी अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं और उनके लिए बेहतर नीति-निर्माण करने में मार्गदर्शक की भूमिका को सर्वोत्कृष्ट रूप में निभाते हैं। वर्तमान में आप डी.एच. कंसल्टेंट्स प्रा. लि. कंपनी के ग्रुप चेयरमैन हैं तथा कई राष्ट्रीय – बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निदेशक और सलाहकार सदस्य भी हैं। शैलेश हरिभक्ति पेंशन फण्ड नियामक एवं विकास प्राधिकरण द्वारा गठित नेशनल पेंशन स्कीम ट्रस्ट के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आप पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) की पेंशन सलाहकार समिति (पीएसी) के सदस्य भी रह चुके हैं।

प्रमुख सार्वजनिक एवं निजी कंपनियों के निदेशक मंडल में श्री हरिभक्ति जी की भूमिका

- टोरेंट फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड
  - निदेशक और ऑडिट कमेटी के अध्यक्ष
- एल एण्ड टी फाईनेंस होल्डिंगस लिमिटेड
  - निदेशक और ऑडिट कमेटी के अध्यक्ष
- फ्यूचर लाईफस्टाइल फैशंस लिमिटेड
  - निदेशक और ऑडिट कमेटी के अध्यक्ष
- ब्लूस्टार लिमिटेड
  - चेयरमैन
- महिंद्रा लाईफस्पेस डेवलपर्स लिमिटेड
  - निदेशक और ऑडिट कमेटी के सदस्य
- करमचंद्र थापर व ब्रदर्स (कोयला बिक्री) लिमिटेड
  - निदेशक और ऑडिट कमेटी के सदस्य
- अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड
  - निदेशक
- एसीसी लिमिटेड
  - निदेशक
- मेट्रोपोलिस हेल्थ केयर लिमिटेड
  - निदेशक एवं ऑडिट कमेटी के सदस्य

प्रमुख निजी कंपनियों में सी.ए. श्री. हरिभक्ति जी की शानदार भूमिका

- आप डी. एच. कंसल्टेंट प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के ग्रुप चेयरमैन हैं।
- आप क्वाड्रम सोल्युशंस प्रा.लि. कंपनी के निदेशक हैं।
- आप जे.एम.फाईनेंशियल असेट रिकन्सट्रक्शन को. प्राईवेट लिमिटेड कंपनी में एक निदेशक और ऑडिट कमेटी के चेयरमैन के रुप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।
- आप मेन्टरकैप मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के चेयरमैन हैं। आप फ्लैनेट पीपल एण्ड प्रॉफिट कंसल्टिंग प्रा. लि. कंपनी के चेयरमैन हैं।
- आप रिलायंस इंन्फ्रास्ट्रक्चर कन्सल्टिंग एण्ड इंजीनिअर्स प्रा.लि., रिलायंस इन्फ्राडेवलपमेंट प्रा.लि., रिलायंस विन्ड टरबाइन इंस्ट्रालेटर्स इन्डस्ट्रीज प्रा.लि. और एच.बी. एडवाइजरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के भी निदेशक हैं।

प्रमुख एडवाईजरी / गवर्निंग बोर्ड में सदस्यता

- आप दोहा बैंक के स्थानीय सलाहकार बोर्ड के सदस्य हैं।
- आप एक्सिलेंस एनेबलर्स प्रा. लि. कंपनी में सलाहकार बोर्ड के सदस्य हैं।
- युनाइटेड वे ऑफ इंडिया के गवर्निंग बोर्ड के सदस्य हैं।
- आपा गाजा कैपिटल पार्टनर्स में सलाहकार बोर्ड के सदस्य हैं।

प्रमुख भूतपूर्व सेवाएँ:-

- आप जुलाई 2014 से जून 2015 तक रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे के प्रेसीडेंट रह चुके हैं।
- आप सेबी की डिसक्लोज़र्स एण्ड एकाउंटिंग स्टैंडर्डस कमेटी और टेकओवर पैनल के सदस्य भी रह चुके हैं।
- आपने इंटरनेशनल एकाउंटिंग स्टैण्डर्डस बोर्ड की स्टैन्डर्डस एडवाइजरी काउंसिल के सदस्य के रुप में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

- आप बॉम्बे मैनेजमेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।
- आप भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान की पश्चिमी भारत क्षेत्रीय परिषद के चेयरमैन की विशिष्ट भूमिका भी निभा चुके हैं।

शैलेश हरिभक्ति एक अच्छे वक्ता और लेखक भी हैं, आप समय – समय पर सेमिनारों के माध्यम से सी.ए. छात्रों का मार्गदर्शन और प्रोत्साहन करते रहते हैं। आप एक कुशल आर्थिक नीति निर्माता, सलाहकार और विद्वतापूर्ण व्यक्तित्व के परिचायक हैं। आपके व्यक्तित्व में ईमानदारी, सज्जनता, शालीनता, विनम्रता, कर्तव्यपरायणता और सामाजिकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। आपके इसी अनूठे व्यक्तित्व के कारण आपका स्वभाव अत्यंत प्रशंसनीय और सराहनीय है। ◆◆◆

बैंकिंग जगत के उत्कृष्ट और लोकप्रिय व्यक्तित्व

दिनेश कुमार खारा

दिनेश कुमार खारा
मैनेजिंग डायरेक्टर
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया

श्री दिनेश कुमार खारा भारतीय स्टेट बैंक के प्रबंध निदेशक हैं। आप बैंक में गैरबैंकिंग सहायक कम्पनियों के व्यवसाय की देखरेख करने वाले बैंक बोर्ड में हैं। सहायक – कम्पनियाँ विभिन्न वित्तीय गतिविधियों जैसे – परिसम्पत्ति प्रबंधन, जीवन बीमा, सामान्य बैंक, बोकिंग क्रेडिट कार्ड– पेंशन फंड और फैक्टरिंग सेवाओं में संलग्न हैं। आपको 55 मिलियन से अधिक ग्राहकों की सेवा करने वाले 5500 से अधिक शाखाओं वाले 18 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (एसबीआई द्वारा प्रायोजित) की देख – रेख का गुरुत्तरदायित्व सौंपा गया है। इसके अतिरिक्त आप बैंक के रिस्क मैनेजमेंट और अनुपालन क्षेत्रों, बैंक की सूचना प्रौद्योगिकी शाखा की देखरेख भी करते हैं। श्री खारा ने एफएमएस, नई दिल्ली से व्यवसाय प्रशासन में मास्टर्स किया है तथा वाणिज्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। आप इंडियन इन्स्टट्यूट ऑफ बैंकर्स के प्रमाणित सहयोगी भी हैं। दिनेश कुमार खारा 1984 में प्रोबेशन अधिकारी के रूप में एसबीआई में शामिल हुए। श्री खारा के पास वाणिज्यिक बैंकिंग के सभी पहलुओं जैसे – रिटेल बैंकिंग, एसएमइ, कॉरपोरेट क्रेडिट, अतर्राष्ट्रीय बैंकिग संचालन और शाखा प्रबंधन में लगभग 33 वर्षों का विशाल अनुभव है। श्री खारा के सुयोग्य नेतृत्व में पांच सहयोगी बैंकों और भारतीय महिला बैंक का एसबीआई में विलय किया जाना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि थी। उक्त उपलब्धि के साथ एसबीआई इण्डिया वैश्विक स्तर पर शीर्ष 50 बैंकों की लीग में शामिल हो गया है। भारतीय भारतीय स्टेट बैंक के प्रबंध निदेशक के रूप में नियुक्त होने से पूर्व आप एसबीआई फंड्स मैनेजमेंट प्राईवेट लि. के एमडी और सीईओ थे। आप के नेतृत्व में कम्पनी ने एक स्थान का सुधार किया और 1,30,000 करोड़ रुपये के कुल एएमयू के साथ मार्केट शेयर को 7 प्रतिशत से 8.8 प्रतिशत कर दिया तथा भारत की पांचवी सबसे बड़ी म्युचुअल फंड की कम्पनी बन गयी। भारतीय स्टेट बैंक, भोपाल क्षेत्र के मुख्य प्रबन्धक के रूप में दिनेश खारा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बैंक को प्रशंसनीय गति दी थी।

आपके कार्यकाल के दौरान बैंकों ने अपने संचालन के क्षेत्र में बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाई और उत्पाद सेवाओं को प्रभावी बनाने की रणनीतियों को तैयार किया तथा व्यवसाय में भी लाभप्रद सुधार लाए गये जो एक स्पष्ट लाभ की तरफ प्रकाश डाल रहा है। आपने एसबीआई के विभिन्न गैर बैंकिग सहायक कम्पनियों के परिचालन और रणनीति के मुद्दों पर बेहतरीन कार्य किया है। वास्तव में श्री दिनेश कुमार खारा बैंकिग जगत की प्रख्यात हस्ती हैं और बहुआयामी प्रतिभा तथा उत्कट मेधा शक्ति के माध्यम से एसबीआई को अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। आपकी कर्मठ सेवाएं बैंक की प्रगति में उत्तरोत्तर सहायक हैं, आपकी महत्वपूर्ण भूमिका बहुपयोगी है।

जब अर्थव्यवस्था बड़ी होती है तो बड़े बैंकों की आवश्यकता बढ़ जाती है

– दिनेश कुमार खारा

अभ्युदय वात्सल्यम् के प्रधान संपादक आलोक रंजन तिवारी ने स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के प्रबंध निदेशक दिनेश कुमार खारा से अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थितियों और बैंकिंग सेक्टर से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश –

● **इस समय जो मंदी का माहौल चल रहा है उससे यह संभावना भी व्यक्त की जा रही है कि ऑटो सेक्टर जैसे उद्योगों का बुरा हाल इसी वजह से हुआ है। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर के रूप में देश की अर्थव्यवस्था के मौजूदा हालातों के बारे में आप क्या सोचते हैं ?**

जहाँ तक आपने अर्थव्यवस्था में मंदी की बात कही यह तो अर्थव्यवस्था का एक हिस्सा है। रिजर्व बैंक ने अपनी मॉनिटरी पॉलिसी के समय जो आंकड़े दिए थे, उसमें उन्होंने 6.8 प्रतिशत के ग्रोथ रेट का उल्लेख किया था। लेकिन, इस सन्दर्भ में यह भी कहना आवश्यक होगा कि सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के लिए जो नीतियां अपनाई जा रही हैं वह अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सभी बैंकों के ऑपरेशनल स्तर के लोगों से विचार – विमर्श कर लोन मेला शुरू करने की अवधारणा बनायी गई। इसके माध्यम से कोशिश की जा रही है कि ग्राहकों को आसानी से लोन बांटे जाएँ ताकि डिमांड साइड की खामियों को दूर किया जा सके। जहाँ तक आपने ऑटो सेक्टर में मंदी की बात कही तो मुझे लगता है कि उसका सबसे बड़ा कारण बी 6 नॉर्म्स है। जिसके चलते जो लोग मोटर या ऑटो खरीदना चाहते हैं वो यह सोच रहे है कि बी ६ आने के बाद ही खरीदेंगे । चूंकि हमलोग सितंबर – अक्टूबर में आ गए हैं तो कुछ कंपनियां बी ६ के मॉडल्स लेकर आ रही हैं, जिसकी डिमांड काफी अच्छी दिखाई दे रही है।

● कॉर्पोरेट टैक्स में कटौती होने से किस प्रकार के सकारात्मक प्रभाव सामने आएंगे ?

मैं तो यही आशा करूँगा कि जो भी प्रयास किये जा रहे हैं उसका असर जल्द ही देखने को मिले। क्योंकि इस नॉर्म्स के माध्यम से कोशिश यह की जा रही है कि ग्राहकों के हाथ में लोन की सुविधा उपलब्ध कराकर उनकी एबिलिटी टू बाय में सुधार लाया जा सके और साथ ही साथ कॉरपोरेट टैक्स में जो कमी की गई है उसके चलते जो एक इन्वेस्टमेंट का रिवाइवल है वह भी अपने आप में बहुत अच्छा कदम है। आशा करते हैं कि जिनको इन्वेस्टमेंट करनी है वो भी अपनी तरफ से पहल करेंगे और आगे आकर इन्वेस्टमेंट करेंगे और जो सरकार की तरफ से कदम उठाए जा रहे हैं, उनके साथ कदम से कदम मिलाकर अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देंगे ।

● आपकी बेहतर कार्यशैली को देखते हुए कैबिनेट की अपॉइंटमेंट कमिटी ने एसबीआई में आपके कार्यकाल को 2 साल तक के लिए बढ़ा दिया है। जब काम का ऐसा प्रतिफल मिलता है तो कैसा महसूस करते हैं ?

बहुत अच्छा लगता है क्योंकि इसके माध्यम से हमें अपने ग्राहकों की सेवा का अवसर मिलता है और देश की अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने का मौका मिलता है, तो मेरा तो यह मानना है कि मेरे लिए यह बहुत ही सुनहरा अवसर है। मैं आभारी हूँ सरकार का, जो उन्होंने मेरे काम को देखते हुए मेरे कार्यकाल में दो साल की बढ़ोतरी की।

● एसबीआई चेयरमैन ने डेबिट कार्ड ईएमआई फैसिलिटी की शुरुआत की है। इसके बारे में कुछ बताएँ ?

दरअसल, भारत में डेबिट कार्ड की संख्या कहीं ज्यादा है और इसके माध्यम से हमारी कोशिश यह है कि जो भी डेबिट कार्ड होल्डर है उन पर हम एक एनालीटिकल कार्यक्रम चलाएंगे और देखेंगे कि उनका क्रेडिट प्रोफाइल कैसा है। उनके क्रेडिट प्रोफइल को देखते हुए हमने कुछ डेबिट कार्ड होल्डर्स का चयन किया है और उन्हें बताया है कि हम इस तरह की सुविधा उपलब्ध करवा सकते हैं । इसमें हमारा सहयोग कुछ मर्चेंट्स कर रहे हैं। कुछ डिस्काउंट वो दे रहे हैं और हम भी अपने डेबिट कार्ड होल्डर्स को शॉपिंग के समय और उनके कार्ड स्वाइप करते समय ही उन्हें इएमआई की सुविधा दे रहे हैं । लेकिन उसमें एक बात यह है कि जिन लोगो को हमने पहचान लिया है और जो क्रेडिट देने के योग्य हैं उन्हीं लोगों को हम यह सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं। तकरीबन 1500 शहरों में 40,000 मर्चेंट्स की मदद से यह सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

● आने वाले वित्तीय वर्ष को लेकर आपकी क्या रणनीतियाँ हैं ?

हमारी कोशिश तो यही रहेगी की जो हमारी क्रेडिट का ग्रोथ है वह अच्छा हो और साथ ही साथ क्वालिटी ऑफ क्रेडिट भी बहुत अच्छा हा। जिससे हम लोगों के सिस्टम में कम एनपीए हो और उनके लिए प्रोविशनिंग कम की जाए, यही हमारा ध्येय रहेगा

● वित्त मंत्री ने पिछले महीने 10 सार्वजनिक बैंकों के विलय की घोषणा की थी। इसका असर देश की अर्थव्यवस्था पर कैसे पड़ेगा ?

जब अर्थव्यवस्था बड़ी होती है तो बड़े बैंकों की आवश्यकता बढ़ जाती है। जिससे देश की बड़ी अर्थव्यवस्था को सहारा मिल सके। जब एक बैंक बड़ा होता है तब उसमें पैसे का उपयोग ईमानदारी से होता है, रिस्क प्रैक्टिसेस सुधर जाती है, गवर्नेन्स प्रैक्टिसेस सुधर जाती है, आईटी की क्षमता काफी हद तक अच्छी हो जाती है और प्रोडक्ट की प्राइसिंग भी सुधर जाती है। जब प्रॉडक्ट की प्राइसिंग और प्रोडक्ट की डिलीवरी सुधर जाती है तब ग्राहक को काफी फायदा होता है और साथ ही साथ जब अर्थव्यवस्था बड़ी होगी तब आपको बड़े बैंक इसलिए चाहिए क्योंकि जब बड़ा लोन लेना है तब बड़े बैंको में क्षमता होनी चाहिए और वह क्षमता जो है अच्छे कैपिटल के कारण ही हो सकती है और विलय का कारण यह भी था कि इन सब बैंको में कैपिटल सपोर्ट ज्यादातर गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के तरफ से ही आती थी। जब भारत सरकार द्वारा समर्थन आ रहा था तब कभी – कभी वह पैसा कुशलता से इस्तेमाल होता था तो कभी अकुशलता से इस्तेमाल होता था। मेरा मानना यह है की यह भारत सरकार द्वारा काफी अच्छा कदम उठाया गया है और इसके कारण बैंकिंग सेक्टर में काफी स्थिरता आयेगी और स्थिरता के करण ही अर्थव्यवस्था में सुधार आएगा।

● एसबीआई के मैनेजिंग डायरेक्टर के रूप में आपके सामने किस तरह की चुनौतियाँ हैं ?

हमारे पास चुनौतियाँ यह हैं कि हम देश के हर तरह के नागरिक को सेवा प्रदान करते हैं। चाहे वह गांव – देहात में हो या शहर में हो या मुम्बई जैसे महानगरों में हो। हम ग्राहक की सुविधा के हिसाब से उनकी मानसिकता को समझकर ही प्रॉडक्ट देते हैं।

◆◆◆

अशनी बियानी
मैनेजिंग डायरेक्टर
फ्यूचर कंज्यूमर लिमिटेड

फ्यूचर कन्ज्यूमर ने सदैव गुणवत्ता पर ध्यान दिया है

फ्यूचर कंज्यूमर लिमिटेड भारतीय बाजार में सबसे तेजी से बढ़ती हुई एफएमसीजी कंपनियों में से एक है। यह एक एफएमसीजी 2.0 कंपनी है जो डेटा–आधारित है, जिसका नेतृत्व आधुनिक व्यापार और डिजिटल रूप से सक्षम वितरण नेटवर्क द्वारा किया जाता है। फ्यूचर कंज्यूमर द्वारा आज की तेजी से आगे बढ़ने वाली उपभोक्ता पीढ़ी के जीवनकाल को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार के ब्रांडों का उत्पादन किया जाता है। यह कंपनी खाद्य, घरेलू जरूरतें, व्यक्तिगत देखभाल और सौंदर्य प्रसाधन जैसी कई श्रेणियों में उत्पादों की एक शृंखला के विकास और वृद्धि के लिए अत्याधुनिक उपभोक्ता अंतर्दृष्टि, प्रौद्योगिकी और नवाचार का संयोजन कर रही है, जो भारत की अगली पीढ़ी, युवा ग्राहकों की जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रही है। फ्यूचर कंज्यूमर ने गुणवत्ता पर सदैव ध्यान दिया है और अपने ग्राहकों की संतुष्टि के लिए यह कंपनी अपने उत्पादों को गुणवत्ता के उच्चतम मानदंडों को ध्यान में रखकर लोगों तक पहुंचाती है। फ्यूचर कंज्यूमर ने अपने समूह की औद्योगिक नीतियों, मूल्यों और सिद्धांतों को सदैव महत्व दिया है और उसी का अनुसरण करते हुए आज भारत की दिग्गज एफएमसीजी कंपनी के रूप में राष्ट्र और समाज की सेवा में तत्पर है।

एक अनुमान के मुताबिक, 1.3 बिलियन लोगों के लिये जिन्होंने अभी उपभोग की शुरुआत ही की है, बाजार का 65 प्रतिशत से अधिक हिस्सा अनब्रांडेड है। एक प्रतिष्ठित कंपनी के रूप में फ्यूचर कंज्यूमर भारत और उसके भोजन से लेकर घर तक की जरूरतों तथा व्यक्तिगत देखभाल और सौंदर्य तक की आवश्यकताओं को समझती है। फ्यूचर कंज्यूमर के माध्यम से ऐसे ब्रांड बनाये जा रहे हैं जो उपभोक्ताओं के विचार और श्रेणी में परिवर्तन को दर्शाते हैं। भारतीय रसोई में काफी बदलाव आया है, उन पर नई तकनीकों, गैजेट्स, आहार, फैशन का प्रभाव पड़ा है। रसोई केवल काम के लिए ही नहीं बल्कि अपने कौशल को प्रदर्शित करने के लिए भी एक विशेष स्थान है।

फ्यूचर कंज्यूमर लिमिटेड के पास अपने ग्राहकों की आश्यकताओं का आकलन करने के लिए एक बड़ा डिजिटल नेटवर्क है। इस कंपनी ने एक ऐसा व्यवस्थित नेटवर्क स्थापित किया है जिसके माध्यम से हर एक प्रोडक्ट्स की मांग का सटीक आकलन किया जाता है और फिर उस आकलन के आधार पर प्रोडक्ट को सप्लाई किया जाता है। इससे यह लाभ होता है कि ग्राहकों के माइंडसेट को आसानी से पढ़ा जा सकता है और उनकी पसंद को भी बहुत ही सरलता के साथ समझा जा सकता है। इसके साथ – साथ प्रत्येक ग्राहकों को कब किस चीज की जरुरत पड़ने वाली है इसका भी एक आकलन इस कंपनी द्वारा कर लिया जाता है।

फ्यूचर कंज्यूमर लिमिटेड का व्यावसायिक स्वरूप

एक उपभोक्ता आधारित कंपनी के रूप में फ्यूचर कंज्यूमर उपभोक्ता के हर उस भाग में रहना जानती है, जहाँ माँग है। उपभोक्ता डेटा कंपनी को ग्राहकों की बदलती प्रवृत्तियों, जरूरतों और आकांक्षाओं के अनुसार

पूर्वानुमान लगाने, प्रत्याशा करने और विकास करने में मदद करता है। यद्यपि फ्यूचर कन्ज्यूमर ने बड़ी संख्या में नई और उभरती श्रेणियों के लिए ब्रांड बनाए हैं, फिर भी डेयरी, ऑर्गेनिक और विशेष खाद्य पदार्थ जैसी कुछ श्रेणियाँ हैं जिनके लिए सोर्सिंग, उत्पाद विकास और विनिर्माण की गहराई, ज्ञान और गहन समझ आवश्यक है। ऐसी श्रेणियों के लिए फ्यूचर कंज्यूमर ने विश्व की दिग्गज कंपनियों के साथ करार किया है।

फॉण्टेरा के साथ फ्यूचर कंज्यूमर की सहभागिता, जो कि 130 साल पुरानी व हाइपर- कंपीटिटिव सेगमेंट के साथ वैश्विक अग्रणी कम्पनियों में से एक है, के साथ एक विशिष्ट सम्बन्ध है। इसके तहत भारत में डेयरी 2.0 को प्राप्त करने के लिए दो संगठन एक साथ आए हैं। इस साझेदारी के माध्यम से फ्यूचर कंज्यूमर डेयरी उत्पादों के मूल्यवर्द्धित पोर्टफोलियो की शुरुआत कर रही है।

फ्यूचर कंज्यूमर ने स्विट्जरलैंड में स्थित मिबेल एजी के साथ एक संयुक्त उद्यम में प्रवेश किया है, जो व्यक्तिगत जरूरतों के उत्पादों की श्रेणी में एक अग्रणी और मान्यता प्राप्त नाम है, जिसका उद्देश्य भारतीय बाजार में व्यक्तिगत जरूरतों की श्रेणी में नई उत्पाद अवधारणाओं और बाजार के नए ब्रांडों को डिजाइन करना है। मिबेल के उत्पाद अपने उच्च गुणवत्ता मानकों और नवाचार के लिए जाने जाते हैं। इस साझेदारी के साथ, फ्यूचर कंज्यूमर का लक्ष्य भारतीय बाजार में इस श्रेणी में बढ़ती तेजी को पकड़ना है।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, जीडीपी, रोजगार, निवेश में योगदान के मामले में भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण खंड है जो देश की वृद्धि के लिए एक प्रमुख चालक है। विनिर्माण इकाईयों के मौजूदा मजबूत सेटअप के साथ, फ्यूचर कंज्यूमर भारत और विदेशों में अपना पैर जमाने की कोशिश कर रही है। आधुनिक तकनीक और उत्पादन की बडी क्षमता से लैस, एफसीएल का सुव्यवस्थित व्यवसाय कंपनी को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले कच्चे माल तक पहुँच देता है, साथ ही भंडारण को अनुकूल बनाने और उत्पाद को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँचाने की सहूलियत भी देता है।

उत्कृष्ट नेतृत्वशैली की प्रतीक अशनी बियानी

अशनी बियानी ने अपनी योग्यता, पात्रता, क्षमता और औद्योगिक दूरदर्शिता के माध्यम से फ्यूचर कंज्यूमर को व्यावसायिक विकास के मामले में आज उस स्थान पर पहुंचा दिया है, जहाँ पहुँचने में देश की कई दिग्गज एफएमसीजी कंपनियां विफल रही हैं। उन्होंने अपनी स्पष्टवादिता और कुशल नेतृत्व के माध्यम से कंपनी के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। अपने पिता की तरह विनम्रता और सहजता के साथ संवाद स्थापित करने वाली अशनी बियानी को एक उत्कृष्ट कॉर्पोरेट लीडर के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने बहुत ही कम समय में ग्राहकों की पसंद और सोच को समझकर अपने उत्पादों को विविधतापूर्ण स्वरूप दिया है। अशनी बियानी फ्यूचर कंज्यूमर लिमिटेड की प्रबंध निदेशक हैं और फ्यूचर समूह के मालिक किशोर बियानी की बड़ी बेटी हैं। भारत के अगली पीढ़ी के युवा ग्राहकों की जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए खाद्य, होमकेयर और पर्सनल केयर के क्षेत्र में उत्पादों की एक श्रृंखला के विकास व वृद्धि के लिए, अशनी अत्याधुनिक उपभोक्ता अंतर्दृष्टि, प्रौद्योगिकी और नवाचार के संयोजन संबन्धी कंपनी के एजेंडे का नेतृत्व करती हैं। उनके नेतृत्व में फ्यूचर कंज्यूमर एक अद्वितीय, डेटा-सक्षम, ग्राहक समीपवर्ती एफएमसीजी कंपनी के रूप में तेजी के साथ विकास की दिशा में अग्रसर है।

अशनी ने अपनी यात्रा अपने रचनात्मक वर्षों में शुरू की। उन्हें 2008 में फ्यूचर ग्रुप में शामिल किया गया था, जिसमें उन्होंने अपने शुरुआती दिनों में बैठकों और दूकानों का दौरा करने में काफी वक्त बिताया। उन्होंने समूह के भीतर विभिन्न उपभोक्ता व्यवसायों का भी नेतृत्व किया है तथा रणनीतिक तरीके से बिग बाजार सुपर केंद्रों को पारिवारिक केंद्रों के रूप में आकार देने और विकसित करने पर काम किया है। उन्होंने लक्जरी लेदर ब्रांड हाइडिजाइन के साथ मिलकर हौली नामक एक फैशन एक्सेसरीज ब्रांड की भी स्थापना की है।

अशनी ने समूह के उपभोक्ता की अंतर्दृष्टि,डिजाइन फर्म और फ्यूचर आइडियाज का नेतृत्व किया है। अशनी बियानी मानवीय व्यवहार और सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्साहित होकर विविध व्यावहारिक परिवर्तनों पर काम करती हैं जिससे विचारों को अवधारणा के अंतिम रूपों में बदलने में मदद मिलती है। उनके नेतृत्व में फ्यूचर आइडियाज ने विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न सरकारी तथा विदेशी व घरेलू कंपनियों के साथ काम किया है। समूह के व्यावसायिक निर्णय लेने में डिजाइन-आधारित सोच को प्रयोग में लाने में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अशनी ने बेंगलुरु के सृष्टि स्कूल ऑफ.आर्ट, डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी से इंडस्ट्रियल डिजाइन में अपनी स्नातक की डिग्री हासिल की है तथा न्यूयॉर्क स्कूल के पार्सन्स स्कूल ऑफ.डिजाइन और स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा संचालित समर इंस्टिट्यूट ऑफ़ जनरल मैनेजमेंट से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। अशनी विभिन्न सामाजिक संगठनों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं और गुजरात अंबुजा फाउंडेशन और सलाम बॉम्बे फाउंडेशन के बोर्डों में अपनी महती भूमिका का निर्वहन भी करती हैं। मुंबई में जन्मीं और पली-बढ़ी अशनी बियानी समाज और संस्कृति का अध्ययन करने की शौकीन हैं और उन्हें शास्त्रीय संगीत का भी काफी शौक है। फोर्ब्स, फॉर्च्यून, द इकोनॉमिक टाइम्स और बिजनेस टुडे जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशनों ने अन्य पुरस्कारों और उद्धरणों के माध्यम से उनके नेतृत्व की प्रशंसा की है।

हमारे हर एक निर्णय में डेटा की अहम भूमिका होती है

– अशनी बियानी

अभ्युदय वात्सल्यम् के प्रधान संपादक आलोक रंजन तिवारी ने विशेष बातचीत में फ्यूचर कंज्यूमर लिमिटेड की मैनेजिंग डायरेक्टर अशनी बियानी से कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के सम्पादित अंश –

■ **2008 में आप फ्यूचर ग्रुप से जुड़ीं, लगभग 10 साल से अधिक वक्त हो गया। आप अपनी अब तक की कॉर्पोरेट यात्रा को कैसे देखती हैं ?**

मैं डिजाइन पृष्ठभूमि से हूँ तो इन सालों में मैंने बिजनेस के बारे में विभिन्न चीजें सीखी है। 10 साल की यह यात्रा बहुत ही उत्साहपूर्ण रही, बहुत ही सुखद रही। मुझे बहुत कुछ सीखने को भी मिला, विभिन्न प्रकार के अनुभव भी मिले। मैं हमेशा सीखने की कोशिश करती हूँ। सम्पूर्ण रूप से देखें तो यह बिजनेस यात्रा काफी सुखद रही है।

■ **फ्यूचर कंज्यूमर लिमिटेड भारतीय बाजार में सबसे तेजी से बढ़ती FMCG कंपनियों में से एक है। 2020 के लिए आपकी बिजनेस स्ट्रेटेजी कैसी होगी ?**

2.O की अवधारणा यह है कि ग्राहक के निकट हम कैसे रहें। हम रियल टाइम डेटा के माध्यम से अपने ग्राहकों से संपर्क स्थापित करते हैं। इस पूरे कांसेप्ट का यही मतलब है कि हम किस तरह ग्राहकों के साथ संपर्क में रहकर उनकी जरूरतों, पसंद और मांग को पूरा कर सकते हैं। इसी दिशा में हम अपने कार्य को आगे बढ़ाते हैं। हमारे हर एक निर्णय में डेटा की अहम भूमिका होती है। चाहे मार्केटिंग रणनीति हो, रोजमर्रा के जरूरतों को समझने का प्रयास हो, हर चीज में डेटा का प्रयोग हम करते हैं।

■ **इस समय मार्केट में फ्यूचर कंज्यूमर लिमिटेड की क्या स्थिति है ? आने वाले नए साल में आपके क्या लक्ष्य होंगे ?**

मार्केट में अच्छी स्थिति है। हम जो अभी तक करते आये हैं, आगे भी वही करेंगे। हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम कैसे अपने ब्रांड को बड़ा बनाएं। हमारे ब्रांड्स कैसे हाउसहोल्ड्स तक पहुंचे, कैसे हमारे प्रोडक्ट्स ग्राहकों की पहली पसंद बनें, यही सब करने की कोशिश रहेगी।

■ **FMCG मार्केट में किस प्रकार की संभावनाएँ और चुनौतियाँ आपको नजर आती हैं ?**

सम्भावनाएं तो बहुत ज्यादा हैं। भारत में फ़ूड सेक्टर में अपार अवसर हैं। भारत में खाने – पीने के प्रकार हर 100 - 200 किमी में बदलते रहते हैं तो एक भारतीय कंपनी को भारतीयों की पसंद को समझने में सबसे ज्यादा आसानी होती है। हम इन चीजों पर काफी ध्यान देते हैं। हमारे लिए यही चुनौती होती है कि किस तरह ग्राहकों के साथ उनके माइंडसेट को समझकर ऐसा प्रोडक्ट या ब्रांड बनाया जाय जिसकी भारी मात्रा में डिमांड हो।

■ **भारत की मौजूदा अर्थव्यवस्था स्लो डाउन के माहौल से गुजर रही है। इस बारे में आप क्या सोचती हैं ?**

बाजार की स्थिति बदलती रही है। हर एक सेक्टर के अपनी अलग – अलग प्रतिक्रिया होती है। कहीं पर बढ़त है तो कहीं पर स्लो डाउन है। इस साल परिस्थितियां काफी बदली हैं। मानूसन ने इस स्थिति को प्रभावित किया है। कई जगहों पर मानसून लम्बे समय तक चला तो कहीं पर बाढ़ की भयावह स्थिति रही। इस बार त्यौहार भी कुछ पहले आ गए। रमजान काफी पहले आ गया। हर चीज कंजम्शन को प्रभावित करती है। इसी को साथ में लेकर हमको आगे बढ़ते रहना है।

■ **आपके पिता जी को भारत की रिटेल इंडस्ट्री का किंग कहा जाता है। उनके व्यक्तित्व और काम करने की शैली के बारे में आपका क्या विचार है ?**

उन्होंने भारतीय रिटेल जगत के आधुनिक स्वरूप को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उनकी औद्योगिक यात्रा अद्वितीय रही है, काफी अनुभव और बारीकियां उन्होंने इस दौरान अर्जित किया होगा। इसी यात्रा को हम आगे बढ़ा रहे हैं।

■ **आप भारतीय उद्योग जगत में इतनी बड़ी भूमिका निभा रही हैं। कॉर्पोरेट लाइफ से हटकर अपने शौक के बारे में कुछ बताएँ ?**

मैं क्लासिकल म्यूजिक पसंद करती हूँ। पढ़ना – लिखना अधिक पसंद है।

◆◆◆

दार्शनिक एवं परोपकारी व्यक्तित्व

डॉ. हुजैफा खोराकीवाला

डॉ. हुजैफा खोराकीवाला
सीईओ, वोक्हार्ट फाउंडेशन

देश-दुनिया की सुप्रसिद्ध फार्मा कंपनी वोक्हार्ट लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक और वोक्हार्ट फाउंडेशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. हुजैफा खोराकीवाला अत्यंत ही विनम्र, सहज, सरल और उदारवादी व्यक्तित्व के परिचायक हैं। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह पूर्ण रूप से एक आध्यात्मिक विधा के उत्कृष्ट व्यक्तित्व हैं। हुजैफा खोराकीवाला के अब तक के जीवन की विवेचना करें तो हम यह पायेंगे कि उनके उत्कृष्ट चरित्र के अन्य गुणों के साथ-साथ विनम्रता के सद्गुणों ने उनको महान बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विनम्रता उनके व्यक्तित्व का एक ऐसा आभूषण है, जिसकी चमक के आगे सोने-चांदी के आभूषणों की चमक भी फीकी सी लगती है, क्योंकि विनम्रता से मनुष्य में पात्रता आविर्भूत होती है, जिससे मनुष्य धर्म, दर्शन और विज्ञान के ज्ञान को प्राप्त कर आत्मकल्याण के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। हुजैफा ईश्वर के अलावा धर्म में तनिक भी विश्वास नहीं रखते हैं और अपने सद्गुणों के माध्यम से कोमलता, धैर्य, उदारता और कृतज्ञता के भावों को सहेजकर रखते हैं। वह कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति एक समान है और हमें प्रत्येक व्यक्ति से मानवोचित व्यवहार करना चाहिए। हुजैफा खोराकीवाला मुंबई विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक हैं और उन्होंने अमेरिका के येल यूनिवर्सिटी से एमबीए भी किया है। वह द वर्ल्ड पीसकीपर्स मूवमेंट के संस्थापक हैं जो कृतज्ञता, क्षमा, प्रेम, विनम्रता, दान, धैर्य और सत्य के 7 शांति मूल्यों पर आधारित हैं उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ से सम्बद्ध निकाय इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एजुकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस द्वारा दक्षिण एशिया का शान्तिदूत भी नियुक्त किया गया है। वर्तमान में वोक्हार्ट लिमिटेड के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की जिम्मेदारी हुजैफा खोराकीवाला के ही हाथों में हैं। वोक्हार्ट लिमिटेड के अंतर्गत वोक्हार्ट फाउंडेशन की स्थापना की गई है और यह फाउंडेशन शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, ग्रामीण विकास, गरीबी उन्मूलन और स्वच्छता के क्षेत्रों में उत्कृष्टता के साथ समाज को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। इस फाउंडेशन के माध्यम से देश के 18 राज्यों के चुनिन्दा ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 108 मोबाइल वैन संचालित किये जा रहे हैं, जो जरूरतमंद लोगों को प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। इस मोबाइल वैन में 3-4 चिकित्सकों की एक टीम होती है जो आवश्यक चिकित्सा उपकरणों एवं औषधियों से लैस रहती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किये गए स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के क्रम में वोक्हार्ट फाउंडेशन ने उड़ीसा के ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 60,000 घरेलू शौचालयों के निर्माण की योजना शुरू की है। वोक्हार्ट फाउंडेशन द्वारा प्रोंटो टॉयलेट, प्रोंटो बायो टॉयलेट, लिटिल हर्ट्स, वोक्हार्ट स्किल डेवेलपमेंट इंस्टिट्यूशन, शुधु (इसके अंतर्गत जल को शुद्ध करने वाले टेबलेट्स वितरित किये जाते हैं), अंग दान, आदर्श ग्राम योजना, आई वारियर और जीवा-सेनेटरी नैपकिन्स जैसे विशिष्ट कार्यक्रम चलाये जाते हैं, जो समाज की बेहतरी की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ◆◆◆

Godrej | CONSUMER PRODUCTS

एफएमसीजी क्षेत्र की दिग्गज कंपनी

गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड

गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड एक प्रमुख उभरती हुई कंपनी है। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स अपने ग्राहकों के सम्मान, विश्वास तथा ईमानदारी जैसे मजबूत मूल्यों को अपनाते हुए 122 वर्षों से अनवरत लोगों के साथ जुड़ी हुई है। यह जुड़ाव आज भी कंपनी को युवापन महसूस कराता है। साथ ही साथ यह कंपनी काफी तेजी से आगे बढ.रही है और अभी कई अन्य महत्वाकांक्षी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कृतसंकल्पित है। आज, गोदरेज समूह को विभिन्न व्यवसायों में विश्व स्तर पर 1.1 अरब उपभोक्ताओं का संरक्षण प्राप्त है। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स ने अपने अंतर्राष्ट्रीय विस्तार के लिए 3/3 दृष्टिकोण के अनुसार, 3 श्रेणियों (होमकेयर, पर्सनलकेयर, हेयर केयर) में विश्व के 3 उभरते हुए बाजारों (एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका) में अपनी जगह बना ली है। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स कीटनाशक और बालों की देखभाल करने वाले उत्पादों के संबंध में शीर्ष स्थान पर काबिज है। घरेलू कीटनाशकों के मामले में, गोदरेज कंज्यूमर भारत और इंडोनेशिया में शीर्ष पर है तथा साथ ही यह कंपनी अफ्रीका में भी तेजी से विस्तार कर रही है। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स महिलाओं के बालों की देखभाल की जरूरतों की सेवा में सबसे आगे हैं। साथ ही भारत और उप सहारा अफ्रीका में 'हेयर कलर"में नंबर एक कंपनी होने के साथ, लैटिन अमेरिका में अग्रणी कंपनियों में शुमार है। गोदरेज कंज्यूमर साबुन में नंबर दो रैंक, भारत और इंडोनेशिया में हवा को सुगंधित करने वाले उत्पादों में नंबर एक और इंडोनेशिया में गीले टिशू पेपर बनाने में सबसे ऊपर है। एक कंपनी के रूप में गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स की सोच रहती है कि लोकप्रिय उत्पादों को बढ़ाने में लगातार नवाचार करने तथा मजबूत आर्थिक प्रदर्शन करते रहने के बाद भी कंपनी के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है कि वह एक अच्छी कंपनी बनी रहे। इसी कारण गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स का लगभग 23% प्रोमोटर होल्डिंग पर्यावरण, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे विषयों के लिए ट्रस्टों में रखा गया है। साथ ही कंपनी 'गुड और ग्रीन" को एक साथ लाने की मुहिम भी चलाने को हमेशा प्रयासरत रहती है।

इस सब के बीच गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड की एक शानदार और प्रतिभाशाली टीम है जो कंपनी को बेहतरीन आर्थिक प्रदर्शन सुनिश्चित करने के मामले में अपनी उत्कृष्ट भूमिका का निर्वहन करती है। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स अपनी टीमों में विविधता का पहचानने और महत्व देने के लिए भी प्रतिबद्ध है।

विवेक गंभीर
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी
गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड

शानदार लीडरशिप के लिये जाने जाते हैं विवेक गंभीर

विवेक गंभीर गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (जीसीपीएल) के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। वास्तविक अर्थों में विवेक गंभीर ही जीसीपीएल की 3/3 रणनीति के प्रमुख वास्तुकार थे और उन्होंने एफएमसीजी के क्षेत्र में कंपनी को शीर्ष स्थान पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2009 में इन्होंने बतौर 'मुख्य रणनीति अधिकारी' गोदरेज इंडस्ट्री में पदभार संभाला तथा गोदरेज इंडस्ट्रीज में समग्र समूह रणनीति का मार्गदर्शन करने, पोर्टफोलियो विश्लेषण करने और विशेष परियोजनाओं को चलाने की जिम्मेदारी बखूबी निभाई। उन्होंने 'क्रिएट' पोर्टफोलियो दृष्टिकोण और समूह के लिए 10X10 उद्देश्य को परिभाषित करने में मदद की।

गोदरेज समूह में शामिल होने से पहले, विवेक 'बैन एंड कंपनी' में भागीदार थे, जो दुनिया की अग्रणी व्यापार परामर्श फर्मों में से एक है । उन्होंने बोस्टन, सिंगापुर और नई दिल्ली में बैन के साथ काम किया। वह भारत में बैन के परामर्श कार्यों के संस्थापक सदस्य थे और उन्होंने भारत में फर्म के एफएमसीजी से संबंधित कार्यों का नेतृत्व किया। विवेक 'महानगर हेल्थकेयर लिमिटेड' और समस्ट टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड के बोर्डों में एक स्वतंत्र निदेशक हैं। वह भारत में हार्वर्ड बिजनेस स्कूल क्लब के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं और साथ ही ये कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन फाउंडेशन के सलाहकार भी हैं। विवेक 'मंडे-8.AM' नाम से नेतृत्व कौशल के विविध पहलुओं पर एक साप्ताहिक ब्लॉग भी लिखते हैं ।

अगर हम विवेक के अकादमिक पृष्ठभूमि की बात करें तो उन्होंने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से एमबीए और लफायेट्टे कॉलेज से बीएस (कंप्यूटर साइंस) और बीए (अर्थशास्त्र) किया है। विवेक की शादी रूपिका से हुई है, जो एक फोटोग्राफर और सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्टस के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) विवेक गंभीर को पिछले साल 20.09 करोड. रुपये का वेतन मिला। इस लिहाज से वह एफएमसीजी क्षेत्र में सबसे अधिक वेतन पाने वाले कार्यकारी रहे। विवेक गंभीर ने अपने शानदार नेतृत्व कौशल के माध्यम से गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड को उस जगह पर ला खड़ा कर दिया है, जहाँ पहुँचने में कई कंपनियों को वर्षों लग जाते हैं। उनकी लीडरशिप की अपनी एक अलग शैली है। विवेक गंभीर ने कंपनी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में गोदरेज समूह के मूल्यों, विचारों और कॉर्पोरेट सिद्धांतों को सदैव महत्व दिया है। यही कारण है कि आज वह अपने स्पष्ट विचार और शानदार नेतृत्व के कारण दुनिया भर में जाने जाते हैं।

◆◆◆

समाजसेवी एवं युवा उद्योगपति
प्रशांत कारुलकर

प्रशांत कारुलकर
चेयरमैन
कारुलकर प्रतिष्ठान

छायाचित्र: अनमोल बैसाणे

प्रशांत कारुलकर अत्यंत सरल, सहज और विनम्र व्यक्तित्व के परिचायक हैं। उन्होंने अपनी उत्कृष्ट कार्यकुशलता और कार्य के प्रति अद्भुत समर्पण के माध्यम से उद्योग जगत में काफी नाम और सम्मान कमाया है। बहुत ही कम समय में अपनी कंपनी को भवन निर्माण के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाने का काम प्रशांत कारुलकर ने किया है। व्यवसाय के साथ - साथ समाज के लिए अप्रतिम कार्य करने वाले प्रशांत कारुलकर एक समाजसेवी भी हैं और नि:स्वार्थ भावना से सदैव सामाजिक कार्यों को मूर्त रूप देते रहते हैं।

प्रशांत कारुलकर पेशे से रियल एस्टेट बिल्डर हैं। अपनी औद्योगिक पारी के शुरूआती दौर में प्रशांत कारुलकर ने मुंबई और उसके आसपास के उपनगरों में शानदार और आलीशान इमारतों का निर्माण कर रियल एस्टेट इंडस्ट्री में उत्कृष्ट नेतृत्व शैली और कार्यकुशलता का अनुपम उदाहरण पेश किया। प्रशांत कारुलकर रियल एस्टेट के क्षेत्र में आने से पहले स्टॉक मार्केट, एनबीएफसी और कंप्यूटर की बिक्री और विपणन के क्षेत्र में सक्रिय थे। प्रशांत कारुलकर आज एक ऐसा नाम है जो उद्योग जगत और समाजसेवा के क्षेत्र में काफी तेजी से लोकप्रिय हुआ है। वह हर एक व्यक्ति जिसने प्रशांत कारुलकर को नजदीक से देखा है, यही कहता है कि प्रशांत आज जो भी हैं, अपने दम पर हैं, अपनी मेहनत और समर्पण के नाते हैं। प्रशांत कारुलकर ने अपनी क्षमता - पात्रता और सुयोग्यता के माध्यम से स्वयं को उभारा है।

प्रशांत कारुलकर की व्यावसायिक यात्रा की शुरुआत तब होती है जब उन्होंने

कॉलेज की पढ़ाई ख़त्म करने के बाद कंप्यूटर सेलिंग के क्षेत्र में कदम रखा। 1999 में उन्होंने इस बिजनेस में खुद को आजमाया और वह एक ऐसा दौर था जब भारत में कंप्यूटर की बेतहाशा डिमांड हुआ करती थी। लगभग 2004 तक प्रशांत ने कंप्यूटर सेलिंग का काम किया और उस दौरान काफी मुनाफ़ा भी कमाया। 2004 से 2008 तक बैंकिंग संबंधी कार्यों में संलग्न रहे और उसके बाद एक ऐसी औद्योगिक यात्रा की शुरुआत होती है जिसमें पीछे मुड़कर देखने की कोई सम्भावना नहीं थी। इस सेक्टर में आने के बाद प्रशांत कारुलकर ने अथक परिश्रम किया। 2008 के आसपास का साल रियल एस्टेट इंडस्ट्री के लिए धमाकेदार साबित हो रहा था। मुंबई और आसपास के उपनगरों में घरों की भारी डिमांड थी। इसी दौरान जब प्रशांत कारुलकर ने रियल एस्टेट इंडस्ट्री में हाथ आजमाया तो उन्होंने दोनों हाथों से मुनाफ़ा कमाया। सैकड़ों लोगों को रोजगार देने और उन्हें बेहतर जीवनशैली प्रदान करने का काम प्रशांत कारुलकर हमेशा से ही करते आये हैं।

रियल एस्टेट, आईटी, स्टॉक मार्केट और बैंकिंग क्षेत्र में लगभग दो दशकों का शानदार अनुभव अर्जित करने वाले प्रशांत कारुलकर ने मुंबई विश्वविद्यालय से एमबीए की शिक्षा प्राप्त की है और वह एनआईआईटी से ग्लोबल सॉफ्टवेयर स्किल्स में स्नातक होने की योग्यता भी रखते हैं। रियल एस्टेट के क्षेत्र में वो रातों – रात उस दिन लाइमलाइट में जब उन्होंने भारत के सबसे बड़े लैंड डीलों में से एक सहारा ग्रुप की वसई स्थित सम्पूर्ण भू सम्पत्तियों को खरीदने में बड़ी भूमिका निभाई। यह लैंड डील सहारा ग्रुप और साईं रिदम रियल्टर्स प्राइवेट लिमिटेड के बीच 1111 करोड़ में हुई थी। प्रशांत कारुलकर ने मुम्बई और आसपास के परिक्षेत्र में सैकड़ों शानदार और आलीशान इमारतों के निर्माण कार्य को मूर्त रूप दिया। आज मुम्बई और आसपास के प्रमुख बिल्डरों में प्रशांत कारुलकर का नाम शीर्ष लोगों की सूची में शामिल है।

यह तो रही प्रशांत कारुलकर की व्यावसायिक गाथा। अब बात करते हैं उनके व्यक्तित्व के एक ऐसे शानदार पहलू के बारे में जिसके सामने उनकी व्यावसायिक पहचान भी छोटी लगती है। क्योंकि व्यक्ति जब नि:स्वार्थ भावना से देश और समाज के लिए कुछ करता है तो समाज में उसका कद और व्यक्तित्व सबसे ऊँचा हो जाता है। प्रशांत कारुलकर अपनी व्यावसायिक यात्रा की आरंभिक पारी खेल चुके हैं और अब वह समाज के लिए कुछ अच्छा करने की भावना से समाजसेवा में लगे हुए हैं।

कारुलकर प्रतिष्ठान

यूँ तो हर एक उद्योगपति सीएसआर (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉंसिबिलिटी) के माध्यम से कुछ न कुछ सामाजिक कार्य करता ही है, लेकिन समाज की सेवा करना प्रशांत कारुलकर के खून में है। प्रशांत कारुलकर की एक सामाजिक संस्था है – कारुलकर प्रतिष्ठान। वर्तमान में कारुलकर प्रतिष्ठान के चेयरमैन प्रशांत कारुलकर हैं। प्रशांत की दादी ने कारुलकर प्रतिष्ठान की स्थापना वर्ष 1969 में की थी। बाद में इस संस्था का संचालन प्रशांत कारुलकर के पिता स्व. अरविन्द कारुलकर किया करते थे। प्रशांत के पिता जी तो अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनके जाने के बाद भी प्रशांत कारुलकर अपने पिता की सामाजिक विरासत को शानदार तरीके से संभालने का काम कर रहे हैं।

कारूलकर प्रतिष्ठान के सामाजिक कार्यक्रम

जनसेवा ही कारूलकर प्रतिष्ठान का एकमेव उद्देश्य है। इस प्रतिष्ठान के चेयरमैन प्रशांत कारूलकर अपनी स्पष्ट दूरदर्शिता और जनसेवी इरादों के माध्यम से 2-3 हजार आदिवासी महिलाओं को रोजगार देने का काम करते हैं। कारूलकर प्रतिष्ठान के माध्यम से क्रिकेट और अन्य खेल टूर्नामेंटों का आयोजन किया जाता है, जिससे युवाओं को अपना कौशल और हुनर प्रदर्शित करने का एक अवसर मिलता है। कारूलकर प्रतिष्ठान पर्यावरणीय हितों के प्रति भी सदैव एक जिम्मेदार संस्था के रूप में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करता है। इस प्रतिष्ठान के माध्यम से हर साल हजारों की संख्या में पौधारोपण किया जाता है। पौधों को रोपित ही नहीं किया जाता बल्कि उसका नियमित रख – रखाव भी किया जाता है। प्रत्येक पौधे के नीचे उसे रोपित करने वाले का नाम भी लिखा जाता है और उस पौधे के रख – रखाव की जिम्मेदारी सम्बंधित व्यक्ति की होती है। चाहे आदिवासी कन्याओं की शादी कराना हो, सामूहिक विवाह कराना हो, युवाओं को खेल – कूद के लिए आर्थिक सहयोग देना हो, गरीब महिलाओं को कुशल बनाकर उन्हें रोजगार प्रदान करना हो, गरीबों को आर्थिक मदद मुहैया कराना हो, जरूरतमंदों को चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराना हो, इन सभी कार्यों में प्रशांत कारूलकर और उनकी धर्मपत्नी शीतल कारूलकर बढ़–चढ़कर अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन करती हैं।

समाजसेवा का विचार मन में कैसे आया, यह पूछने पर प्रशांत कारुलकर कहते हैं, ''मैंने अपने दादा जी को नहीं देखा था। अंग्रेजों ने एक किताब लिखी थी – **व्हू इज इन इण्डिया**, उस किताब में मेरे दादाजी के नाम का उल्लेख था। उनका नाम था तुकाराम चिंताराम कारुलकर। मेरी दादी अंग्रेजों के ज़माने में स्नातक थीं। जब उन्होंने स्नातक की शिक्षा हासिल की, तब वह विधवा थीं। उन्होंने अपने परिश्रम से पढ़ाई की थी। फिर डहाणू के तलासरी में आदिवासियों के लिए विद्यालय बनवाया। वह बहुत सक्रिय समाजसेविका थीं। मेरे पिता स्वर्गीय अरविन्द कारुलकर किसान थे और 1975 में आपातकाल के दौरान जेल भी गए थे। उसी समय मेरा जन्म भी हुआ था। मेरी माँ ने ऑल महाराष्ट्र नर्सिंग

काउंसिल में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उनकी फोटो टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित हुई थी। मेरा पूरा परिवार हमेशा से ही शिक्षित रहा है और समाजसेवा के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा है। मेरे बाबा संघ के कार्यकर्ता थे और दादी ने ठाणे जिले के आदिवासियों के लिए भी काफी काम किया

था। उनके सामाजिक कार्यों को देखते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शरद पवार उन्हें सम्मानित करने घर पर आये थे क्योंकि दादी अस्वस्थ थीं। मुझे यहीं से प्रेरणा मिली और सामाजिक कार्य के अपने इस पारिवारिक विरासत को सँभालने की ऊर्जा यहीं से प्राप्त होती है।''

शानदार व्यक्तित्व

प्रशांत कारुलकर एक सफल उद्योगपति होने के साथ ही साथ एक उत्कृष्ट समाजसेवी भी हैं। वह व्यक्तिगत स्तर पर कारुलकर प्रतिष्ठान के माध्यम से समाजसेवा तो करते ही करते हैं, साथ ही साथ विभिन्न सामाजिक संगठनों को भी सहयोग प्रदान करते हैं। प्रशांत कारुलकर के उत्कृष्ट और उल्लेखनीय सामाजिक कार्यों और योगदानों को देखते हुए विभिन्न उद्योगपतियों, राजनेताओं, मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों ने सम्मानित किया है। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि मौजूदा उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू की उपस्थिति में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने भी प्रशांत को सम्मानित किया है। मोहन भागवत के बारे में कहा जाता है कि ऐसा बहुत कम ही होता है जब वह किसी को सम्मानित करते हैं।

◆◆◆

प्रशांत शर्मा
चेयरमैन, जीएचपी समूह

बहुआयामी सेवाभावी व्यक्तित्व

प्रशांत शर्मा

शर्मा परिवार के महान राष्ट्रसेवी उदात्त विचारों व उत्कृष्ट कार्यों को जीवन आचरण में उतारने वाले प्रशांत शर्मा विविध प्रकार से समाज और राष्ट्र की सेवा में समर्पित हैं। आपका बहुआयामी - सेवाभावी व्यक्तित्व प्रेरक व अनुकरणीय है। मानवीय सदगुणों से अलंकृत आपके व्यक्तित्व में एक जबरदस्त आकर्षण है और सच्चे अर्थों में आप एक बेहतरीन इंसान हैं।

प्रशांत शर्मा जीएचपी समूह के चेयरमैन हैं। इस समूह ने रियल एस्टेट, हॉस्पिटलिटी और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी शानदार उपस्थिति दर्ज करायी है। मूल रूप से राजस्थान के जयपुर से सम्बन्ध रखने वाले प्रशांत शर्मा ने 17 सितम्बर, 1963 को प्रतिष्ठित शर्मा परिवार में जन्म लिया। प्रशांत शर्मा स्वर्गीय गोपाल शर्मा के सुपुत्र और महान स्वतंत्रता सेनानी पंडित चंद्रभान शर्मा के पौत्र हैं। रियल एस्टेट के क्षेत्र में अपने 3 दशकों के सुदीर्घ अनुभव के माध्यम से प्रशांत शर्मा ने मुंबई की रियल एस्टेट इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बना ली है। प्रशांत शर्मा के इसी शानदार अनुभव और उत्कृष्ट कौशल को देखते हुए राष्ट्रीय रियल एस्टेट डेवलपमेंट काउंसिल का कोषाध्यक्ष बनाया गया है। प्रशांत शर्मा के सुयोग्य नेतृत्व में जीएचपी समूह ने सैकड़ों आवासीय, वाणिज्यिक और रिटेल परियोजनाओं को मूर्त रूप देते हुए भवन निर्माण के क्षेत्र में प्रतिष्ठित छवि बना ली है।

स्वर्णिम इतिहास

मुंबई स्थित पवई का इलाका जिस अत्याधुनिकता और अद्भुत निर्माण कला के लिए प्रसिद्ध है, उसे विकसित करने के सम्बन्ध में प्रशांत शर्मा के परिवार का अतुलनीय योगदान है। जीएचपी समूह के चेयरमैन प्रशांत शर्मा उस महान शर्मा परिवार से सम्बन्ध रखते हैं, जिसने देश के स्वाधीनता संग्राम और मुंबई के समावेशी विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। शर्मा परिवार के प्रथम दानवीर पंडित चंद्रभान शर्मा जी थे, जिन्होंने अपना पूरा जीवन आजादी की लड़ाई और उसके बाद समाजसेवा के क्षेत्र में समर्पित किया। महाराणा प्रताप की धरती राजस्थान के सामौद (जयपुर) में एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे पं. चंद्रभान शर्मा ने शिक्षक का पेशा अपनाया। लेकिन उन्हें तो भारत माता को स्वतंत्र कराने में अपना योगदान देना था, इसलिए वे आजादी की लड़ाई में कूद पड़े और जयपुर, कलकत्ता, मुंबई व अन्य स्थानों पर अंग्रेजों से मुकाबला करते हुए कई बार जेल गए। उसी दौरान वे श्री गुलजारीलाल नंदा, पंडित जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गांधी के संपर्क में आ गए। आजादी के आंदोलन में सक्रिय रहने के कारण इन महापुरुषों से पंडित चंद्रभान शर्मा के सम्बन्ध प्रगाढ़ होते गए। उन दिनों मुंबई अंग्रेजों

का एक मुख्य केंद्र हुआ करता था, इसलिए मुंबई आजादी के दीवानों का भी गढ़ बना। चूँकि पवई पहाड़ी क्षेत्र था इसलिए स्वतंत्रता सेनानियों के छिपने के लिए पसंदीदा स्थान था। पंडित चंद्रभान ने और उनके साथियों ने पवई को स्वतंत्रता आंदोलन सम्बन्धी गतिविधियों का केंद्र बनाया उस समय पवई, कांजूर, साकीनाका और चांदिवली का 6500 एकड़ का पूरा इलाका सर मोहम्मद युसूफ ट्रस्ट के स्वामित्व में था। इसके ट्रस्टी सर मोहम्मद युसूफ अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलनकारियों की अत्यंत सहायता करते थे। इसी दौरान पंडित चंद्रभान जी और युसूफ जी की निकटता बढ़ी। 15 अगस्त, 1947 को देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। पंडित चंद्रभान जी ने तो अपना सर्वस्व स्वतंत्रता संग्राम में ही न्यौछावर कर दिया था। तब यूसुफ जी ने ट्रस्ट की जमीन चंद्रभान जी को भाड़े पर लेने की पेशकश की, लेकिन चंद्रभान जी ने कहा कि मैं तो "हरा शिक्षक, जमीन लेकर क्या करूँगा। फिर भी यूसुफ जी मित्रता के नाते वर्ष 1947 में उनसे लीज का करारनामा किया, पंडित चंद्रभान जी उस पर व्यवसाय कर अपना जीवन निर्वाह कर सकें। परन्तु चंद्रभान ने पैसे के अभाव में जमीन का भाड़ा नहीं दे पाए ि इस पर यूसुफ जी ने

उन्हें 5300 एकड़ जमीन एक लाख रुपए में बेचने की पेशकश करते हुए 5 वार्षिक किस्तों में भुगतान करने का प्रस्ताव दिया और करार किया। लेकिन पैसे की कमी थी। उसी दौरान पंडित चंद्रभान जी की मुलाकात लार्सन एन्ड टूब्रो कंपनी के संचालक लार्सन से हुई। वर्ष 1949 में उन्होंने एल एंड टी कंपनी को 99 वर्ष की लीज पर 100 एकड़ जमीन दे दिया। 540 हजार डिपॉजिट राशि 10 हजार रुपए के हिसाब से साल का भाड़ा तय हुआ। उसी पैसे से पंडित जी ने ट्रस्ट को जमीन की कीमत चुकाई।

देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद संयुक्त महाराष्ट्र के लिए वर्ष 1959 - 60 में हुए आंदोलन में भी पंडित चंद्रभान शर्मा ने आचार्य अत्रे, संत पांचलेगांवकर महाराज, श्री टी. एस. भारदे और श्री पुंडलिक जी के साथ बढ़ – चढ़कर हिस्सा लिया और संयुक्त महाराष्ट्र राज्य की स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वर्ष 1962 में ससमीरा इंस्टिट्यूट में एक उद्घाटन के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू मुंबई आये। नेहरू जी जब भी मुंबई आते, अपने पुराने साथियों यानी स्वतंत्रता सेनानियों से मुलाकात कर चर्चा किया करते थे। तब भी पं. चंद्रभान से उनकी चर्चा हुई। उस समय रूस के आर्थिक सहयोग से महाराष्ट्र में बड़ी इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित करने की योजना बनी थी। कॉलेज के लिए काफी बड़ी जगह की जरुरत थी, जो मुंबई में सरकार के पास थी नहीं। नेहरू जी ने अपनी मुंबई यात्रा के दौरान बैठक में चर्चा के समय पं. चंद्रभान जी को उक्त योजना से अवगत कराया। उन्होंने तत्क्षण पवई में अपनी 1100 एकड़ जमीन देने की पेशकश कर दी, ताकि मुंबई में ही इंजीनियरिंग कॉलेज बन सके। इस पर नेहरू जी ने उन्हें जमीन का मूल्य ऑफर किया, लेकिन पं. चंद्रभान जी मुंबई के विकास और देश हित में 1100 एकड़ जमीन नि:शुल्क देने की घोषणा की। उन्होंने नेहरू जी से कहा, मैं देश और अपनी कर्मभूमि मुंबई के विकास में अपना योगदान दे सकूँ। यहाँ इंजीनियरिंग कॉलेज बने। आज का युवा इंजीनियर बनकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दे, मेरे लिए इससे बड़ी सौभाग्य की बात और क्या होगी। मुझे जमीन का एक पैसा भी नहीं चाहिए। यदि संभव हो तो कॉलेज के साथ मेरा नाम जोड़ दीजिये। इस पर नेहरू जी ने कहा कि यह तो मुश्किल होगा, क्योंकि कॉलेज के निर्माण के लिए पैसा विदेश से आना है। इसलिए व्यक्तिगत नाम पर इस कॉलेज का नाम नहीं रखा जा सकता। अन्यथा विदेशी मदद नहीं मिलेगी। इस पर भी पं. चंद्रभान जी ने कहा, "कोई बात नहीं, राष्ट्रहित सर्वोपरि है। जो आपको उचित लगे वही करिये। मुझे जमीन के बदले कोई मूल्य नहीं लेना है। जमीन नि:शुल्क ही ले लीजिये। इस प्रकार शर्मा परिवार द्वारा दान की गई 1100 एकड़ की विशाल भूमि पर पवई में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना सुनिश्चित हुई। ऐसे महान दानवीर थे पं. चंद्रभान जी !

जीएचपी समूह की विकास यात्रा

जीएचपी समूह की स्थापना 27 जनवरी 1988 को स्व. गोपाल शर्मा द्वारा की गई। इस समूह की स्थापना के समय तीन निदेशक थे – स्वयं स्व. गोपाल शर्मा और उनके दोनों

सुपुत्र श्री प्रशांत शर्मा एवं श्री दीक्षांत शर्मा। जीएचपी समूह मुंबई आधारित रियल एस्टेट कंपनी है। इसका मुख्यालय मुंबई स्थित पवई में है। इस समूह ने रियल एस्टेट, हॉस्पिटलिटी और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी शानदार उपस्थिति दर्ज करायी है। मुख्य रूप से उत्तर भारत और पश्चिम भारत के परिक्षेत्र में इसके कार्यों का विस्तार है। जीएचपी समूह ने अब तक सैकड़ों शानदार और आलीशान रेजिडेंशियल – कमर्शियल प्रोजेक्टों को मूर्त रूप दिया है। स्व. गोपाल शर्मा के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपनी क्षमता, पात्रता और योग्यता के माध्यम से 70 के दशक में प्रशांत अपार्टमेंट नामक बहुमंजिला और आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित इमारत का निर्माण किया। उस समय इस प्रकार की इमारतों का निर्माण करना अपने आप में बहुत बड़ी बात थी। स्व. गोपाल शर्मा ने अपने दोनों पुत्रों को एक प्लेटफॉर्म दिया जिससे उनकी प्रतिभा का सदुपयोग हो सके। वर्तमान में जीएचपी समूह का नेतृत्व श्री प्रशांत शर्मा कर रहे हैं। प्रशांत शर्मा बताते हैं कि कॉलेज की पढ़ाई ख़त्म करने के बाद पिता जी ने परिवार द्वारा प्रबंधित पेट्रोल पंप पर 15,000/- रुपये प्रतिमाह कार्य करने के लिए कहा। उसमें से 10,000/- पिता जी को देना होता था और 5,000/- व्यक्तिगत खर्च हेतु मिलते थे। उसके साथ – साथ परिवार के अन्य व्यवसायों जैसे खदान में भी कार्य करना होता था। कुछ समय बाद बाद प्रशांत शर्मा ने परिवार के अन्य चचेरे भाइयों के साथ मिलकर 'अरुणोदय कंस्ट्रक्शंस" के माध्यम से पवई की सबसे ऊँची ईमारत 'भवाई टॉवर' का निर्माण कर किया। भवाई टॉवर उस समय पवई की सबसे ऊँची ईमारत थी। इस निर्माण कार्य के दौरान प्रशांत शर्मा साइट इंचार्ज की भूमिका में थे और उन्होंने उसी समय कंस्ट्रक्शन की बारीकियाँ भी सीखी थीं। इतना शानदार अनुभव प्राप्त करने के बाद प्रशांत शर्मा के मन – मस्तिष्क में स्वतंत्र कार्य प्रारम्भ करने का विचार आया। अपनी इसी योजना को वास्तविकता के धरातल पर क्रियान्वित करने के लिए प्रशांत शर्मा ने रेजिडेंशियल कॉम्प्लेक्स का निर्माण करने के इरादे से पवई विहार कॉम्प्लेक्स नामक विशाल प्रोजेक्ट की शुरुआत कर मुंबई की रियल एस्टेट इंडस्ट्री में स्वयं को एक परिपक्व भवन निर्माता के रूप में स्थापित किया। इस विशाल प्रोजेक्ट के माध्यम से स्कूल, कॉलेज, मंदिर, शॉपिंग, स्विमिंग पूल इत्यादि सुविधाएँ उपलब्ध करायी गईं।

प्रशांत शर्मा : शानदार व्यक्तित्व

प्रशांत शर्मा एक ऐसे शानदार व्यक्तित्व के परिचायक हैं जिनके विचारों में सजल संवेदना, उत्कृष्ट चरित्र एवं चिंतन का समावेश है। प्रशांत शर्मा अत्यंत शांतप्रिय स्वभाव के हैं, सहज, सरल और विनम्र भी हैं। प्रशांत शर्मा ने व्यक्तिगत स्तर पर सामाजिक उत्तरदायित्व के दृष्टिगत एक गैर – सरकारी संगठन श्रीमती दुर्गादेवी चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की है, जिसके माध्यम से मुंबई और जयपुर में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर उल्लेखनीय कार्य किया जाता है। इस ट्रस्ट के माध्यम से विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों का सञ्चालन किया जाता है और इन्हीं शैक्षणिक आयामों के माध्यम से लगभग 12000 विद्यार्थियों को शिक्षा का अवसर प्रदान किया जाता है। जीएचपी समूह के अंतर्गत निम्नलिखित शैक्षणिक संस्थानों का सञ्चालन किया जाता है – :

- चंद्रभान शर्मा कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स
- चंद्रभान शर्मा जूनियर कॉलेज साइंस एंड कॉमर्स
- गोपाल शर्मा मेमोरियल स्कूल
- गोपाल शर्मा इंटरनेशनल स्कूल
- पवई इंग्लिश हाई स्कूल
- गोपाल शर्मा ब्लूमिंग बड्स प्री स्कूल, पवई विहार
- गोपाल शर्मा ब्लूमिंग बड्स प्री स्कूल, साकीनाका
- गोपाल शर्मा ब्लूमिंग बड्स प्री स्कूल, हीरानंदानी, पवई
- गोपाल शर्मा टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट
- बाल विश्व भारती स्कूल एंड जूनियर कॉलेज, जयपुर
- मैक एनीमेशन सेंटर

यही नहीं, जीएचपी समूह के माध्यम से भी एक एनजीओ का सञ्चालन किया जाता है, इसका नाम है "पहल"। पहल एनजीओ की शुरुआत प्रशांत शर्मा की बहू सौदामिनी शर्मा द्वारा की गई है। प्रशांत शर्मा और उनका परिवार समाज के विकास में कुछ न कुछ योगदान देने और समाज के कमजोर वर्ग की सहायता करने में विश्वास रखता है। बिना किसी प्रचार – प्रसार के यह परिवार व्यापक स्तर पर सामाजिक कार्यों को मूर्त रूप देता रहता है।

प्रशांत शर्मा की धर्मपत्नी डॉ. मंजू शर्मा परोपकार, शिक्षा, गरीबी उन्मूलन, उद्यमशीलता और चिकित्सा के क्षेत्र में बेहद समर्पण और निष्ठा के साथ काम करती हैं। प्रशांत शर्मा के सुपुत्र हैं हिमांशु शर्मा। आप अपने पिता के व्यावसायिक विरासत को जीएचपी समूह के निदेशक के रूप में संभाल रहे हैं। हिमांशु शर्मा जीएचपी समूह को औद्योगिक विकास के पथ पर उत्कृष्टता के साथ आगे बढ़ाने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। प्रशांत शर्मा की बहू आर्किटेक्ट सौदामिनी शर्मा जीएचपी समूह की सामाजिक और परोपकारी गतिविधियों में दिलचस्पी रखती हैं और सुपुत्री काव्या अग्रवाल की शादी देश के सुप्रसिद्ध उद्योगपति राहुल अग्रवाल से हुई है। राहुल अग्रवाल डोनियर इंडस्ट्रीज लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक हैं। डोनियर इंडस्ट्रीज लिमिटेड एक प्रतिष्ठित और सबसे तेजी से बढ़ती हुई फैशन फैब्रिक ब्रांड है जो फैब्रिक्स के विनिर्माण एवं विपणन के क्षेत्र में काम करती है। इस कंपनी द्वारा राष्ट्रीय – अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सूटिंग, ट्राउजर और शर्टिंग कपड़ों का विनिर्माण किया जाता है। प्रशांत शर्मा के भाई हिमांशु शर्मा और उनके सुपुत्र श्री युगांक शर्मा जयपुर में जीएचपी समूह द्वारा संचालित व्यावसायिक आयामों का संचालन करते हैं। ◆◆◆

डॉ. तुषार देवरस
चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर
एस्ट्यूट करियर काउंसलिंग एकेडमी

एस्ट्यूट एकेडमी और डॉ. तुषार देवरस

राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर योग्य करियर के चुनाव हेतु देश के विद्यार्थियों को सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट प्रभावशाली एवं समुचित मार्गदर्शन देने वाली एस्ट्यूट एकेडमी और उसके संस्थापक डॉ. तुषार विनोद देवरस आज अंतर्राष्ट्रीय करियर काउंसलर के रुप में युवाओं के प्रकाशमय भविष्य के निर्माण हेतू अपनी अमूल्य सेवाएँ दे रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय करियर काउन्सलर के रुप में ख्याति प्राप्त डॉ. तुषार विनोद देवरस ने अब तक कक्षा 9 से लेकर पीएचडी तक के हजारों विद्यार्थियों का यथेष्ट व सफल मार्गदर्शन कर उनके कॅरियर को सवारने का महत्वपूर्ण कार्य किया है,उनके जीवन को प्रकाशित करने का सर्वोत्कृष्ट पुनीत प्रयास किया है। सम्प्रति,डॉ. तुषार एस्ट्यूट एकेडमी के माध्यम से भारत ही नहीं अपितु विश्व के लगभग बीस देशों में एजुकेशन करियर के प्रत्येक क्षेत्र में यथेष्ट मार्गदर्शन दे रहे हैं। एस्ट्यूट एकेडमी भारत की एकमात्र ऐसी करियर एकेडमी है जिसका अमेरिका में स्कॉलरशिप सफलता का रेट 85 प्रतिशत है, जो अपने आप में देश के लिए एक रिकॉर्ड है। आर्थिक रूप से ही नहीं बल्कि एकेडमिक रुप से कमजोर विद्यार्थियों मानसिक रूप से प्रेरित कर उनमें नव ऊर्जा का संचार करने वाले डॉ. देवरस को शुरु से ही करियर मार्गदर्शन में रुचि थी। जबलपुर मध्यप्रदेश के एक प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज से बीई मैकेनिकल की डिग्री लेने के उपरान्त बीएआरसी में वैज्ञानिक के रूप में ट्राम्बे के न्यू पॉवर प्लांट में कार्य करते समय डॉ. तुषार देवरस को लर्निंग एण्ड एनलिटकल का अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ। आपने मुम्बई के वेलिंगकर इस्टिट्यूट से एमबीए मार्केटिंग की भी डीग्री प्राप्त की। 1990 में ही विप्रो के साथ जुड़कर ई – लर्निंग प्रोग्राम की शुरूआत करने वाले डॉ. तुषार को विप्रो के संस्थापक एवं देश के औद्योगिक महारथी प्रेमजी के साथ कार्य करने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ।

डॉ. तुषार विनोद देवरस (पीएचडी)

चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायटेक्टर
एस्ट्यूट करियर काउंसलिंग एकेडमी

- डॉ. तुषार देवरस इंटरनेशनल कॅरियर कांउंसलर के रूप में सुप्रसिद्ध हैं।
- आप विगत 25 वर्षों से विद्यार्थियों के करियर काउंसलिंग का कार्य कर रहे हैं।
- अब तक आप 20 हजार से अधिक छात्रों की सफल काउंसलिंग कर अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दे चुके हैं।
- डॉ. तुषार देवरस पूर्व वैज्ञानिक भी हैं और भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर से भी सम्बद्ध रहे हैं।
- महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस द्वारा **उत्तर महाराष्ट्र रत्न** पुरस्कार व **सीएसआर जनरल एक्सलेंस अवॉर्ड 2017** से सम्मानित।
- मैकेनिकल इंजीनियर, मुम्बई के प्रतिष्ठित वेलिंगकर इंस्टीट्यूट से मार्केटिंग में एमएमएस की उपाधि।

डॉ. डोनाल्ड सी मार्टिन (पीएचडी)

अंतर्राष्ट्रीय करियर काउंसलर – यूएसए

- आप विश्व की चौथी सर्वश्रेष्ठ युनिवर्सिटी कोलम्बिया और शिकागो के पूर्व डीन हैं।
- नार्थ वेस्टर्न यूनिवर्सिटी के पूर्व डायरेक्टर।
- व्हीटेंन कॉलेज एवं ग्रेजुएट स्कूल के पूर्व डायरेक्टर।
- कॅरियर काउंसलर के रूप में 35 वर्षीय सुदीध अनुभव
- विद्यार्थियों की प्रतिभा – क्षमता के अनुसार उन्हें विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्व विद्यालियों में प्रदेश दिलाने में विशेष प्रदक्षता।
- टॉप इन्स्टीट्यूट एवं यूनिवर्सिटीज में फंडिंग के अवसर उपलब्ध कराने में एक्सपर्ट।
- रोड मैप ऑफ ग्रेजुएट स्टडीज नामक पुस्तक के प्रसिद्ध लेखक जो बेस्ट सेलर साबित हुई।
- यूएसए न्यूज में अनेक जानकारी प्रदान करने वाले आलेख।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालयों से टॉयअप करने के मुख्य सूत्रधार।

कौशल, योग्यता एवं व्यक्तित्व से निर्मित होता है कॅरियर – डॉ. तुषार देवरस

अब तक लाखों लोगों का सफल समुपदेशन करने वाले अंतर्राष्ट्रीय काउंसलर डॉ. तुषार देवरस ने **अभ्युदय वात्सल्यम्** से बातचीत करते हुए कहा कि एक सफल करियर के लिए स्किल (कौशल), एबिलिटी (योग्यता) एवं पर्सनालिटी (व्यक्तित्व) की आवश्यकता होती है। डॉ देवरस के अनुसार – प्रत्येक विद्यार्थी में कोई न कोई गुण अवश्य होता है, उसे पहचान कर निखारने की आवश्यकता है। डॉ. तुषार कहते हैं – हम पहले विद्यार्थी का पूरा डाटा इक्कठ्ठा करते हैं। उसे अपने एकेडमी की अंतर्राष्ट्रीय टीम के साथ भी चर्चा कर मैच किया जाता है। उसके बाद विद्यार्थी को करियर के अनेक विकल्प भी दिये जाते हैं।

20 हजार से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष काउंसलिंग

बहुआयामी प्रतिभा के घनी डॉ. तुषार देवरस ने अब तक 20 हजार से अधिक विद्यार्थियों को वन टू वन करियर काउंसिलिंग प्रदान की है। डॉ. तुषार कहते हैं कि तेरह हजार तरह के कॅरियर है। आज देश – दुनिया में प्रतिदिन क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। इस वजह से विभिन्न प्रकार के करियर के द्वारा प्रतिदन खुल रहे हैं। सही समय पर सही करियर का चुनाव

भी बहुत कठिन हो गया है। इसके लिए डॉ. तुषार लगातार सेमिनार करते रहते हैं। एस्ट्यूट एकेडमी की टीम के माध्यम से मेडिकल इंजीनियरिंग, आर्ट, कामर्स एवं सभी शैक्षणिक क्षेत्रों में करियर हेतु योग्य मार्गदर्शन किया जा रहा है। एस्ट्यूट करियर काउंसलिंग एकेडमी के कार्यालय नागपुर- ठाणे, पुणे, बंगलौर, हुबली के अलावा अमेरिका में भी कार्यरत हैं। अमेरिका के कोलम्बिया विश्व विद्यालय के पूर्व डीन डॉ. डोनाल्ड मार्टिन के सुयोग्य नेतृत्व में 23 लोगों की टीम अमेरिका में बेस्ट करियर काउंसलर के रूप में कार्य कर रही है। प्रति वर्ष भारी संख्या में विद्यार्थी एस्ट्यूट एकेडमी का मार्गदर्शन प्राप्त कर देश-विदेश में प्रतिष्ठित संस्थाओं- कॉलेजों में डोनेशन रहित प्रवेश पाकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ग्रहण करते हैं।

आवश्यक है शिक्षा की गुणवत्ता

देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में अपनी विवेचना प्रस्तुत करते हुए डॉ. तुषार देवरस के कहा- शिक्षा में गुणवत्ता बहुत ही आवश्यक है। आज विश्व स्तर पर जहाँ प्रतिदिन तीव्रगति से परिवर्तन हो रहे हैं, वहीं हमारी शिक्षा प्रणाली अभी भी पुराने ढर्रे पर ही चल रही है। डॉ. तुषार ने कहा- हमारे यहाँ प्रतिभाओं की कमी नहीं है। परन्तु उन्हें सही समय पर सही अवसर उपलब्ध कराने होंगे। इसके लिए शिक्षा की गुणवत्ता तथा उसके पाठ्यक्रम में समय-समय पर सुधार करने की नितांत आवश्यकता है। आपके अनुसार हमारे देश में पर्याप्त प्रतिभाएँ हैं परन्तु उन्हें योग्य दिशा मिलनी चाहिए ताकि प्रतिभाओं का सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चित हो सके।

समर्पित- सुयोग्य शिक्षकों की आवश्यकता

देश की शिक्षा में इको सिस्टम को बढ़ावा देने की वकालत करने वाले डॉ. तुषार देवरस का मत है कि शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित शिक्षकों का अभाव दिखाई दे रहा है। दुर्भाग्य से हमारे देश में शिक्षकों को उतना महत्व नहीं मिल रहा है। यदि शिक्षक योग्य हैं तो उनको अच्छी सैलरी नहीं मिलती। आज टापर्स शिक्षक के पेशे में जाना ही नहीं चाहते। डॉ. तुषार कहते हैं- देश में बढ़ती आबादी के साथ टॉप के इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कालेज में सीटें भी नहीं बढ़ाई गईं। मुम्बई आईआईटी और एम्स आदि उदाहरण हैं। संस्थाओं की स्थापना के दशकों बाद भी सीटें नहीं बढ़ीं। यदि शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाना है तो अच्छे कॉलेजों में सीटें और सुविधा और साथ-साथ शिक्षकों को अच्छी सुविधा और आकर्षक वेतन देना होगा। डॉ. देवरस ने बताया कि आज अमेरिका और जर्मनी जैसे देशों में शिक्षकों को हाईएस्ट पैड किया जाता है। भारत के अच्छे इंजीनियरिंग संस्थानों में आज अच्छे शिक्षकों का अभाव है।

रिसर्च ओरिएंटेड इंस्टिट्यूट

गाँव-गाँव में जाकर नि: शुल्क करियर मार्गदर्शन करने वाले डॉ. तुषार देवरस कहते हैं- अपने विद्यार्थियों को देश-विदेश में बेहतर करियर उपलब्ध कराने के लिए रिसर्च बेस्ड इंस्टिट्यूट की आवश्यकता है, जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी दोनों रिसर्च में सहभागी रहें। डॉ. देवरस ने बताया कि विभिन्न क्षेत्रों में नोबेल प्राप्तकर्ता 90 प्रतिशत लोग शिक्षक रहे हैं। विदेशों में रिसर्च पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। आज कुशल शिक्षकों की आवश्यकता है। आज शिक्षक के पेशे को अच्छा दर्जा न मिलने से समस्या आ रही है। स्कूलिंग शिक्षा का बेस बिगड़ रहा है। यदि जड़ में समस्या होगी तो पौधे का विकास नहीं होगा। उसी तरह अगर विद्यार्थी को स्कूल स्तर पर सही शिक्षा नहीं मिली तो आगे चलकर कैरियर में समस्या अवश्य आयेगी। डॉ. देवरस के अनुसार-कॉलेज की महत्ता इमारतों से नहीं बल्कि अच्छे शिक्षकों से साबित होती है। उपरोक्त महत्वपूर्ण बिन्दुओं को ध्यान में रखकर शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार होना चाहिए।

अच्छी शिक्षा हेतु निवेश की आवश्यकता

डॉ. तुषार देवरस का अभिमत है कि शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने हेतु तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुकाबला करने के लिए हमें शिक्षा क्षेत्र में अधिक निवेश की आवश्यकता है। विदेशी फंडिंग के अतिरिक्त सरकारी फंडिंग बढ़ाने की आवश्यकता है। डॉ. तुषार कहते हैं - हॉर्वर्ड जैसे विश्वविद्यालय को अपने देश में लाने की आवश्यकता है। वे आने और निवेश के लिए भी तैयार हैं परन्तु पेटेंट से सम्बन्धित कुछ नियमों के कारण परेशानी हो रही है। डॉ. देवरस ने कहा कि हमारे देश में ब्रेन की कमी नहीं है। लेकिन अवसर और फंडिंग की कमी से प्रतिभाएँ दब जाती हैं। एजुकेशन सेक्टर में निवेश से करियर के बहुत से मार्ग तैयार होंगे। विश्व के अन्य विश्वविद्यालयों के साथ समन्वय प्रोग्राम की भी आवश्यकता है।

करियर के लिए अभियान

अंतर्राष्ट्रीय करियर काउन्सलर डॉ. देवरस समय-समय पर शिक्षा एवं करियर की बेहतरी के लिए अभियान चलाते रहते हैं। हाल ही में देश के बाहर पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए सरकार

ने नीट देना अनिवार्य कर दिया था तब डॉ. देवरस ने संघर्ष कर प्रधानमंत्री और केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री से माँग कर जीआर बदलवाया और विदेश में पढ़ने वाले हजारों छात्रों की दिलाशा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी प्रकार डॉ. तुषार डोनेशन जैसी समाज व शिक्षा विरोधी गतिविधि के विरूद्ध भी आंदोलन चलाते हैं।

देवरस स्कूल ऑफ ऐक्सेलेंस: बिना डोनेशन एमबीबीएस में एडमिशन

डोनिशन एवं क्लासेस के खिलाफ कैम्पेन चलाने वाले डॉ. तुषार देवरस ने देवरस स्कूल ऑफ ऐक्सेलेंस की स्थापना की है। वहाँ पर विद्यार्थियों को शत्- प्रतिशत प्रवेश दिलाने हेतु तैयार किया जाता है। डॉ. देवरस ने बताया कि यद्यपि अधिकांश क्लासों में मेरिट में आए हुए विद्यार्थियों को मेडिकल, इंजीनियरिंग में प्रवेश दिलाने का दावा किया जाता है जबकि देवरस स्कूल ऑफ एक्सेलेंस में 50 प्रतिशत पाने वाले छात्र को भी बिना डोनेशन एमबीबीएस में प्रवेश मिलता है। यदि किसी छात्र को प्रवेश नहीं मिल पाया तो उसकी पूरी फीस वापस कर दी जाती है। इसके लिए नियमानुसार एग्रीमेंट साइन किया जाता है। डॉ. तुषार देवरस आर्थिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की सहायता भी करते हैं। ऐसे विद्यार्थियों की नि: शुल्क काऊंसलिंग की जाती है। नि: शुल्क काउन्सलिंग कर अंतर्राष्ट्रीय कॉलेजों में उनका प्रवेश सुनिश्चित किया जाता है। मेडिकल एवं इंजीनियरिंग के अतिरिक्त कला, वाणिज्य, मनोविज्ञान, सीए, लॉ आदि से जुड़े शैक्षणिक क्षेत्रों में सफल करियर बनाने हेतु विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया जाता है। एकेडमी के क्लासरूम पूर्णतया डिजिटलयुक्त हैं। वहाँ पर विद्यार्थियों को गाइड करने हेतु बेस्ट गाइड या ट्रेनर मौजदू हैं। वीडियो के माध्यम से विद्यार्थियों को लेसंस सिखाए जाते हैं। वीडियो के माध्यम से टयूटोरियल या नोट्स पढ़ाए जाते हैं। डॉ. देवरस का स्पष्ट मत है कि कोई व्यक्ति अथवा संस्था सभी क्षेत्रों में विशेषज्ञ नहीं हो सकते। इसलिए विश्व भर के एकेडमीशियन्स को एक प्लेटफॉर्म पर लाया। विश्व भर में तकनीक व बदलाव को 10 वर्ष पूर्व ही भांपकर उसे बच्चों को बताते हैं। डॉ. देवरस का मानना है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक छात्र का मूलभूत व मौलिक अधिकार है। इसलिए विद्यार्थियों को डोनेशन रहित प्रवेश कॉलेजों में दिलाने हेतु वे प्रयास करते हैं। इसके लिए उनकी एकेडमी बच्चों को काउन्सलिंग के साथ ही विशिष्ट प्रशिक्षण तकनीक देती है, साथ ही बच्चों का यूनिक मूल्यांकन टेस्ट कराती है।

जहाँ संवरता है युवाओं का जीवन

अमेरिका के गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान के तहत अच्छे विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए अपनी विशेषज्ञ टीम द्वारा मदद करना एस्ट्यूट एकेडमी की विशेषता है। अमेरिका में प्रवेश दिलाने में एस्ट्यूट एकेडमी की सफलता दर 100 फीसदी है। वहीं विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देने और शिक्षा के लिए फंडिंग देने में 85 प्रतिशत दर है। इस मार्गदर्शन की रूपरेखा की विशेषता यह है कि टॉप विश्वविद्यालयों के शिक्षक और एकेडेमिशियन्स यहाँ मार्गदर्शन करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवेश शैक्षणिक, एसएटी / एसीटी / जीआरई / जीमैट और गैर शैक्षणिक में प्राप्त किये अंकों पर निर्भर होता है। प्रोफाइल और अन्य चीजों के आधार पर सही विश्वविद्यालय का चुनाव और उसकी फंडिंग के लिए विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है।

अमेरिका के विद्यालयों में प्रवेश के लिए प्रोफाइल बनाते समय निम्नलिखित पात्रताओं का ध्यान रखा जाता है -:

शैक्षणिक प्रोफाइल

- 10 वीं कक्षा से अकादमिक प्रोफ़ाइल
- स्नातकों के लिए एसएटी, एसएटी, एपी जैसे परीक्षाओं का स्कोर
- परास्नातक और पीएचडी के लिए जीआरई, जीमैट में प्राप्त किये अंक
- स्कूल से अकादमिक प्रदर्शन का सम्पूर्ण विवरण
- अकादमिक प्रशिक्षण और कार्य का अनुभव
- प्रतियोगी परीक्षाओं में परिणाम का विवरण
- शोध कार्य सम्बन्धी जानकारियाँ

गैर शैक्षणिक प्रोफाइल

सामाजिक कार्यक्रम, पर्यावरण सम्बन्धी कार्यक्रम, सामाजिक संस्थाओं में भागीदारी और शौक इत्यादि।

प्रशिक्षण

- USMLE, SAT, ACT, GRE, IELTS TOEFL के लिए अमेरिका के अच्छे अकादमिक और प्रशिक्षण संस्थानों की सहायता से प्रशिक्षण देने के कारण विद्यार्थियों को परीक्षा देने में आसानी होती है। यह परीक्षा अमेरिका में प्रवेश और फंडिंग के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- GRE प्रशिक्षण से अब तक 95 प्रतिशत से ज्यादा विद्यार्थियों ने 310/ 340 या उससे भी अधिक अंक प्राप्त किये हैं।
- जिन विद्यार्थियों ने अपनी शिक्षा में 15 साल पूरे किये हैं उन्हें एमबीए या दूसरे स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों यथा-कंप्यूटर साइंस, साइकोलॉजी के लिए सीधा प्रवेश देने के लिए अमेरिका ने विश्वविद्यालयों को निर्माण किया है।

एस्ट्यूट एकेडमी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ भी काम करती है, जिनका भारतीय विश्वविद्यालय के साथ शैक्षणिक गुणवत्ता के टॉयअप किया गया है। भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने और कम शुल्कों पर उसे सुनिश्चित करने पर भारत सरकार लगातार जोर दे रही है। इस मामले में अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय अहम भूमिका निभाते हैं। विद्यार्थियों को फंडिंग दिलाने के सम्बन्ध में एस्ट्यूट अकेडमी बेहतरीन भूमिका का निर्वहन करती है। इंजीनियरिंग, मेडिकल और मैनेजमेंट में उच्च शिक्षा देने वाले संस्थानों के साथ एस्ट्यूट अकेडमी ने करार किया है।

वैश्विक स्तर पर मेडिकल में स्नातक - परास्नातक शिक्षा हेतु सर्वश्रेष्ठ विकल्प

अमेरिका है सबसे पसंदीदा विकल्प : डॉ. तुषार देवरस

देश की सर्वोत्तम करियर अकादमी के रूप में अपने आप को स्थापित करने वाली एस्ट्यूट एकेडमी को वैश्विक स्तर पर विदेशी विश्वविद्यालयों में एमबीबीएस, एमडी एवं अन्य महत्वपूर्ण करियर के लिए सटीक मागदर्शक माना जाता है। लगभग 13000 करियर की जानकारी उपलब्ध कराने वाले एस्ट्यूट करियर काउंसिलिंग एकेडमी के सीएमडी डॉ. तुषार देवरस शिक्षा में प्रवेश के लिए डोनेशन विरोधी मुहिम चलाते हैं। भारत जैसे विशाल देश में आबादी के अनुसार डॉक्टरों की कमी और अच्छे मेडिकल कॉलेजों के साथ – साथ सीटों की कमी को देखते हुए मेडिकल शिक्षा अत्यधिक महँगी हो गई है। मेडिकल की पढ़ाई में करोड़ों का खर्च भी अभिभावकों के लिए असंभव है। ऐसे में उनके इस सपने को पूरा करने के लिए डॉ. देवरस का उचित मार्गदर्शन काम आता है। विदेशों में गुणवत्तापूर्ण मेडिकल की पढ़ाई और खर्च में बेहद कमी का बेहतरीन विकल्प डॉ. देवरस के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता है। डॉ. देवरस के अनुसार किसी भी देश में पढ़ाई अच्छी – बुरी नहीं होती, बल्कि योग्य शिक्षण संस्थानों का चुनाव जरुरी होता है। आज अपने देश के विद्यार्थी एमबीबीएस के आलावा एमडी की पढ़ाई विदेशों से करने में काफी जोर दे रहे हैं। अमेरिका, रूस, जर्मनी, फिलिफीन जैसे कई देशों में भारत से अच्छी और सस्ती मेडिकल की पढ़ाई होने से विद्यार्थियों का रुझान काफी रुझान बढ़ा है। डॉ. देवरस के अनुसार इस समय पढ़ाई के लिए अमेरिका पहली पसंद बना हुआ है। अमेरिका में स्कॉलरशिप प्राप्त कर शिक्षा लेने के लिए सैट / ऐक की परीक्षा देनी पड़ती है। भारत की अपेक्षा सस्ती और अच्छी शिक्षा के लिए अमेरिका हॉट डेस्टिनेशन माना जाता है। अंग्रेजी को प्राथमिकता, बड़ी संख्या में भारतीयों की उपस्थिति एवं शांत विकसित माहौल होने की वजह से अमेरिका को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। विश्व की 5 महाशक्तियों में से एक जर्मनी भी उच्च शिक्षा का बड़ा केंद्र है। डॉ. देवरस के अनुसार जर्मनी में मेडिकल की उच्च शिक्षा फ्री अथवा बहुत सस्ती है। लेकिन यहाँ शिक्षा ग्रहण करने के लिए एक साल जर्मन भाषा सीखनी पड़ती है। जर्मनी मेडिकल में पोस्ट ग्रेजुएट शिक्षा के लिए तेजी से उभरा है।

अत्यंत शांत एवं सुरम्य वातावरण वाले देश फिलिपिंस मेडिकल की उच्च व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केंद्र के रूप में उभरा है। 7100 टापुओं वाले इस देश में अंग्रेजी भाषा के चलन की प्राथमिकता दी जाती है। इस कारण शिक्षा में कोई परेशानी नहीं आती। भाषा, खानपान एवं वातावरण के हिसाब से मेडिकल की पढ़ाई का प्रमुख और पसंदीदा केंद्र बनकर उभरा है।

डॉ. तुषार देवरस कहते हैं कि रूस भी विद्यार्थियों का प्रिय शैक्षणिक स्थल रहा है। परन्तु वातावरण में तेजी से बदलाव के चलते मुश्किल भी आती है। यहाँ विद्यार्थी सिर्फ केंद्र सरकार के फेडरल विद्यापीठ में प्रवेश लेते हैं तो उनके लिए लाभदायक साबित होता है। ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर और कनाडा जैसे देशों में शिक्षा काफी महँगी है। यहाँ स्थाई रूप से रहने के उद्देश्य से विद्यार्थी प्रवेश लेते हैं। सस्ती और अच्छी शिक्षा के लिए रूस एक अच्छा विकल्प है। यहाँ बड़ी संख्या में भारतीय विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। डॉ. देवरस के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना हर एक विद्यार्थी का मौलिक अधिकार है। इसके लिए अच्छे संस्थानों का चुनाव भी आवश्यक होता है। केवल पैकेज के आधार पर किसी भी विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं लेना चाहिए। बल्कि देश – विदेश के उत्तम विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेना चाहिए जहाँ शोध को अत्यंत प्राथमिकता दी जाती है। आज अमेरिका, जर्मनी जैसे देशों में पीजी कोर्सों को बहुत प्राथमिकता मिल रही है और युवाओं का झुकाव भी इसी तरफ है। डॉ. तुषार देवरस की एस्ट्यूट एकेडमी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है। यह देश की नंबर 1 मार्गदर्शक संस्थान है। यह भारत या विश्व की किसी भी विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध नहीं है। एक सामाजिक शैक्षणिक सरोकार के रूप में आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों का मुफ्त मार्गदर्शन एस्ट्यूट एकेडमी की तरफ से किया जाता है, ताकि वे देश – विदेश के उच्च शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश ले सकें। मुफ्त मार्गदर्शन के लिए अभिभावक एवं छात्र सीधे डॉ. तुषार देवरस से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

◆◆◆

डॉ. अरुण शर्मा
चेयरमैन,
एल. आर. एक्टिव प्राइवेट लिमिटेड

व्यावसायिक उत्कृष्टता के प्रबल पक्षधर

डॉ. अरुण शर्मा

डॉ. अरुण कुमार शर्मा एल. आर. एक्टिव प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। अरुण शर्मा के पास खाद्य तेल विनिर्माण उद्योग, कृषि उत्पादों और कमोडिटी निर्यात में लगभग 2 दशकों का लम्बा और शानदार अनुभव है। उन्होंने अपने शानदार नेतृत्व के माध्यम से एल आर एक्टिव को उस मुकाम पर पहुँचा दिया, जहाँ से सफलताओं की परिभाषा गढ़ी जाती है। अरुण शर्मा ने एल आर एक्टिव का कायाकल्प कर और समृद्ध बनाकर उसे बाजार में उतारा और फिर एक ऐसा दौर आया कि उनके उत्पादों की मांग भारत के बाजारों में बढ़ने लगी। बहुत ही कम समय में उन्होंने एल आर एक्टिव को शीर्ष एफएमसीजी कंपनियों की सूची में लाकर खड़ा कर दिया था। गुणवत्तापूर्ण उत्पाद उपलब्ध कराना और लोगों को एक बेहतर किस्म का प्रोडक्ट देने की उनकी नेतृत्व शैली ने कंपनी की सफलता में चार चाँद लगा दिए। खाद्य तेल उद्योग, रासायनिक उत्पादों और वस्तुओं के निर्यात में उनके वर्षों के अनुभव का लाभ कंपनी को प्राप्त हुआ, जिसकी वजह से कंपनी ने बेतहाशा उपलब्धि अर्जित की। अरुण शर्मा स्थानीय स्तर पर किसानों के साथ काम करने और कृषि पद्धतियों में उत्पादकता बढ़ाने और सर्वोत्तम प्रथाओं को सुनिश्चित करने में दिलचस्पी लेते हैं। सामाजिक रूप से सक्रिय रहने वाले अरुण शर्मा दान और परोपकार में भी अपनी महती भूमिका का निर्वहन करते हैं। हमेशा विनम्र रहने वाले अरुण शर्मा के बारे में कहा जाता है कि वह अथक परिश्रम करने वाले व्यक्ति हैं। क्योंकि एक सामान्य परिवार से निकलकर भारतीय उद्योग जगत के पटल पर छा जाना कोई सामान्य बात नहीं। लेकिन, अरुण शर्मा के जीवन में एक ऐसा भी समय आया जब एनएसईएल मामले में उनका नाम आया। उन क्षणों को याद करते हुए अरुण शर्मा कहते हैं कि मेरे साथ कुछ लोगों ने साजिश किया, जिससे मेरी रफ़्तार कम हो जाए। अरुण शर्मा वर्तमान में एक ऐसी नयी योजना पर काम कर रहे हैं जिसके माध्यम से वह अपने स्टोर्स खोलकर देश भर के उपभोक्ताओं और किसानों से प्रत्यक्ष जुड़ाव स्थापित करेंगे। इस चीज की शुरुआत करने में बस थोड़ा सा ही वक्त है। आने वाले 2-3 महीनों में उनकी यह योजना मूर्त रूप लेगी। डॉ. शर्मा विभिन्न पुरस्कारों और सम्मानों के प्राप्तकर्ता हैं। विश्व के प्रमुख वनस्पति तेल अनुसंधान संगठनों में से एक ग्लोबल इंडिया द्वारा उन्हें यंग एंटरप्रेन्योरशिप ऑफ द ईयर पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ. शर्मा को उद्योग जगत में उनके उल्लेखनीय योगदानों के लिए कई निम्नलिखित पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा गया है –

- पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी की 69वीं जयंती के अवसर पर 20 अगस्त, 2012 को उत्कृष्ट सेवाओं, उपलब्धियों और योगदान के लिए राजीव गांधी राष्ट्रीय एकता सम्मान प्रदान किया गया।
- डॉ.अरुण कुमार शर्मा को दुबई में आयोजित एक मेगा इवेंट में एचपीएम के निदेशक अरिंदम चौधरी के हाथों राइजिंग एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर के रूप में सम्मानित किया गया है। इसके अलावा एल आर एक्टिव को भी पावर बैंड राइजिंग स्टार अवॉर्ड मिला।
- थाईलैंड के पूर्व प्रधानमंत्री एच. ई. खुन डब्बरांसी द्वारा व्यावसायिक उत्कृष्टता के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से नवाजा गया।
- महात्मा गांधी सम्मान।
- एल आर एक्टिव के लिए इमर्जिंग ब्रांड ऑफ द ईयर
- लायंस गोल्ड अवॉर्ड्स 2012 - 13।

मार्केटिंग, गुणवत्ता और रेट - तीन चीजों को लेकर मैं आ रहा हूँ

- डॉ.अरुण शर्मा

अभ्युदय वात्सल्यम के प्रधान संपादक आलोक रंजन तिवारी ने एल आर एक्टिव प्राइवेट लिमिटेड के सीएमडी डॉ.अरुण शर्मा से उनकी कंपनी की वर्तमान व्यावसायिक स्थितियों और आगामी कार्यक्रमों एवं योजनाओं के सन्दर्भ में विस्तृत बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश –

▸▸ अपनी कंपनी एल. आर. एक्टिव प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना के बारे में बताएं ?

हमारी कंपनी की स्थापना 2009 में हुई। इसका नाम लोटस रिफायनरी प्राइवेट लिमिटेड था। बाद में हमने उसे बदलकर एल. आर. एक्टिव प्राइवेट लिमिटेड कर दिया। जब मैं यहाँ पर आया था तो यह एक फार्मा कंपनी थी। 2009 में मैंने इस कंपनी का टेक ओवर किया और 2011 में लांच किया। जब मैंने इस कंपनी को संभाला था तब 1.5 से दो करोड़ तक का ही टर्न ओवर था। मैंने 2011 - 12 में इसको पूरी तरह

संभाला तो मेरा एक सपना था कि इसे भारत की ऑयल इंडस्ट्री में व्यापक स्तर पर स्थापित करना है। उस दौरान हमारी कंपनी इतना अच्छा प्रदर्शन कर रही थी कि एक साल में हम 2000 करोड़ टर्न ओवर तक पहुँच गए।

ऐसा आपने क्या किया था कि इतने व्यापक स्तर पर आपने वृद्धि दर्ज की ?

मैं सबसे ज्यादा अपने उत्पाद की गुणवत्ता पर ध्यान देता था। मैंने जिन – जिन फैक्ट्रियों का टेक ओवर किया था, उसमें हमारी यही कोशिश होती थी कि 1 परसेंट भी मिलावट तेल में नहीं होगी। लोगों ने हमारे प्रोडक्ट्स को पसंद किया और लगातार मांग बढ़ती गई। अन्य महत्वपूर्ण विषय यह है कि हमारी सोच थी कि हम 10 पैसे कम कमाएंगे लेकिन लोगों को 10 पैसे का लाभ जरूर देंगे। इस वजह से हम दिनों – दिन बढ़ोत्तरी करते चले गए। लेकिन फिर एक ऐसा समय आया कि कुछ लोगों ने मुझे ऐसी जगह पर लाकर खड़ा कर दिया जहाँ मुझे कुछ समझ में ही नहीं आया कि मैं क्या करूँ ? कुछ लोगों की साजिश थी कि ये अरुण शर्मा आगे न बढ़ पाये। अगर हमारा इरादा ख़राब होता तो मेरे पास बहुत पैसा आ गया था। मैं कब का निकल लेता। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। साईं बाबा की कृपा से अब सब कुछ ठीक–ठाक है। आगे कुछ नया करने की योजना है।

आगे क्या कुछ नया करने की योजना है ?

अब मैं पूरे हिन्दुस्तान में कुछ ऐसा करने जा रहा हूँ जहाँ गुणवत्ता भी अच्छी रहेगी और रेट भी कम होगा। मेरी सोच है एक ऐसे नेटवर्क को स्थापित करने का है एफएमसीजी क्षेत्र के सभी तत्व एक साथ जुड़े रहें। मार्केटिंग, गुणवत्ता और रेट – तीन चीजों को लेकर मैं आ रहा हूँ जिससे हर एक उपभोक्ता लाभान्वित होगा। मैं देश भर में अपने स्टोर खोलने की योजना पर काम कर रहा हूँ, जहाँ पर ग्राहकों को बाजार की तुलना में सस्ता और गुणवत्तापूर्ण प्रोडक्ट मिलेगा। अन्य कंपनियों के उत्पादों की तुलना में उसकी गुणवत्ता काफी अच्छी रहेगी और सस्ती भी रहेगी। क्योंकि मार्जिन जैसी स्थिति को मैं ख़त्म करने की दिशा में काम करूँगा। सीधे ग्राहकों से जुड़ाव स्थापित करके उन्हें प्रत्यक्ष तौर पर अपने उत्पाद सप्लाई करूँगा।

इस चीज की शुरुआत आप कब से करने वाले हैं ?

लगभग सारी तैयारियां हो चुकी हैं। अधिक से अधिक २ महीने में मैं इसकी शुरुआत कर दूंगा।

एल. आर. एक्टिव प्राइवेट लिमिटेड शुरू करने से पहले आपकी जिंदगी कैसी थी ?

इससे पहले भी मैं तेल का काम करता था। मेरे ब्रदर इन लॉ इस क्षेत्र में 1988 से काम करते थे। उनके साथ मैं ट्रेडिंग करता था। मैंने अपनी लाइफ साइकिल से शुरू की थी। मैं बहुत मध्यम परिवार से था। मेरे पिता एक सामान्य व्यक्ति थी। मैंने जब 12 वीं के पढ़ाई की तो मेरे पिता जी कहते थे कि एकाउंटिंग का काम सीख लो। उनकी सोच यही थी कि ग्रेजुएशन करने के बाद कहीं पर सरकारी नौकरी पा जाऊंगा। पर मेरी सोच कुछ अलग थी। मैं सहारनपुर के देवबंद से ताल्लुकात रखता हूँ। मेरी पढ़ाई वहीं

से हुई है। मैंनें कुछ छोटी – बड़ी कंपनियों में काम किया। मेरी सबसे पहली कंपनी 555 थी, वहां एक सेल्समैन के रूप में मैंने काम किया। मैंने कई जगह नौकरियां करने के बाद काफी अनुभव प्राप्त किया तो मुझे लगा अब कुछ नया करना चाहिए। मैंने सोचा कि बड़ी – बड़ी कंपनियों के एमडी लोगों के साथ काम किया है तो क्यों न अपने लिए करूँ ? 2000 में मैं चंडीगढ़ आ गया था। लुधियाना में मैं तेल कंपनी चलाता था। इस दौरान तेल की बिजनेस में मौजूद बारीकियों को सीखने का अवसर मिला।

जिस समय आपने परेशानियों का सामना किया, उस समय आपके प्रोडक्ट्स बिक गए या सप्लाई चेन रुक गया ?

प्रोडक्ट्स तो बिके लेकिन अब इस समय स्थिति ऐसी है कि ५ करोड़ की भी सेल्स नहीं हो पाती। क्योंकि एक बार जो डाउन फॉल आया उससे छवि प्रभावित हो गई। लेकिन चिंता करने की कोई बात नहीं है , जल्द ही हम एफएमसीजी इंडस्ट्री की दिग्गज कंपनी के रूप में दुनिया के सामने होंगे। मैं ऐसी रणनीतियां बना रहा हूँ जिससे ग्राहक मेरे साथ आकर जुड़ जाएँ। शिखर से गिरकर शून्य पर आ जाना और शून्य से फिर शुरुआत करना थोड़ा संघर्षपूर्ण तो होता ही है लेकिन सब कुछ फिर से अच्छा हो जाएगा।

इस समय भारतीय अर्थव्यवस्था स्लो डाउन के दौर में है। कैसे देखते हैं इस समस्या को ?

देखिये, स्लो डाउन तो पूरे विश्व में चल रहा है। उतार– चढ़ाव बाजार का हिस्सा है। फिर भी हमारी सरकार और उद्योग जगत अपने – अपने स्तर पर प्रयास कर रहे हैं जिससे इसका अधिक असर सामने न आये।

सीएसआर को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं ?

सीएसआर बहुत अच्छी चीज है। यदि ईश्वर ने हमें पैसा दिया है तो समाज और देश के लिए भी कुछ करना चाहिए। सीएसआर को हमें 2-4 पर्सेंटों नहीं बांटना चाहिए। यदि भगवान ने हमें इतना दिया है तो 50 में प्रतिशत समाजसेवा के लिए खर्च करना चाहिए। इसके लिए दिल बड़ा होना चाहिए।

◆◆◆

कठिन परिश्रम और परोपकार के प्रतीक

उमेश गाँधी

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता का मूलमंत्र व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति, अटूट आत्मविश्वास, कर्तव्य परायणता और एकनिष्ठ प्रयास है। अन्य बातें समान होने पर भी अनेक व्यक्तियों में वही सफल होता है जिसकी इच्छाशक्ति अत्यधिक प्रबल होती है। सफलता का शानदार इतिहास लिखने वाले सभी व्यक्तियों ने इसी गुण के कारण महान सफलताएँ अर्जित कीं। उनमें भले ही अन्य गुण न रहे हों, चाहे उनमें कुछ दुर्बलताएँ भी क्यों न रही हों परंतु अटूट दृढ़ निश्चय एवं दृढ़ इच्छाशक्ति द्वारा वे भीषण बाधाओं के बीच भी निरंतर संघर्षशील रहे और अंततः उन्नति के महान शिखर पर आरूढ़ हुए। कुछ ऐसे ही औद्योगिक उन्नति के शिखर पर आरूढ़ हैं उमेश गाँधी बिल्डर्स एण्ड डेवलपर्स के मालिक उमेश हिम्मतलाल गाँधी। गाँधी जी एक सफल और कुशल उद्योगपति के रूप में अत्यंत ही सरल सहज, विनम्र, ईमानदार, दूरदर्शी और कर्मठ व्यक्तित्व के धनी हैं। गाँधी जी का व्यक्तित्व ऐसा दिव्य प्रकाश है जिसके मूल में उत्कृष्ट चिंतन और सजल संवेदना है, विचारों की अलौकिक आभा है। आपके व्यक्तित्व में स्वतंत्र सत्ता, आत्म योग्यता, प्रभाव उत्पादकता, श्रेष्ठता व उत्कृष्ट चरित्र एवं चिंतन का सुंदर समावेश है। आपका उत्कृष्ट चिंतन ही आपके व्यक्तित्व को प्रखर बनाता है और सरस भावनाएँ एवं संवेदनाएँ इसे भावपूर्ण बनाती हैं। आत्मबल, साहस एवं प्रखरता ही आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व की मौलिक विशेषता है। श्री गाँधी जी ने वर्ष 1977 में अपनी योग्यता, पात्रता, क्षमता, कर्तव्यनिष्ठा और व्यावसायिक कुशलता के माध्यम से एक भवन निर्माण कंपनी की स्थापना की और आज वही कंपनी उमेश गाँधी बिल्डर्स एण्ड डेवलपर्स के नाम से महानगर मुंबई के आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। उमेश गाँधी बिल्डर्स एण्ड डेवलपर्स रियल एस्टेट, आतिथ्य उद्योग, कृषि उद्योग और समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करती है और यह लगभग 8 कंपनियों की एक शानदार समूह है जो सैकड़ों लोगों को रोजगार प्रदान कर उनके जीवनशैली को उत्कृष्ट बनाती है। उमेश गाँधी का मानना है कि कॉर्पोरेट भागीदारी राष्ट्र के सतत विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है और एक कॉर्पोरेट नागरिक के रूप में वह राष्ट्र और समाज की बेहतरी के लिए अपने विभिन्न योजनाओं, उपक्रमों और कार्यक्रमों के माध्यम से अप्रतिम कार्य कर रहे हैं। उमेश गाँधी बिल्डर्स एण्ड डेवलपर्स ने मुंबई और आसपास के उपनगरों में लगभग 17 शानदार और आलीशान आवासीय परियोजनाओं को मूर्त रूप दिया है। मुंबई के उपनगर अंधेरी पश्चिम स्थित लोखंडवाला क्षेत्र में भव्य इमारतों का निर्माण कार्य जारी है। यह कंपनी अपने आतिथ्य उद्योग के क्षेत्र में भी तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। महानगर मुंबई के अंधेरी पश्चिम उपनगर में दीप होटेल का निर्माण कार्य जारी है और कांदीवली पश्चिम में सनराइज पार्टी हॉल तथा राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित नाथद्वारा में सनसिटी गेस्ट हाऊस एण्ड कॉटेज और गोपी वल्लभ पहले से ही संचालित हो रहे हैं। इस समूह के संपूर्ण व्यावसायिक और आर्थिक विकास में उमेश गाँधी का सर्वाधिक योगदान है जिन्होंने सफलतापूर्वक इस समूह के विकास की गति में निरंतर वृद्धि की है। गाँधी कहते हैं- किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए पूरी तैयारी करना आवश्यक है। इसके लिए जरूरी है उद्देश्य, सिद्धांत, योजना, अभ्यास, सतत प्रयास, धैर्य और गर्व। इसी से पूरी तैयारी होती है। अवसरों को पहचानने में अयोग्यता, डर, अनुशासन की कमी, कमजोर स्वाभिमान, ज्ञान का अभाव, भाग्यवादी दृष्टिकोण और साहस का अभाव भी असफलता के कारणों में आते हैं। इन कारणों को दूर करके ही सफलता का सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है। उमेश गाँधी अनेक सांस्कृतिक, सामाजिक सेवा मंडलों एवं ट्रस्टों के ट्रस्टी हैं और वास्तविक अर्थों में समाजसेवी कार्यों एवं गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। औद्योगिक कार्यों के साथ- साथ सामाजिक कार्यों में सहयोगपरक भूमिका उमेश गाँधी को एक संवेदनशील एवं समाजसेवी व्यक्ति के रूप में गरिमा प्रदान करती है।

◆◆◆

ओ.एन. सिंह
कार्यकारी अध्यक्ष
यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

अध्यक्ष का सन्देश

यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड इलाहाबाद बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक, कर्नाटक बैंक लिमिटेड, डाबर इन्वेस्टमेंट्स और सोम्पो जापान निप्पोनको इंश्योरेंस इंक के बीच एक संयुक्त उद्यम है। यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस एक नॉन-लाइफ इंश्योरेंस कंपनी है जिसमें भारत और जापान के विश्वसनीय सार्वजनिक और निजी कॉर्पोरेट संस्थाओं की भागीदारी और सहयोग है। कंपनी का मुख्यालय मुंबई में है और भारत में इसकी 86 शाखाएँ और 17 क्षेत्रीय कार्यालय हैं। 152 स्वीकृत IRDAI उत्पादों के साथ, यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस व्यक्तिगत स्वास्थ्य नीतियों, व्यक्तिगत दुर्घटना कवर, मोटर और टू व्हीलर बीमा, अंतर्राष्ट्रीय यात्रा बीमा और व्यापक गृह बीमा कवर जैसे सुरक्षा उपकरणों की एक श्रृंखलात्मक बीमा सेवा प्रदान करता है। सुरक्षा नामक सर्वाधिक वांछित और महत्वपूर्ण तत्व प्रदान करने की तुलना में समाज को कुछ लौटाने का कोई अन्य बेहतर तरीका नहीं है और इसी को लेकर यूएसजीआई में हम अपने ग्राहकों की सुरक्षा और खुशहाली के लिए प्रतिबद्ध हैं। छोटे और बडे. व्यवसायों के लिए कंपनी के पास जोखिम-सुरक्षा उत्पाद हैं जो ग्राहकों को व्यावसायिक संचालन में उत्पन्न होने वाली बाधाओं और अनिश्चितताओं से निपटने हेतु वित्तीय सुरक्षा प्रदान करते हैं। यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस (USGI) भारत सरकार के साथ सामाजिक सुरक्षा पैकेज के साथ-साथ वेदर और क्रॉप इंश्योरेंस स्कीमों के लिए सक्रिय रूप से भागीदारी कर रहा है। भारतीय बीमा क्षेत्र 2025 तक 150 बिलियन डॉलर का उद्योग बन जाएगा। कहने की जरूरत नहीं है कि इसके लिए वित्तीय समावेशन, ग्राहक केंद्रितता, मूल्य निर्माण और सरकार से समर्थन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

1. 31 मार्च, 2019 की स्थिति के अनुसार ३६८.१८ करोड़ की छोटी पूँजी के साथ कंपनी ८८५.८५ करोड़ के शुद्ध मूल्य तक पहुँचने में सक्षम रही है। वित्त वर्ष २०१९-२० के लिए कंपनी पर्याप्त वृद्धि के साथ ३१०० करोड़ रुपये के प्रीमियम का लक्ष्य बना रही है।

Universal Sompo
General Insurance Co. Ltd.
Suraksha, Hamesha Aapke Saath

2. कंपनी ने नए बैंक टाई-अप, ओईएम और डीलर टाई-अप के माध्यम से नए प्रीमियम प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया है।

3. यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस न केवल विनियामक परिवर्तनों के साथ संरेखित करने के लिए बल्कि फसल बीमा, ग्राहक स्वयं सेवा पोर्टल और डिजिटल वॉलेट हेतु मोबाइल एप्लिकेशन सिस्टम की शुरुआत कर अपनी मार्केटिंग टीम और ग्राहकों को सर्वोत्तम आईटी सक्षम टूल प्रदान करने के लिए अपने आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर को आगे बढ़ा रहा है।

4. वित्त वर्ष 2019-20 में, कंपनी ने पहलों को सूचीबद्ध करते हुए यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस को और अधिक डिजिटलाइज करने के उद्देश्य से लाइव चैटबॉट 'आरम्भ' की शुरुआत अपने वेबसाइट पर की है, जो मोटर, स्वास्थ्य और फसल बीमा से सम्बंधित प्रश्नों का समाधान करता है। यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस ने नई और नवीकरण नीतियों हेतु प्रीमियम भुगतान के लिए डिजिटल वॉलेट PAYTM के साथ भागीदारी सुनिश्चित की है।

5. अपने डिजिटल अभियान में वृद्धि करते हुए यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ने बीमाधारकों को सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से USGI ALLY नामक मोबाइल एप्लिकेशन की शुरुआत की है। इस ऐप को सर्विस डिलीवरी को बढाने के मुख्य उद्देश्य के साथ लॉन्च किया गया है। यह सभी पोस्ट-सेल्स

इंश्योरेंस जरूरतों के लिए एक स्टॉप शॉप है, जिसमें ऑनलाइन दावा सूचना, ग्राहक के लिए जीपीएस आधारित सेवा प्रदाता, विभिन्न मूल्य वर्धित सेवाओं के लिए मार्केटप्लेस, एआई-आधारित स्वास्थ्य जोखिम मूल्यांकन इत्यादि विशेषताएँ हैं।

6. USGICL ने अपने मध्यस्थ भागीदारों के लिए अपना एजेंट पोर्ट लॉन्च किया है, जिसमें भागीदार पॉलिसी जारी कर सकते हैं, पॉलिसी नवीनीकृत कर सकते हैं, इंटिमेट क्लेम कर सकते हैं और अपने खातों की जांच कर सकते हैं।यूएसजीआई पहले ही 'व्हाट्सएप" के साथ वास्तविक समय के आधार पर ग्राहक को पॉलिसी कॉपी भेजने के लिए समन्नय बना चुका है।

7. यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि, USGIC ने हमेशा केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) योजना में सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है। USGIC ने अब तक ६५ लाख से अधिक किसानों को योजना के लॉन्च के बाद कवर किया है।

8. यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस के 'कौशल विकास कार्यक्रम" के तहत, कंपनी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बेरोजगारों को कैरियर एजेंट के रूप में कार्य करने के लिए वित्तीय सहायता और आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करती है। जिसके माध्यम से वे कंपनी की गैर-जीवन बीमा पॉलिसियों को बेचकर प्राप्त होने वाले कमीशन के माध्यम से जीविकोपार्जन कर सकते हैं। संभावित ग्राहकों के साथ बातचीत बढाने के लिए कंपनी आवश्यक उत्पाद और सॉफ्ट-स्किल ट्रेनिंग प्रदान करती है। पूरा होने पर, उम्मीदवारों को उनके विशेष क्षेत्र से कंपनी के लिए स्रोत व्यवसाय हेतु नामित किया जाता है। चूंकि अधिकांश उम्मीदवार अर्ध-शहरी, ग्रामीण और भीतरी इलाकों में निवास करते हैं, इसलिए वे समाज के उन वर्गों के लिए जोखिम समाधान का विस्तार करने में सक्षम होते हैं, जो आमतौर पर अभिगम्यता के मुद्दों के कारण बाहर रहते हैं। हाल ही में यूनिवर्सल सोम्पो जनरल इंश्योरेंस ने वाराणसी के 110 बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षित किया है और योग्य एजेंटों को रोजगार दिया है। नए व्यवसाय के उपार्जन पर, प्रत्येक उम्मीदवार नियामक ढांचे के अनुसार कमीशन के लिए हकदार होगा। कमीशन के अलावा, कंपनी प्रत्येक उम्मीदवार को 7500/- रुपये प्रतिमाह का मासिक आउट-ऑफ-पॉकेट खर्च प्रदान करेगी। 2 अक्टूबर को माननीय केंद्रीय कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री डॉ. महेंद्रनाथ पांडेय ने इन सभी सफल उम्मीदवारों को सम्मानित किया। कंपनी ने अब तक पूरे भारत में 709 उम्मीदवारों को शामिल किया है और गैर-नियोजित युवाओं को आजीविका की आय के आत्मनिर्भर स्रोत के साथ सशक्त बनाया है।

इसके अलावा, भारत तेजी से डिजिटल अर्थव्यवस्था में बदल रहा है, इसके लिए बीमा व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं में प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग की भी आवश्यकता होगी। अपनी स्थापना से पिछले 12 वर्षों में यूनिवर्सल सोम्पो ने सामान्य बीमा उद्योग में एक लंबा सफर तय किया है। उभरती प्रौद्योगिकियों, तीव्र नवाचार, नवीन व्यापार मॉडल, नियामक अनुपालन और बाजार में प्रतिस्पर्धा के साथ, "परिवर्तन" अधिक प्रबल और सतत रूप ले चुका है। एक पारिस्थितिक तंत्र विकसित करने हेतु हम निरंतर प्रयास करते रहते हैं। इसके माध्यम से यूएसजीआई कर्मचारियों के बीच कार्य कुशलता का अनुकूलन होता है और उन्हें उनके पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में बढ़ने के लिए आवश्यक समर्थन प्राप्त होता है।

◆◆◆

With best compliments from

A Well Wisher

SBI MUTUAL FUND
A PARTNER FOR LIFE

अश्वनी भाटिया
एमडी - सीईओ
एसबीआई म्यूचुअल फंड

ग्राहकों के लिए वेल्थ क्रिएट करने में अपनी तरफ से हम कोई कमी नहीं करेंगे

– अश्वनी भाटिया

एसबीआई म्यूचुअल फंड के एमडी – सीईओ अश्वनी भाटिया ने अभ्युदय वात्सल्यम के प्रधान सम्पादक आलोक रंजन तिवारी से मौजूदा अर्थव्यवस्था और म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री से जुडे.तमाम विषयों पर विस्तृत बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के सम्पादित अंश –:

- **इस समय अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजर रही है। क्या इससे आप चिंतित हैं ?**

एकनॉमिक साइकल में उतार चढ़ाव आते रहते हैं। इस तरह का उतार – चढ़ाव हमारे यहां पर 2002–03 में आया था, 2008-09 में आया था, 2013 में आया था और इस साल भी थोड़ी बहुत मंदी है। यह मंदी बहुत समय तक नहीं चलेगी और हाल ही में सरकार ने और माननीय वित्त मंत्री ने जो कदम उठाए हैं, उससे स्थिति ठीक होने की संभावना है और जल्द ही सब ठीक हो जाएगा। पिछले साल आईएलएफएस मामले के उदय के बाद ही थोड़ी मंदी आई है क्योंकि बाजार में थोड़ी सावधानी आ गई है और एनबीएफसी क्राइसेस सलटने जा रहा है। इससे यह होगा कि जो थोड़े मजबूत हैं उनके पास पैसा जाएगा और जो कमजोर हैं उन्हें ज़रा सावधानी बरतनी पड़ेगी। तो हो सकता आने वाले साल में या 5– 6 महीने के भीतर ही यह समस्या हल हो जायेगी। क्योंकि टैक्स बेनिफिट इतना ज्यादा दे दिया है कि हर कंपनी को फायदा होगा। किसी को 10% तो किसीको 15%। यह पैसा हमारे बैलंस शीट में आएगा जिससे हमारा रिस्क कैपिटल बढ़ जाएगा और इसकी वजह से हमारा इन्वेस्टमेंट भी बढ़ेगा। अगर आप राजनीतिक तौर पर देखें तो कहाँ दिक्कत नहीं है। अमेरिका में है, चाइना में भी है। यह समस्या जल्द ही हल हो जाएगी ।

SBI MUTUAL FUND
A PARTNER FOR LIFE

- **क्या आपको लगता है कि सरकार द्वारा घोषित उपायों से विकास और निवेश को बढावा मिलेगा ?**

जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया कि यह एक इकॉनोमिक साईकल है और सरकार ने जो कदम उठाए हैं, मुझे लगता है उन्हें 3-4 साल लगे यह लागू करने में । क्योंकि सरकार ने टैक्स 33% से 25 % या 22% पर कर दिया जिससे हमें एक जबरदस्त बढ़ावा मिला है। मेरे हिसाब से बहुत अच्छा कदम है। इससे कैपिटल आएगा और आपको मौका दिया जाएगा कि सरकार आये और उत्पादन को बढ़ावा दे। सबसे जरूरी है उत्पादन , घरेलू उत्पादन जिससे आपकी उत्पादन क्षमता सुधरेगी तो आपकी निर्यात बढ़ेगी। आप अपनी अर्थव्यवस्था ओला ,उबर, स्विगी पर कब तक चलाएंगे। आपको विश्व स्तर पर अपनी उत्पादन शक्ति बढ़ानी होगी।

- **क्या आप एनबीएफसी - एचएफसी सेक्टर को फंड देने में सावधानी बरत रहे हैं ? क्या आपको लगता है कि एनबीएफसी लिक्विडिटी का मुद्दा म्यूचुअल फंड सेक्टर की ग्रोथ को प्रभावित करेगा ?**

जहाँ तक एनबीएफसी का सवाल है जो अच्छे एनबीएफसी है उन्हें हमने अब तक नहीं टोका है, क्योंकि उनकी कार्यशैली अच्छी है। लेकिन अगर आप कहें कि जो कमजोर हैं उन्हें हम समर्थन दें तो यह उनके बैलंस शीट पर निर्भर करता है। यह कहना बिल्कुल सही नहीं होगा कि एनबीएफसी सेक्टर पूरी तरह से रुक गया है । बैंक भी थोड़े अच्छे और थोड़े कमजोर होते हैं। उसी तरह एनबीएफसी भी थोड़े अच्छे होते हैं और थोड़े कमजोर होते हैं और देश की अर्थव्यवस्था को विकसित करने में एनबीएफसी एक महत्वपूर्ण और बड़ी भूमिका निभाती है।

- **ऋण से जुडी बचत योजना के लिए म्यूचुअल फंड उद्योग का प्रस्ताव भी नहीं पारित हुआ है। क्या आपको लगता है कि इस तरह की योजना म्यूचुअल फंड उद्योग और निवेशकों के लिए सही साबित होगा ?**

निवेशक अभी नहीं जाएँगे। म्यूचुअल फण्ड और बचत की आप जहाँ तक बात करेंगे तो मैं यही कहूँगा कि संरचनात्मक रूप से चीजें बहुत जल्दी बदल रही हैं। कुछ साल पहले डिपॉजिट 10% पर थे। आज के दिन म्यूचुअल फंड्स के अससेस्ट्स एंड मैनजमेंट 20% हो चुके हैं। अगर आप विश्व स्तर पर बात करें और जीडीपी के साथ तुलना करें तो अमेरिका में यह 112% पर है और भारत में सिर्फ 11% है। जैसे ही हमारी फाइनांशियल मार्केट बढ़ेंगी तब म्यूच्यूअल फंड्स भी अपने आप बढ़ेगा।

- **कुछ दिन पहले आपने इक्विटी फंड में एलटीसीजी टैक्स को हटाने की बात कही थी। इसका क्या असर महसूस करते हैं आप ?**

इक्विटी तो रिस्क कैपिटल होता है और रिस्क लेने के लिए थोड़ा फायदा भी मिलना चाहिए। पहले शार्ट टर्म प्लान होते थे जो 10 होते थे और लांग टर्म होते थे। फिर बाद में 10-15 और फिर 10 कर दिए गए। कैपिटल मार्केट्स को बढ़ावा मिले इसलिए अच्छा यह होगा कि प्रत्येक व्यक्ति को भरोसा होना चाहिए। आखिरकार, जो रिस्क कैपिटल वो हमको दे रहे हैं तो उससे बाजार को बढ़ावा मिलेगा ही।

- **म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में नम्बर वन पर आने के लिए आप क्या सोचते हैं ?**

हम कभी नंबर्स के बारे में नहीं सोचते। क्योंकि अगर हमारा प्रोडक्ट अच्छा है और हमारी टीम अच्छी है तो क्रिकेट टीम की तरह हम भी नंबर १ हो जाएंगे। हमारी तरफ से यही आश्वासन रहेगा कि ग्राहकों के लिए वेल्थ क्रिएट करने में अपनी तरफ से हम कोई कमी नहीं करेंगे।

◆◆◆

प्रोजेक्ट सेन्ट्रल पार्क

में आपका स्वागत है.

एक शहर मुंबई के अंदर लगभग 40 एकड़ में फैला यह शहर मुंबई के आधुनिक रुप की अभिव्यक्ति है, जहाँ ज़िन्दगी परिपूर्ण है. जिसके आप सचमुच हकदार हैं. यहाँ होगें कैफेज़, हाई–स्ट्रीट स्टोर्स और ज़रुरी व्यवस्थाएं जो आपको ज़िन्दगी को पूरी शिद्दत से जीने में मदद करेगा. यह है आपकी मुंबई, नई कल्पना के साथ.

A CITY WITHIN MUMBAI

स्टुडियो, 1 बीएचके और 2 बीएचके होम्स उपलब्ध	रु.43 लाख से शुरु

Utopeia/Radius/1603

40 एकड़ गेटेड कम्युनिटी*
10 एकड़ की हरियाली
60% खुली जगह
100 से अधिक जीवनशैली सुविधाएं
जमीन की सतह से 200 फीट ऊपर**

PROJECT CENTRAL PARK
CHEMBUR (E)

RESIDENTIAL
COMMERCIAL
ENTERTAINMENT
RETAIL
EDUCATION
HEALTHCARE

कॉल करें 1800 121 9090

SALES EXPERIENCE ZONE: Natraj Lawns, Dr. Choitram Gidwani Road, Nr. Basant Cinema and Shivaji Chowk, Chembur, Mumbai - 400 071

SITE ADDRESS: Project Central Park, Near Shivaji Chowk, Off Eastern Freeway, Behind R.C.F. Colony, Chembur, Mumbai - 400 071

CORRESPONDENCE ADDRESS: ONE BKC, A-Wing 1401, B.K.C., Bandra (East), Mumbai - 400 051

PROJECT FINANCED BY YES BANK

PROJECT BY
DESERVE A BETTER TOMORROW | RADIUS A SANJAY CHHABRIA VENTURE BUILT AROUND YOU

* approximately ** first habitable floor of the tower located at the highest contour

Disclaimer: The offering is subject to approval of local authorities and/or in the interest of continuing improvement of the product.The developer reserves the right to change layouts, images, specifications and features without prior notification / obligations. All dimensions & areas mentioned are unfinished dimensions & may have variances upon completion / finishing basis reasons mentioned earlier. The layouts illustrated above are for the best understanding of the customer and do not part a form of legal document.

Our learning is best when it teaches humanity but to be proud of learning is the greatest ignorance in the world.

With Best Compliments from

Umesh Gandhi

Builders & Developers

DEEPAK BUILDERS

POONAM BUILDERS

AVON BUILDERS

GEETA BUILDERS

DEEPDHARSHAN BUILDERS PVT. LTD.

JITEN AGRO LAND & FARM PVT. LTD.

SUNCITY LAND & INFRASTRUCTURE PVT.LTD

SUNRISE PARTY HALL

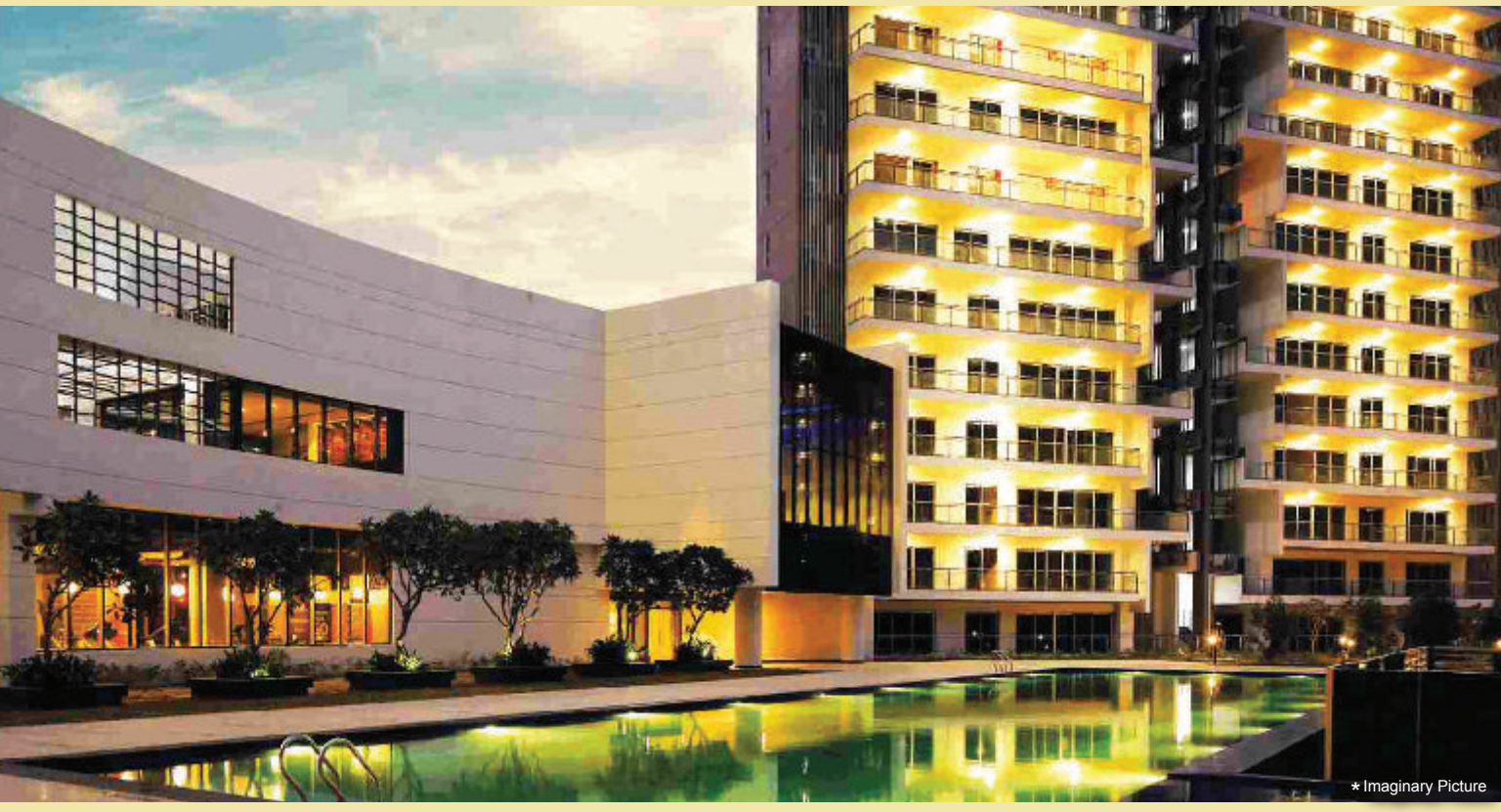

Builders, Developers & Hospitality Business

Office: B/203 Goyal Shopping Arcade, S.V.Road, Borivali (West), Mumbai - 400 092.

Tel No. 022 - 61363636 Fax No. 022 - 61363600

Email :- poonambuilders@gmail.com

TITLE NO. MAHHINO7214/13/A2009-TC BY OFFICE OF THE REGISTRAR OF NEWS PAPER FOR INDIA
MINISTRY OF INFORMATION & BRODCASTING, GOVT. OF INDIA

Happy Diwali

Dr. Tushar Vinod Deoras's

Astute Career Counselling Academy®

Admissions | Training | Mentoring

Registration No. : MAHHIN/2009/30744
Postal Registration No. : MH/MR/N/139/MBI/10-12

Champions of Change Award
by Hon. Shri. Venkaiah Naidu, Vice-President of India

Dr. Tushar Vinod Deoras's
ASTUTE ACADEMY
www. AstuteAcademy.com / www.AstutePromo.com

Astute Career Counselling Academy
Aditya Centeegra, Office no. 4 & 5, 1st Floor, Ferguson College Road,
Next to Mantri House, close to Dnyaneshwar Paduka Chowk, Pune- 411004.
Call Ph : 8899117757 / 8899117767
USA | GERMANY | PUNE | DADAR | THANE | NAGPUR | AKOLA | KOLHAPUR | JABALPUR | HUBLI